आर एल ए समाचार

आपकी आवाज़ आप तक

रामलाल आनंद महाविद्यालय, हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का प्रकाशन सत्र 2019–20 पेज 1–4

स्प्लेंडर 2020

सांस्कृतिक कार्यक्रमों से रोशन मंच

तीन दिवसीय समारोह में दिखा विद्यार्थियों में उत्साह

शिल्पी

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के रामलाल आनंद महाविद्यालय के परिसर में छात्रसंघ समिति की ओर से तीन दिवसीय वार्षिक सांस्कृतिक महोत्सव "स्पलेंडर 2020" का आयोजन किया गया। 13 फरवरी को आयोजित नॉर्थ ईस्ट समारोह का शुभारंभ मुख्य अतिथि एडिशनल कमिश्नर ऑफ दिल्ली पुलिस हिबू तमांग और महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता की उपस्थिति में दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। बीहू नृत्य, फ्यूज़न गीत, फ्यूज़न नृत्य और अरूणाचली नृत्य ने सबका मन मोह लिया।

इसके बाद रैंप वॉक की शुरूआत हुई, जिसमें नॉर्थ ईस्ट की वेशभूषा को प्रदर्शित किया गया। इन सभी कार्यक्रमों के साथ कला प्रदर्शनी प्रतियोगिता, स्टील लाइफ स्केचिंग, टेटू आर्ट, लोगो मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। बैटल ऑफ बैंड प्रतियोगिता से पहले दिन का अंत हुआ। दूसरे दिन 14 फरवरी की भव्य शुरूआत नृत्य प्रतियोगिता से हुई, जिसमें कथक के अनेक अंदाज़ देखने को मिले। इसके बाद गायन प्रतियोगिता, हिंदी वाद–विवाद प्रतियोगिता और फोटोग्राफी प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। सभी प्रतियोगिताओं के बाद डीजे नाइट का आयोजन किया गया जिसका सभी विद्यार्थियों ने खूब आनंद लिया। तीसरे दिन 15 फरवरी को शास्त्रीय संगीत, नृत्य, लोक नृत्य, अंग्रेज़ी वाद–विवाद, पश्चिमी गीत जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस दिन नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। अंत में जिसका सभी को इंतज़ार पिछले दो दिनों से था, पंजाबी गायक अखिल की प्रस्तुति। इस समारोह का अंत भव्य अंदाज़ में हुआ।

महाविद्यालय के वार्षिक समारोह में शिक्षकों संग यूनियन पदाधिकारी।

फेस्ट में आयोजित 9 प्रतियोगिताओं में 5 राज्यों के बच्चों ने लिया भाग।

नुक्कड़ नाटक से फैली जागरूकता

विकास कुमार

नई दिल्ली। 14 फरवरी 2020 को रामलाल आनंद महाविद्यालय में थिएटर सोसाइटी के फेस्ट का आयोजन हुआ। इस उपलक्ष्य में नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें दिल्ली के विभिन्न महाविद्यालयों के थिएटर सोसाइटी ने आवेदन किया। उनमें से 14 सोसाइटी को प्रतियोगिता के लिए चुना गया। इनमें हिन्दू कॉलेज, हंसराज कॉलेज, श्री वेंकटेश्वरा कॉलेज, आर्यभट्ट कॉलेज प्रमुख रहे।

हसरतें सोसाइटी

सभी थिएटर सोसाइटी द्वारा सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, आतंकवादी गतिविधियां जैसे बहुत से मुद्दों को उठाया गया। आयोजित प्रतियोगिता में पहला स्थान आर्यभट्ट कॉलेज को दिया गया, जिन्होंने बच्चों के अंदर पनप रही आतंकवादी गतिविधियां जैसे सनसनीखेज मुद्दे को उठाया। दूसरा स्थान हंसराज कॉलेज को मिला, जिन्होंने इस भीड़ और भाग–दौड़ भरी दुनिया में चिड़चिड़ेपन को नुक्कड़ नाटक के जरिए दर्शाया कि कैसे लोग मेट्रो में, बस में, भीड़ वाले बाजारों में चिड़चिड़ेपन का शिकार होते जा रहे हैं। इस बीच निर्णायक मंडल के रूप में एनएसडी से पासआउट अभिनेता, डायरेक्टर और वर्तमान में रामलाल आनंद कॉलेज के थिएटर सोसाइटी के मेंटोर गुरु श्री अवतार साहनी और कॉलेज के हिंदी पत्रकारिता विभाग के संयोजक डॉ. राकेश कुमार मौजूद रहे।

गुलशन बने छात्रसंघ अध्यक्ष

कृष्णा, अजय राज

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय में 12 सितंबर 2019 को मतदान करवाये गये। परिणाम शाम चार बजे घोषित कर दिया गया। चुनाव में अध्यक्ष पद पर गुलशन झा तथा उपाध्यक्ष के पद पर श्वेता ने भारी वोटों से जीत हासिल की। सचिव के पद पर अनूप यादव, सहायक सचिव के लिए आकाश को तथा कॉउन्सलर के पद पर जितेन्द्र व शतेन्द्र को जीत हासिल हुई। अध्यक्ष के पद पर करीब 900 वोट डाले गए, जिनमें 454 वोट गुलशन झा ने प्राप्त कर जीत हासिल की। वहीं 434 वोट प्राप्त कर पारस को हार का सामना करना पड़ा। 9 वोट नोटा में भी डाले गए। 351 वोट प्राप्त कर श्वेता ने उपाध्यक्ष पद अपने नाम किया। उपाध्यक्ष पद तथा सचिव पद पर तकरीबन 1000 की संख्या में वोट डाले गए। सहायक सचिव के पद पर साथी विरोधी न होने के कारण आकाश आसानी से जीत गए। वहीं सेंटर कॉउन्सलर के पद पर जितेन्द्र व शतेन्द्र दोनों ने जीत की खुशी में जश्न के दीप जलाए। सभी उम्मीदवार चुनाव प्रक्रिया से संतुष्ट नज़र आए।

छात्रसंघ चुनाव

संचार 2019 : आरएलए बना मुख्य विजेता

आरआईएमटी विवि गोविंदगढ़ के नाम रही उपविजेता ट्रॉफ़ी

डॉ. राकेश कुमार

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के रामलाल आनंद महाविद्यालय में हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की ओर से 4 अक्टूबर 2019 को आयोजित "मीडिया फेस्ट संचार 2019" में संचार, कला, साहित्य और संस्कृति के विभिन्न रंग देखने को मिले, जिसमें दिल्ली विवि, एनसीआर, पंजाब, राजस्थान और हरियाणा के कई कॉलेजों और विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

फेस्ट में उद्घाटन सत्र के अलावा नौ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कविता प्रतियोगिता में जुनैद को प्रथम, हनी त्यागी को द्वितीय और शिवांशु को तृतीय पुरस्कार से नवाजा गया। स्टैंड अप कॉमेडी में अनिकेत पहले, शिवा शर्मा दूसरे और श्रेया ने तीसरे पुरस्कार पर कब्जा जमाया। मीडिया क्विज़ में युवराज ने पहला, शिवांगी–अंकित की जोड़ी ने दूसरा और शाहिद–मानसी की जोड़ी ने तीसरे पुरस्कार पर कब्जा जमाया। फोटोग्राफी प्रतियोगिता में राजन ने पहला, इस्लाम खान ने दूसरा तो आयुष भगत ने तीसरे पुरस्कार से संतोष किया। डिजिटल पोस्टर मेंकिंग में श्रेया विजेता घोषित की गईं वहीं कार्टून मेंकिग में मुस्कान ने सभी को पछाड़ा। रेडियो जॉकिंग में नेहा पहले, प्रीति दूसरे और मनोज को तीसरे पुरस्कार से नवाजा गया। पोस्टर मेकिंग में अदीबा तस्नीम को पहला, हिमांशी को दूसरा तो गंगा नीरज को तीसरा पुरस्कार मिला। डॉक्यूमेंट्री का पहला पुरस्कार आयुष–प्रीतम के नाम रहा, नीतीश ने दूसरे और आशीष ने तीसरा पुरस्कार प्राप्त किया। समापन सत्र के मुख्य अतिथि हरियाणा सरकार के जनसंपर्क अधिकारी नीरज कुमार और मॉलिटिक्स के अनुदीप सिंह ने विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया। सांस्कृतिक संध्या में हरियाणवी, राजस्थानी और पंजाबी नृत्य की प्रस्तुतियों ने समा बांध दिया। इससे पहले उद्घाटन सत्र का शुभारंभ करते हुए वरिष्ठ पत्रकार उदय कुमार ने कहा कि आज फ़ेक न्यूज़ का चलन बहुत है, ऐसे में सही सूचना सामने लाने और समय के साथ चलने और बदलते रहने की आवश्यकता है। थ्योरी के साथ प्रैक्टिकल बहुत जरुरी है। उन्होंने एक अच्छे पत्रकार के लिए भाषा, अनुवाद और सामान्य ज्ञान को जरुरी बताया। मुख्य अतिथि का स्वागत और संबोधन प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता ने किया। हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के संयोजक डॉ. राकेश कुमार ने कार्यक्रम की रुपरेखा रखी और हिंदी, हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की अध्यक्ष डॉ. नीलम ऋषिकल्प ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

हिंदी पत्रकारिता

बापू की याद में हुई प्रतियोगिता

निक्की राय

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय में 28 जनवरी के दिन गांधी की 150वीं जंयती के उपलक्ष्य में महाविद्यालय के संगोष्ठी कक्ष में अंतः महाविद्यालय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। समदृष्टि व सृजन पत्रिका कमेटी तथा अभिव्यक्ति लेखन समिति के गठजोड़ से लेखन व चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन एवं संचालन किया गया, जिसमें महाविद्यालय के सभी विभागों के छात्रों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। छात्रों की सहूलियत को ध्यान में रखते हुए लेखन प्रतियोगिता में हिन्दी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में लिखने की छूट दी गई।

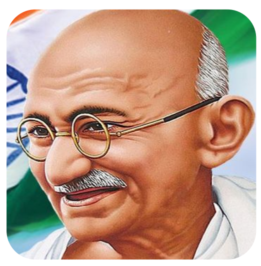

प्रथम 5 विजेताओं के लिए 1000 रुपए की धनराशि पुरस्कार स्वरूप देने की घोषणा की गई तथा सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान करवाए जाने का वादा किया गया। प्रथम 5 विजेताओं के लेख महाविद्यालय की समदृष्टि पत्रिका में प्रकाशित किए जाने की बात कही गई। प्रतियोगिता अपने निर्धारित समय पर ही आरंभ एवं समाप्त हुई। यह कार्यक्रम दोनों समितियों की संयोजिका डॉ. अर्चना गौड़ और डॉ. रितांबरा के नेतृत्व में किया गया।

समदृष्टि व अभिव्यक्ति समिति

रचनात्मक ऊर्जा से भरा रहा पूरा साल

डॉ. राकेश कुमार

आरएलए समाचार आईना है पूरे साल भर में हासिल उपलब्धियों का। आज जिस समय में हम इसका प्रकाशन कर रहे हैं वह तमाम समस्याओं और नाउम्मीदी से भरा हुआ है पर कहते हैं कि हर रात का अंत सुबह से ही होता है। रचनात्मकता इसी सुबह का नाम है। जब हम रच रहे होते हैं तो जैसे हम उम्मीद का एक बीज समय की धरती में रोप रहे होते हैं। इसी उम्मीद में कि यह बीज अंकुरित होकर एक दिन बड़ा छायादार दरख़्त बनेगा। वास्तव में हमारे जीवन के सबसे कठिन समय की साथी यह रचनात्मक ऊर्जा ही है। आरएलए महाविद्यालय ने अपनी रचनात्मक ऊर्जा से पिछले वर्ष में अनेक बुलन्दियों को छुआ। यह वर्ष हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के लिए भी अनेक उपलब्धियों से भरा रहा है। विभाग ने पहला वार्षिक समारोह 'संचार' आयोजित किया जिसमें अनेक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस समारोह को आयोजित करने में शिक्षकों और विद्यार्थियों ने जिस तरह से मेहनत की और उत्साह दिखाया वह प्रशंसनीय है। मैं आशा करता हूं कि आने वाले वर्षों में हम और बेहतरीन कार्यक्रम आयोजित करेंगे।

समाचार दरअसल समस्या को दर्ज करने का तरीका है जिसे जितनी ईमानदारी से दर्ज किया जाए उतना ही वह आने वाले समय के लिए मूल्यवान बनता हैं। मुझे खुशी है कि हिंदी पत्रकारिता के हमारे विद्यार्थी लगातार इस कला को सीखने में लगे हैं। आरएलए समाचार विद्यार्थियों को अपने हुनर को दिखाने का एक अनूठा अवसर देता है।

नई शिक्षा नीति यानी शिक्षा क्षेत्र में बदलाव

शिक्षा एक ऐसी पूंजी है जिसे जितना बांटा जाए यह उतना बढ़ता है। हमारा संविधान हर उन बच्चों को, जिसकी आयु 6 से 14 वर्ष की है उनका सर्वांगीण विकास करने के लिए शिक्षा का अधिकार देता है। देश में 29 जुलाई 2020 को मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक ने ''नई शिक्षा नीति 2020'' लागू की। शिक्षा के क्षेत्र में यह बदलाव 34 साल बाद लाया गया है, जिसमें पहला काम मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय करने का किया गया।

इस नई शिक्षा नीति में बच्चों के लिए 10+2 व्यवस्था को हटाकर 5+3+3+4 के ढांचे को अपनाया गया है। 5+3+3+4 की व्यवस्था में 5 का मतलब बच्चों को 3 साल प्री–स्कूल के तौर पर और उसके बाद कक्षा 1 और 2 की पढ़ाई कराई जाएगी। 3 का मतलब कक्षा 3, 4 व 5 तक की शिक्षा से है। अगले 3 का मतलब है कक्षा 6, 7 व 8 की और आखरी 4 का मतलब है 9, 10, 11 और 12 तक की शिक्षा।

इस नई शिक्षा नीति के तहत अब 3 से 18 साल तक के बच्चों को शिक्षा प्राप्त करना अनिवार्य होगा। इस नीति का महत्व इसलिए भी बढ़ गया है क्योंकि इसमें भाषा के स्तर पर 3 भाषा को सम्मिलित करने की बात की गई है। इसके तहत कक्षा 5 तक मातृभाषा/लोकल भाषा में शिक्षा ग्रहण करने पर ज़ोर दिया गया है। इसमें संस्कृत भाषा के साथ–साथ तमिल, तेलुगू, कन्नड़ भाषाओं में शिक्षा देने की बात कही गई है। इस नीति के तहत बच्चों के सर्वांगीण विकास जैसे बागवानी, नियमित योग, खेलकूद, मार्शल आर्ट, नृत्य जैसी गतिविधियों पर ज़ोर दिया जाएगा। इससे बच्चों की शारीरिक क्षमता को मजबूती मिलेगी। पहले कक्षा 11वीं में विषय चुनने की आज़ादी थी जो अब बदलकर कक्षा 9वीं में दी जाएगी। इस नीति में स्ट्रीम की व्यवस्था को समाप्त कर दिया गया है और बच्चों को अपने पसंदीदा विषय का चयन खुद करने की आज़ादी दी है।

आभा कुमारी

इस नीति के तहत कक्षा 6 से ही व्यवसायिक शिक्षा को शामिल किया जाएगा तथा बच्चों को कक्षा 6 से ही इंटर्नशिप दी जाएगी तथा छात्रों की प्रगति का आकलन करने के लिए ''परख'' नामक एक ''राष्ट्रीय आकलन केंद्र'' की शुरूआत की जाएगी। नई शिक्षा नीति 2020 के तहत उच्च शिक्षा में भी नए बदलाव किए गए हैं। इसमें अब स्नातक के लिए 4 साल लगेंगे, जिसमें अगर कोई बच्चा अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ देता है तो उसके लिए भी सर्टिफिकेट की व्यवस्था है। यदि वह केवल 1 साल में अपनी पढ़ाई छोड़ देता है तो उसे सर्टिफिकेट, अगर 2 साल बाद छोड़ता है तो एडवांस सर्टिफिकेट, तीसरे साल में डिग्री तथा 4 साल बाद डिग्री शोध के साथ मिलेगी।

इसी तरह स्नातकोत्तर में भी बदलाव किया गया है। जिन बच्चों ने 3 साल का स्नातक किया है वह 2 साल का मास्टर्स तथा जिन बच्चों ने 4 साल का डिग्री कोर्स शोध के साथ किया है वह 1 साल का मास्टर्स कर सकते हैं। एमफिल की डिग्री को इस नई शिक्षा नीति में समाप्त कर दिया गया है। अब पीएचडी के लिए केवल 4 साल की डिग्री शोध करने की आवश्यकता होगी। इस नई शिक्षा नीति के तहत साल 2030 तक सकल नामांकन अनुपात को 50 प्रतिशत लाने का लक्ष्य रखा गया है। यह नीति के.कस्तूरीरंगन के अध्यक्षता वाली समिति की रिपोर्ट पर आधारित होगी।

इस नई शिक्षा नीति के द्वारा विद्यालय, विश्वविद्यालयों में सुधार लाने तथा शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने पर बल दिया गया है। इस नीति का मुख्य उद्देश्य बच्चों में कुशलता का विकास करना है ताकि कोई बच्चा आगे चलकर बेरोज़गारी से ग्रसित न हो।

छात्र जीवन और अभिलाषाएं

अभिलाषाएं मनुष्य के स्वतंत्र मस्तिष्क की वह उपज होती है जो उसे आगे बढ़ते रहने के लिए प्रेरित करती हैं। छात्र जीवन मनुष्य के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता हैं। वह सपने जिन्हें हम पाना चाहते हैं, वह चीज़ें जिन्हें हम हासिल करना चाहते हैं तथा वह मंज़िल जिसके लिए हम रास्ता बनाते हैं, यह सब अभिलाषाएं का ही नतीज़ा है। जो लोग शिक्षा से वंचित रह जाते हैं, वह इस जीवन का महत्व बखूबी समझते हैं।

अभिलाषाएं हम सभी की होती हैं। हर विद्यार्थी अपनी अभिलाषाओं को पूरी करने की कवायद में हर क्षण कुछ न कुछ सीखता रहता है और सही मायनों में यही तो जीवन है। हरिवंशराय बच्चन की कविता 'फिर भी जीवन की अभिलाषा' की पंक्तियां–"शून्य प्रतीक्षा में है मेरी गिनती के क्षण की है देरी, अंधकार में समा जाएगा सृष्टि का सब खेल तमाशा!, फिर भी जीवन की अभिलाषा" बच्चन की इन पंक्तियों के भाव को समझकर यदि विद्यार्थी अपने जीवन में लागू करें कि अभिलाषाएं कभी खत्म नहीं होती चाहें जितनी भी कठोर स्थितियां क्यों न हों। छात्र कक्षा में उत्तीर्ण होने की अभिलाषा रखते हैं पर अक्सर अभिलाषाएं पूरी न होने पर छात्र निराश होकर जल्द ही हार मान लेते हैं। वास्तव में एक संपन्न विद्यार्थी जीवन वह है जिसमें वह बिना हार माने आगे बढ़ता रहे। वह अव्वल आने की अभिलाषां में सिर्फ लाइब्रेरी व किताबों में ही खुद को कैद किए बिना दूसरी चीज़ों में भी हाथ आजमाए।

प्रेम, मित्रता, खुशियां तथा उज्जवल भविष्य की इच्छा किसे नहीं होती? मौजूदा समय में छात्र अपने जीवन को बोझ की भांति महसूस करते हैं। एक विफलता उन्हें डिप्रेशन की ओर बहुत जल्दी धकेल देती है। हालात और स्थितियां ऐसी बन जाती हैं कि सभी अभिलाषाएं खत्म होंने लगती हैं। सहिष्णुता का अभाव कामयाबी के आड़े आने वाली सबसे बड़ी बाधा न बनने पाए इसलिए जरुरी है कि दृढ़ता के साथ आगे बढ़ा जाए। अपनी अभिलाषाओं को पंख दो, सपनों को उड़ान दो। यह ज़रुरी नहीं है कि हर इच्छा पूरी हो पर इसका अर्थ यह नहीं कि इच्छाएं कभी पूरी नहीं होंगी।

पारसमणि

लोक परम्परा का हमारे जीवन में महत्व

भारत के सांस्कृतिक विकास में भारत के लोकगीतों, लोकगाथाओं, लोककथाओं एंव लोकनाट्यों का महत्वपूर्ण स्थान है। आज यह अत्यंत खेद का विषय है कि हमारे देश का अधिकांश पठित जन–समुदाय अपनी प्रादेशिक और समृद्ध जनपदीय भाषाओं के साहित्य से सर्वथा अपरिचित है। किसी देश की लोक संस्कृति उस देश की जनता के हृदय का उद्गार है। किसी देश, विदेश, प्रदेश या क्षेत्र की सांस्कृतिक चेतना का ज्ञान प्राप्त करना हो या उनकी सभ्यता का अध्ययन करना हो तो सर्वप्रथम उसके लोक साहित्य का अध्ययन करना आवश्यक होगा। लोक संस्कृति के व्यवहारिक ज्ञान का आधार पोथियों में नहीं है। यह प्रायः मौखिक होता है और लोक कंठ में सुरक्षित रहकर परंपरागत रुप में चलता है। कभी आपने सोचा है कि शादियों, पूजा आदि में गाए जाने वाले गीत कहां लिखे होते हैं? बचपन में दादी के मुख से सुने किस्से किस पुस्तक में होते हैं? विभिन्न तरह के रीति–रिवाज, गीत–संगीत, किस्से, कहावतें आदि हमारी परंपरागत विरासत है।

इस संदर्भ में बिहार की लोक संस्कृति देश के अन्य राज्यों से अधिक समृध्द रही है। हमारे यहां प्रत्येक मौसम, त्योहार, रिश्तों, सामाजिक घटनाओं के लिए अलग–अलग लोक गीत, लोक नाट्य, लोक गाथाएं प्रचलित हैं। जैसे होली में चैता और फगुआ गाया जाता है, सावन में कजरी, बच्चे के जन्म पर सोहर, आध्यात्मिकता के लिए निर्गुण, शादियों में गौरा–विवाह आदि। आप सोच कर देखिए कि सावन के मौसम में वर्षा हो रही है और ग्रामीण धान रोपते हुए कजरी गा रहे हैं। कितना मनमोहक दृश्य होगा? परंतु सामाजिक सदभावना को जागृत रखने वाली यह परंपरा अब धीरे–धीरे धूमिल होती जा रही है। प्रसिद्ध कजरी का एक अंश–"कैसे खेलन जइबु सावन में कजरिया, बदरिया घिरी आईल ननदी। तू त जात हउ अकली, केहू संग ना सहेली, छैला रोक लईहे, तोहरी डगरिया। बदरिया घिरी आईल ननदी।" पुरानी पीढ़ी का यह लोक साहित्य आज के सामाजिक परिदृश्य में भी प्रासंगिक है। भोजपुरी लोकनाट्य में विदेसिया नाटक अत्यधिक प्रसिद्ध रहा है। इसके प्रति इतनी दीवानगी रही है कि 10 से 13 किलोमीटर तक से लोग इसे देखने आते थे। प्यार, विरह, मिलन जैसी भावनाओं से ओत–प्रोत यह नाटक विशाल जन. समूह पर गहरा प्रभाव डालता था। इसका कारण यह था कि उस दौर में अधिकांश युवा कलकत्ता कमाने के लिए जाते थे और वापस नहीं लौटते थे। इसके संदर्भ में बिहार में एक कहावत प्रचलित थी कि कलकत्ता में कमाया और हावड़ा में गंवाया अर्थात जो कमा कर घर लाने का प्रयास करता था वह चोर लूट लेते थे।

विकास कुमार

एक आंकड़े के मुताबिक पिछले साल तक जवाहरलाल नेहरु यूनिवर्सिटी में लगभग 10 से अधिक छात्र भिखारी ठाकुर के नाटकों पर पीएचडी कर रहे थे। लोक साहित्य जनसंचार का सबसे अधिक प्रभावशाली माध्यम रहा है। लोककथा, लोकगीत व लोकनाटक आज भी हमारे समाज में विद्यमान हैं परंतु हाशिए पर। आधुनिकता की इस भागदौड़ में साहित्य के प्रति उपेक्षा के भाव और संस्कृति के प्रति मोह के अभाव के कारण आदमी संवेदन शून्य होता जा रहा है। आज लोक संस्कृतियों का संग्रह और संकलन का काम और भी कठिन होता जा रहा है। लोककथाकार गवैयों की कमी और लोक लाज का डर इसके मुख्य कारण हैं।

अब ज़रुरत है नई सोच और समाज के निर्माण की

भारतीय संस्कृति में नारी को सम्मानजनक स्थान देने की परंपरा प्राचीन काल से चली आई है। हमारे वैदिक शास्त्रों में भी कहा गया है, "यत्र नार्यस्तु पूज्यंते ,रमंते तत्र देवता"। भारतीय समाज के विभिन्न काल खंडों पर यदि नज़र डालें तो हम पाते हैं कि वैदिक काल में महिलाओं को कुटुंब समाज में पर्याप्त सम्मान प्राप्त था। उत्तर वैदिक काल आने तक महिलाओं की उन्नत स्थिति में आंशिक गिरावट आने लगी तथा सामाजिक स्तर पर उन पर कुछ पाबंदियां लगाई जाने लगीं। इस दौर में बाल विवाह की परंपरा भी शुरू हुई।

वर्ष 2001 की जनगणना के आधार पर देश की कुल साक्षरता दर 64.4 फीसद आंकी गई थी। इसमें पुरुषों की साक्षरता दर 75.85 फीसद और महिलाओं की साक्षरता दर 54.16 फीसद थी। 2011 की जनगणना के अनुसार कुल साक्षरता दर 74.0 फीसद है, जिसमें पुरुषों की साक्षरता दर 82.1 फीसद और महिलाओं की साक्षरता दर बढ़कर 65.5 फीसद हो गई है। इन आंकड़ों से साफ पता चला है कि पिछले दो दशकों में महिलाओं की शिक्षा में संतोषजनक सुधार आया है। हमारे देश में महिलाओं की साक्षरता नगरीय क्षेत्र की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत कम है। शिक्षित न होने के कारण ही महिलाएं पुरुषों पर आश्रित हो जाती हैं।

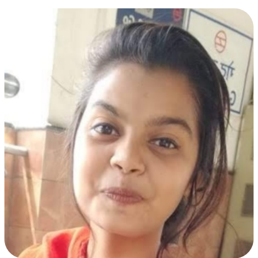

अंजली

महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा में बेहद कम वेतन मिलता है। ऑक्सफैम इंडिया की रिपोर्ट से पता चला है कि महिलाओं का वेतन पुरुषों के वेतन से 34 फीसद तक कम होता है। सवाल यह कि जब महिला व पुरुष के कार्य और समय दोनों समान हैं तो फिर वेतन में अंतर क्यों है? गौरतलब है कि आज पितृसत्तात्मक बेड़ियों को तोड़ने का भरपूर प्रयास किया जा रहा है। ग्रामीण समाज में आज भी बेटियों को पढ़ने–लिखने नहीं दिया जाता लेकिन अब सरकार उन्हें लाडली, लक्ष्मी और सुकन्या जैसी योजनाओं का प्रस्ताव देती है, जिससे वह उन्हें पढ़ाने के लिए भी तैयार हो जाते हैं। समाज में प्रत्येक पुरुष और महिला को संविधान द्वारा समान मूलभूत अधिकार दिए गए हैं लेकिन फिर भी किसी न किसी रूप में सामाजिक रूढ़िवादी मान्यताओं और विषमताओं के कारण महिलाएं अपने अधिकारों से वंचित रह जाती हैं।

इस महत्वपूर्ण मुद्दे के समाधान की दिशा में हमारे देश में स्थित कई गैर सरकारी संस्थाएं राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं से सहयोग लेकर अपने स्तर पर प्रयास कर रही हैं। भारत का महिला और बाल विकास विभाग महिलाओं के विकास के लिए सदैव प्रयत्नशील रहा है, वहीं अब मीडिया और अन्य संचार माध्यम भी इस दिशा में सक्रिय हुए हैं।

किसी देश की अर्थव्यवस्था को तभी मज़बूत बनाया जा सकता है जब महिलाओं और पुरुषों की समान भागीदारी सुनिश्चित हो। हमारे देश में आज महिलाओं के लिए स्वउद्यमिता का विकास तेज़ी से हो रहा है परंतु इसके बावजूद भारत में कुल उद्यमियों में महिलाओं की भागीदारी मात्र 14 फीसद है। मार्च में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार घरेलू कामकाज के प्रति भारतीय समाज में चला आ रहा पक्षपात ही महिलाओं के रोज़गार प्राप्ति के मार्ग में सबसे बड़ी रुकावट है।

नई वैज्ञानिक तकनीक पर ज़ोर देता माइक्रो वीटा 2020

प्रवेश

माइक्रोबायोलॉजी विभाग

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय में माइक्रोबायोलॉजी विभाग द्वारा 4 फरवरी से 5 फरवरी तक दो दिवसीय वार्षिक उत्सव माइक्रो वीटा 2020 का आगाज़ किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता, डॉ. वंदना गुप्ता और प्रोफेसर पवन कुमार द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। कार्यक्रम में पहले दिन के मुख्य अतिथि जेएनयू के स्कूल ऑफ बायोटेक्नोलॉजी के प्रोफेसर पवन कुमार रहे। उन्होंने मुख्य रूप से सिंथेटिक जीव विज्ञान के अनुप्रयोग, जैविक इंजीनियरिंग और इनके बीच के अंतर के बारे में बताया। कार्यक्रम में क़्विज़, एड मेकिंग, इनोवेटिव आइडिया प्रेजेंटेशन प्रतियोगिताएं आयोजित की गई, जिसमें विभिन्न कॉलेजों के प्रतिभागियों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। क़्विज़ प्रतियोगिता में आरएलए कॉलेज के माइक्रोबायोलॉजी विभाग के प्रथम वर्ष के छात्रों की टीम, जिसमें अभिलाष, वासु, सोमा तथा आर्य ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्रतिभागियों ने अपनी प्रतिभा और विचारों को खूब बेहतरीन तरीकों से व्यक्त किया। पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में शहीद राजगुरू कॉलेज की दिशा गुप्ता ने प्रथम स्थान हासिल किया।

उत्सव के दूसरे दिन राष्ट्रीय स्तरीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. मिताली मुखर्जी, डॉ. नरसिंह चौहान, डॉ. दीपांजन पॉल और प्रोफेसर संजय कपूर मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे। डॉ. नरसिंह चौहान ने अपने भाषण में मानव शरीर के अंदर मौजूद सूक्ष्म जीवाणु की भूमिका व शरीर के भीतर विटामिनों के उत्पादन पर प्रकाश डाला। वहीं डॉ. मताली मुखर्जी ने आयुर्वेद और जिनोमिक्स के आपस में संबंध को समझाया। डॉ. दीपांजन पॉल ने स्विस आर्मी नाइफ के विभिन्न उपयोगों से सबको रूबरू करवाया कि कैसे वो जेनेटिक इंजीनियरिंग व जीन एडिटिंग के लिए उपयोग किया जाता है।

सभी वक्ताओं का भाषण समाप्त होने के बाद विद्यार्थियों ने विषय से संबंधित अपने–अपने सवाल रखे, जिसका जबाव वक्ताओं द्वारा दिया गया। इस कार्यक्रम के साथ माइक्रोबायोलॉजी विभाग ने कॉलेज में अपने 30वें कार्यक्रम का समापन किया।

माइक्रोबायोलॉजी की ओर से वक्ताओं का स्वागत करते प्राचार्य।

सामाजिक कार्यों में शामिल रहने को मिला बढ़ावा

महेंद्र

मानवीय मूल्य

नई दिल्ली। रामलाल आनंद कॉलेज ने मानव मूल्य, नैतिकता और जीवन कौशल पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। प्रयास संस्था के संस्थापक और वरिष्ठ पुलिस अधिकारी रहे आमोद कंठ, लाडली फाउंडेशन के संस्थापक देवेंद्र कुमार गुप्ता और हेल्दी एजिंग इंडिया के संस्थापक डॉ. प्रसून चटर्जी ने कार्यक्रम में शिरकत की।

आमोद कंठ ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि मानव मूल्य, नैतिकता और जीवन कौशल किसी कक्षा में सीखने की बात नहीं है, बल्कि यह सब धीरे–धीरे हमारे अंदर आ जाता है। उन्होंने बताया कि आज पूरी दुनिया प्रयास संस्था को बच्चों के विकास के लिए कार्य करने वाली संस्था के रूप में जानती है। भारत के 9 राज्यों में प्रयास आज काम कर रहा है।

देवेंद्र कुमार गुप्ता ने बताया कि वह लाडली फांउडेशन के माध्यम से लगातार लड़कियों की सुरक्षा और उनकी शिक्षा के लिए कार्य कर रहे हैं। वहीं डॉ. प्रसून चटर्जी ने बताया कि वह अनेक कॉलेजों और स्कूलों के विद्यार्थियों के साथ मिलकर बुजुर्गों की सेवा कर रहे हैं। इस कार्यशाला के आयोजन में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता और डॉ. रीटा जैन ने मुख्य भूमिका निभाई।

आरोह में तर्क–वितर्क का संगम

गीतू कत्याल

आरोह समिति

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय की हिंदी वाद–विवाद समिति 'आरोह' द्वारा सत्र 2019–2020 में दो मुख्य प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें एक अंतः महाविद्यालय व दो अंतर महाविद्यालय प्रतियोगिता शामिल है। अंतः महाविद्यालय प्रतियोगिता 9 सितंबर 2019 को आयोजित की गई, जिसमें हिंदी पत्रकारिता एंव जन. संचार विभाग के पवन एवं पारसमणि की जोड़ी ने प्रथम पुरस्कार हासिल किया। पहली अंतर महाविद्यालय प्रतियोगिता 23 जनवरी 2020 को आयोजित की गई, जिसमें कुल 15 महाविद्यालयों ने भाग लिया। इसमें प्रथम पुरस्कार जाकिर हुसैन कॉलेज से इंशा व नसरीन ने, द्वितीय पुरस्कार मोतीलाल नेहरू कॉलेज से शिवम व पंकज और तृतीय पुरस्कार आनंद व प्रिंस ने हासिल किया। दूसरी अंतर महाविद्यालय प्रतियोगिता का आयोजन 14 फरवरी 2020 को किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आरोह समिति के संयोजक डॉ. सुभाष चंद्र डबास द्वारा की गई। प्रतियोगिता 'सोशल मीडिया ने नए उपभोक्ता वर्ग को तैयार किया है' विषय पर रखी गई थी। निर्णायक मंडल में डॉ. अर्चना गौड़, डॉ. दिनकर सिंह, डॉ. मानवेश नाथ दास उपस्थित रहे। कार्यक्रम का छात्र संचालन विकास और गीतू कत्याल द्वारा किया गया। प्रतियोगिता में अलग–अलग महाविद्यालयों से 13 टीमों ने भाग लिया, जिसमें रामजस कॉलेज, शहीद भगत सिंह कॉलेज, मोतीलाल नेहरु कॉलेज और आत्मा राम सनातन धर्म कॉलेज ने मुख्य रूप से अपनी मौजूदगी दर्ज़ की। सभी प्रतिभागियों ने तर्क–वितर्क के साथ अपना वक्तव्य पेश किया। प्रथम पुरस्कार रामजस कॉलेज और द्वितीय पुरस्कार व इंटरजेक्टर का पुरस्कार मोतीलाल नेहरु कॉलेज ने अपने नाम किया। डॉ. मानवेश ने सभी प्रतिभागियों के वक्तव्य की तारीफ की और आगे भी प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। अंत में आरोह समिति द्वारा निर्णायक मंडल, प्रतिभागियों और उपस्थित विद्यार्थियों का धन्यवाद ज्ञापन कर कार्यक्रम का समापन किया गया।

गणित विभाग

इम्प्लोशन : छात्रों का शानदार प्रदर्शन

धनंजय कुमार

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय में 27 फरवरी 2020 को गणित सोसाइटी इंफिनिटी का अंतर महाविद्यालय वार्षिक उत्सव इम्प्लोशन आयोजित किया गया। समारोह में भारतीय रक्षा एवं अनुसंधान संगठन के वैज्ञानिक डॉ. गिरीश मिश्रा मुख्य अतिथि की भूमिका में नज़र आए। समारोह की शुरूआत पारंपरिक रूप से प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुई।

प्राचार्य ने छात्रों के मॉडल, परियोजनाओं एवं तकनीक एप्लीकेशन की बेहद तारीफ की और इंटर्नशिप संबंधित जानकारियों से छात्रों को समय–समय पर अवगत रखने के लिए अध्यापकों की सराहना की। उद्घाटन सत्र के दौरान डॉ. मजूमदार और दिलीप कुमार समेत अन्य शिक्षक भी उपस्थित रहे। इम्प्लोशन 2020 में अनेक प्रतियोगिताएं जैसे पीपीटी प्रस्तुतिकरण, गणित प्रश्नोत्तरी और गणित प्रसारण का आयोजन किया गया। फ़ेस्ट को सफल बनाने में गणित सोसाइटी के छात्र अध्यक्ष जोगिंदर सिंह और सचिव प्रेरणा डेय सहित अन्य छात्र सदस्यों ने मुख्य भूमिका निभाई। विद्यार्थियों ने बड़ी संख्या में कार्यक्रम में भाग लिया।

हिंदी पत्रकारिता

सच कहने की कला–डॉक्यूमेंट्री

विकास त्रिपाठी

नई दिल्ली। 7 फरवरी 2020 को रामलाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार विभाग द्वारा डॉक्यूमेंट्री विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के मुख्य अतिथि श्री नवरोज़ कॉन्ट्रैक्टर भारत तथा विदेशों की फिल्मों में सिनेमेटोग्राफर तथा डायरेक्टर के तौर पर काम करते हैं।

कार्यशाला की शुरूआत शार्ट–फिल्म 'सैड ट्री' और डॉक्यूमेंट्री 'झाड़ू कथा' के प्रदर्शन के साथ हुई। कार्यशाला में उपस्थित छात्रों के सवालों का जवाब देते हुए उन्होंने फिल्म, डॉक्यूमेंट्री तथा लॉन्ग रिपोर्ट से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर बात की। उन्होंने छात्रों को बताया कि डॉक्यूमेंट्री बनाने की शुरूआत हमेशा एक विषय पर रिसर्च के साथ होती है और हमारा मुख्य काम समस्याओं को सामने रखना होता है। कार्यशाला का समापन पत्रकारिता विभाग के संयोजक डॉ. राकेश कुमार द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

एनसीसी के एक दिवसीय वार्षिक उत्सव विक्रांत 2020 में मुख्य अतिथि, प्राचार्य व शिक्षकों संग कैडेट्स।

एनसीसी का वार्षिक उत्सव–विक्रांत 2020

विभिन्न महाविद्यालयों से आए एनसीसी कैडेट्स की टीमों ने बल का किया प्रदर्शन

अतुल

एनसीसी

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के रामलाल आनंद महाविद्यालय की एनसीसी इकाई की तरफ से 11 फरवरी 2020 को एक दिवसीय वार्षिक उत्सव विक्रांत 2020 का आयोजन किया गया। इस उत्सव के मौके पर भारतीय सेना के सेवानिवृत्त कप्तान धर्मवीर, जो तोपखाने की रेजिमेंट में भारतीय सेना के अधिकारी रहे हैं और कर्नल अनूप अवस्थी जो 7 दिल्ली बटालियन एनसीसी के सीओ हैं, मुख्य अतिथि की भूमिका में उपस्थित रहे। रामलाल आनंद महाविद्यालय की एनसीसी इकाई के अधिकारी कप्तान डॉ. संजय कुमार शर्मा और उनके सैनिक छात्रों द्वारा कई तरह की प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाया गया।

विक्रांत 2020 में अलग–अलग विश्वविद्यालयों के महाविद्यालय भी शामिल रहे। क्वार्टर गॉर्ड एसडी की प्रतियोगिता में आत्मा राम सनातन धर्म महाविद्यालय ने और एसडब्लू की प्रतियोगिता में एसपीएम महाविद्यालय ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। स्क्वार्ड ड्रिल एसडी में आईटीआई निजामुद्दीन ने और स्क्वार्ड ड्रिल एसडब्लू में कालिंदी महाविद्यालय प्रथम स्थान पर रहे। एसडब्लू का बेस्ट कैडेट पुरस्कार एसयूओ हिमांशु ने अपने नाम किया। वॉलीबॉल एसडी में प्रथम स्थान आईटीआई पूसा टेक ने प्राप्त किया। टग ऑफ वॉर एसडी में सत्यवती महाविद्यालय और क़्विज़ प्रतियोगिता में ज़ाकिर हुसैन महाविद्यालय प्रथम स्थान पर रहे। एकल गीत प्रतियोगिता में सिडीटी केहर सिंह, एसजीटीबी खालसा महाविद्यालय और एकल नृत्य प्रतियोगिता में सिडीटी नेहा यादव, दौलत राम महाविद्यालय की तरफ से प्रथम स्थान पर रहीं। सामूहिक नृत्य में दौलत राम महाविद्यालय ने जीत हासिल की।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता ने महाविद्यालय के एनसीसी के सैनिक छात्रों की तरफ से सेक्शन अटैक का नमूना पेश किया, जिसने सभी को चौंका दिया। मुख्य अतिथि और प्राचार्य द्वारा विजेता कैडेट्स को उपहार प्रदान कर उनका हौसला बढ़ाया। महाविद्यालय के एनसीसी कप्तान ने इस मौके पर शामिल प्राचार्य, सभी सैनिक छात्रों और मुख्य अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया और साथ ही उत्सव में उपस्थित सभी विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

स्टेटिस्टिक्स विभाग

विद्यार्थियों ने जाना, क्या है सैंपलिंग थ्योरी

अभिषेक

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के रामलाल आनंद महाविद्यालय में 3 मार्च 2020 को स्टेटिस्टिक्स विभाग द्वारा एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का शुभारंभ रामलाल आनंद महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता द्वारा किया गया। प्रवक्ता के तौर पर अरूण अग्रवाल ने फाइनेंसियल स्टेटिस्टिक्स के बारे में छात्रों को जानकारी दी। संगोष्ठी के दूसरे प्रवक्ता धमेंद्र कुमार यादव ने सैंपलिंग थ्योरी के विशेष पहलुओं से छात्रों को अवगत किया।

स्टेटिस्टिक्स विभाग द्वारा तीन प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया, जिसमें पहली प्रतियोगिता बैट बॉल एंड आइपीएल ऑक्शन रखी गई। इस प्रतियोगिता में 3 राउंड थे, जिसमें पहले और दूसरे राउंड में क्रिकेट क्विज़ रखा गया था दूसरी प्रतियोगिता काउच पोटेटो टेस्टिंग योर पैशन फॉर टीवी सीरीज़ व तीसरी प्रतियोगिता एक्स फैक्टर ट्विस्टिंग योर बेसिक विद स्टेटिस्टिक्स एंड मैथ्स रखी गई थी।

इन प्रतियोगिताओं में दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों के छात्रों ने भाग लिया व अपने ज्ञान और प्रतिभा से सभी को अवगत किया। एक्स फैक्टर–योर बेसिक्स विद स्टेटिस्टिक्स एंड मैथ्स प्रतियोगिता में प्रथम स्थान सत्यनिष्ठ व मेहर तथा द्वितीय स्थान अरनव व ऋतिक ने हासिल किया। बैट बॉल आईपीएल आर्वेशन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पुलकित व तन्मय ने और द्वितीय स्थान सिद्धार्थ व मुकुल ने प्राप्त किया।

गांधी के मूल विचारों को जीवन में उतारने की ज़रूरत : पदमश्री दया प्रकाश सिन्हा

शादाब ख़ान

गांधी स्टडी सर्किल

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय में "गांधी बियॉन्ड बाउंड्रीज" विषय पर 23 और 24 अक्टूबर 2019 को दो दिवसीय अंतराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में सोमालिया की राजदूत फादुमा अब्दुल्लाह मोहम्मद ने मुख्य अतिथि की भूमिका निभाई। सम्मेलन के पहले सत्र में गांधी भवन के निदेशक आर. सी भारद्वाज और गांधी दर्शन समिति के सह–कार्यक्रम अधिकारी डॉ. राजदीप मौजूद रहे। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता व गांधी स्टडी सर्किल के संयोजक डॉ. देवेंद्र कुमार ने सभी अतिथियों संग दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की। डॉ. देवेंद्र कुमार ने गांधी स्टडी सर्किल का परिचय देते हुए सभी अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट किया। अपने वक्तव्य में फादुमा ने सोमोलिया और भारत के रिश्तों को गांधी के विचारों से जोड़कर प्रस्तुत किया। इसके बाद डॉ. भारद्वाज ने वर्तमान में गांधी के विचारों की प्रासंगिकता पर चर्चा की, जिसके साथ पहले सत्र का समापन हुआ।

दूसरे सत्र में चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय से आए प्रोफेसर विग्नेश कुमार और अंबेडकर विश्वविद्यालय के उप–कुलपति प्रोफेसर सलिल मिश्रा ने मुख्य वक्ता की भूमिका निभाई। सत्र की शुरूआत में अतिथियों को खादी वस्त्र भेंट किया गया। प्रोफेसर सलिल ने अहिंसा, सत्याग्रह, खादी और पर्यावरण पर गांधी के विचारों की चर्चा की। वहीं डॉ. विग्नेश ने गांधी के सामाजिक विचारों पर चर्चा की।

गांधी स्टडी सर्किल द्वारा आयोजित अंतराष्ट्रीय कार्यक्रम में मौजूद वक्तागण।

माता सुंदरी महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. हरप्रीत कौर ने अपने वक्तव्य में बताया कि साल 2019 खास है। इस साल देश गांधी की 150वीं जयंती और गुरू नानक देव की 550वीं जयंती मना रहा है। डॉ. कौर के भाषण के साथ ही तीसरे सत्र और पहले दिन के कार्यक्रम का समापन किया गया। कार्यक्रम के दूसरे दिन की शुरूआत बांग्लादेशी स्कॉलर डॉ. होइमंती बरूआ, प्रोफेसर सुब्रता मुखर्जी, प्रोफेसर संजय भारद्वाज और प्रोफेसर मनोज सिन्हा के आगमन के साथ हुई। अपने वक्तव्य में डॉ. होइमंती बरूआ ने विश्व शांति में गांधी के विचारों का महत्व समझाया। कार्यक्रम के आखिरी सत्र में महाविद्यालय के चेयरमैन दया प्रकाश सिन्हा व पूर्व चेयरमैन बृज किशोर मौजूद रहे। अंत में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता ने धन्यवाद ज्ञापन कर दो दिवसीय अंतराष्ट्रीय सम्मेलन का समापन किया।

काव्य गोष्ठी में उभरे प्रतिभा के रंग

साहिल, पूजा

हिन्दी पत्रकारिता

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय में 14 अगस्त 2019 को स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष में हिन्दी पत्रकारिता व जनसंचार विभाग द्वारा काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. राजेश गौतम मुख्य अतिथि की भूमिका में नज़र आए। यह समारोह 11 बजे प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. राकेश कुमार व डॉ. नीलम ऋषिकल्प द्वारा मुख्य अतिथि को पौधा भेंट करके किया गया। सभी छात्रों ने इस मौके पर देश–भक्ति, प्रेम आदि पर अपनी–अपनी कविताएं पेश की, जिसने सबका मन मोह लिया। हिन्दी पत्रकारिता के छात्र मनोज थायत ने आशुतोष राणा की कविता 'हे भारत के राम जागो' सुनाई, वहीं धनंजय कुमार ने 'हम उस देश के वासी हैं, जिस देश में गंगा बहती है' की पंक्तियों के माध्यम से भारत की विशेषताएं बताई।

समारोह को आगे बढ़ाते हुए जुनैद ने अपनी स्वरचित कविता 'मैं कैसा मुसलमान हूँ भाई, मैं हिन्दू मुसलमान हूँ भाई, मैं हिन्दू मुसलमान हूँ सुनाई, जिसे सुनकर पूरा माहौल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। इसके अलावा अनेकों छात्रों ने अपनी कविताएं प्रस्तुत की, जिसमें रामलाल आनंद महाविद्यालय के अतिरिक्त दिल्ली स्कूल ऑफ जर्नलिज्म (डी.एस.जे) के छात्र भी सम्मिलित हुए।

हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के प्रोफेसर प्रदीप कुमार, डॉ. अटल तिवारी, डॉ. निशा व प्रोफेसर सीमा ने अपनी कविताओं से माहौल को उल्लास से भर दिया। कार्यक्रम का समापन मुख्य अतिथि डॉ. राजेश गौतम के जीवन यात्रा की एक छोटी–सी झलक के साथ हुई। उन्होंने 'जेबों मे संदेशों का अंबार लगा है' पंक्तियों के साथ काव्य गोष्ठी का समापन किया। इसके साथ उन्होंने अपनी कविताओं तथा गीतों के कैसेट महाविद्यालय को भेंट स्वरूप प्रदान किए। अंत में डॉ. नीलम ऋषिकल्प ने सबका धन्यवाद ज्ञापन कर काव्य गोष्ठी का समापन किया। छात्रों ने तालियां बजाकर खुशी जताई।

ऑटोमेटा 2020 में वक्ताओं ने बढ़ाया छात्रों का मनोबल

मनोज

कंप्यूटर साइंस विभाग

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के रामलाल आनंद महाविद्यालय के कंप्यूटर साइंस विभाग की ओर से 27 से 28 फरवरी 2020 तक दो दिवसीय वार्षिक समारोह ऑटोमेटा 2020 का आयोजन किया गया। पहले दिन सीरीज़ फेनेटिक्स नामक प्रश्नोत्तरी हुई, जिसमें हिन्दी और अंग्रेजी वेब सीरीज से जुड़े प्रश्न पूछे गए। उसके बाद मोबाइल फोटोग्राफी की प्रतियोगिता हुई, जिसमें प्रतिभागियों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। पर्यावरण विषय आधारित सिंगल वेबपेज डेपलपमेंट प्रतियोगिता में भी प्रतिभागियों ने जमकर अपनी प्रतिभा दिखाई।

समारोह में सुधांशु गुप्ता, आशुतोष शर्मा और सागर राधी मुख्य वक्ता की भूमिका में नज़र आए। उन्होंने अपने वक्तव्य के माध्यम से छात्रों को तकनीक के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के दूसरे दिन रिले कोडिंग की प्रतियोगिता हुई। इसमें प्रतिभागियों को 10 मिनट का समय मिला। इसके तुरंत बाद पबजी टूर्नामेंट का आयोजन हुआ, जिसमें प्रतिभागियों को कुछ पासवर्ड के ज़रिए प्रश्न को हल करना था। सॉफ्टवेयर और गेम डेपलपिंग में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों के लिए तकनीक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

सीएए, एनआरसी के सभी पहलुओं पर हुई विद्यार्थियों से बातचीत

आशुतोष मिश्रा

स्टूडेंट यूनियन व संगोष्ठी सोसाइटी

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के रामलाल आनंद कॉलेज में 17 जनवरी 2020 को स्टूडेंट यूनियन व संगोष्ठी सोसाइटी ने मिलकर 'सीएए एनआरसी मैथ्स एंड फैक्टस' पर कार्यक्रम का आयोजन करवाया। कार्यक्रम में पूर्व राज्यसभा सांसद व पत्रकार बलबीर पुंज मुख्य अतिथि की भूमिका में नज़र आए। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता ने दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया, जिसके बाद डॉ. प्रेरणा मल्होत्रा ने अतिथियों का स्वागत किया।

कार्यक्रम में जामिया मिल्लिया इस्लामिया के छात्र भी शामिल हुए। मुख्य अतिथि बलबीर पुंज ने अपने भाषण में बताया कि सीएए हिंदू, इस्लाम, ईसाईयत, जैन व अन्य छोटे–छोटे धर्मों से ताल्लुक रखने वाले लोगों की नागरिकता छीनने के लिए नहीं बल्कि अफगानिस्तान और बांग्लादेश से आए लोगों को भारत में पाँच साल हो जाने पर नागरिकता देने के लिए तैयार किया गया कानून है। उन्होंने यह भी कहा कि बगैर इकोसिस्टम के धर्मनिरपेक्षता तथा लोकतंत्र को सुरक्षित नहीं रखा जा सकता है, जो विरोध कर रहे हैं वो गलत नहीं हैं जब भी कोई नई चीज़ बनाई जाती है तो उसमें कुछ खामियां जरूर होती हैं। बलवीर पुंज ने बताया कि जम्मू–कश्मीर में अनुच्छेद 370 की दीवार ने अनेक लोगों को देश का नागरिक बनने नहीं दिया इसलिए भाजपा सरकार उनको सीएए के ज़रिए नागरिकता देना चाहती है। एनआरसी का ज़िक्र करते हुए उन्होंने बताया कि दुनिया के सौ देशों में आज एनआरसी लागू है। भारत के पास अपने नागरिकों का हिसाब होना चाहिए ताकि सरकार बेहतरीन ढंग से अपने नागरिकों का कल्याण कर सके।

इसके बाद प्रश्नोत्तरी का दौर चला जिसमें कई छात्रों ने अपने प्रश्न रखे। डॉ. मल्होत्रा ने वक्ता का शुक्रिया अदा किया तथा प्राचार्य, शिक्षक व छात्रों को धन्यवाद देते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

प्रश्नोत्तरी के पश्चात कार्यक्रम में आए वक्ता बलबीर पुंज का धन्यवाद ज्ञापन महाविद्यालय के प्राचार्य द्वारा किया गया।

रिजवान और अमित ने जीती साहित्यिक प्रश्नोत्तरी

गीतू कत्याल

हिंदी विभाग

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के रामलाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी विभाग की हिन्दी साहित्य परिषद द्वारा 17 फरवरी 2020 को साहित्यिक प्रश्नोत्तरी एवं काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता तथा हिन्दी साहित्य परिषद के संयोजक डॉ. सुभाष चंद्र डबास के सहयोग से इस कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में निर्णायक मंडल के रूप में डॉ. अलंकार, डॉ. कृष्ण गोपाल त्यागी और डॉ. मानवेश नाथ दास उपस्थित रहे। महाविद्यालय के विभिन्न विभाग के विद्यार्थियों ने प्रतियोगिता में बड़ी संख्या में भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन हिन्दी विभाग के विद्यार्थी अनुराधा व नव्या द्वारा किया गया।

प्रतियोगिता का प्रारंभ हिंदी साहित्य प्रश्नोत्तरी से हुआ, जिसमें साहित्य से सम्बंधित कई सवाल पूछे गए। यह प्रतियोगिता कई राउंड में संपन्न हुई। इसके बाद काव्य पाठ प्रतियोगिता की शुरूआत की गई, जिसमें विद्यार्थियों ने अपनी कविताएं सुनाकर सबका मन मोह लिया। आखिर में प्रथम तीन प्रतिभागियों का नाम घोषित किया गया, जिसमें प्रथम पुरस्कार हिंदी विभाग के द्वितीय वर्ष के रिजवान और अमित, द्वितीय पुरस्कार तृतीय वर्ष के विकास और रोशन को व तृतीय पुरस्कार द्वितीय वर्ष के कुलदीप व अभिषेक ने अपने नाम किया। सभी उपस्थित शिक्षकगणों व निर्णायक मंडल का आभार प्रकट करते हुए कार्यक्रम का समापन किया गया।

आरएलए समाचार
संरक्षक मंडल
प्राचार्य
डॉ. राकेश कुमार गुप्ता
विभागाध्यक्ष
डॉ. नीलम ऋषिकल्प
संयोजक
डॉ. राकेश कुमार
परामर्शदाता
डॉ. अटल तिवारी
संपादक
मानसी बिष्ट
उप–संपादक
गीतू कत्याल

आर एल ए समाचार

आपकी आवाज आप तक

रामलाल आनंद महाविद्यालय, हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का प्रकाशन | सत्र 2020–21 | पृष्ठ 1–4

अंतरराष्ट्रीय पत्रिका में माइक्रोबायोलॉजी

माइक्रोबायोलॉजी विभाग की ओर से प्रकाशित शोध पत्रों को मिली अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में जगह

धनंजय कुमार, अनुराग सिंह

नई दिल्ली। वर्ष 2020 से पहले सारी दुनिया विज्ञान के गौरवगान में मग्न थी। हर नए रॉकेट की उड़ान के साथ विज्ञान एक कदम ऊपर उठ रहा था, लेकिन एक अदृश्य दुश्मन ने दबे पांव दस्तक दी और देखते ही देखते समूचे विज्ञान जगत को चुनौती दे डाली। ये वायरस जल्दी जाने को तैयार नहीं था ऐसे में विकल्पों की तलाश की जाने लगी जो इसके साथ जिन्दगी के पहिये घुमा सके। ऐसे में रामलाल आनंद महाविद्यालय के माइक्रोबायोलॉजी विभाग के छात्रों ने भी ऑनलाइन शिक्षा की दुनिया में कदम रख दिया।

ऑनलाइन पढ़ाई के दौरान ही विभाग ने साइंस राइटिंग एंड रिसर्च एथिक्स पर एक सर्टिफिकेट कोर्स करवाया। इसका नतीजा यह रहा कि पाँच शोध और समीक्षा लेखों का प्रकाशन हुआ। अंतर्राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं और पुस्तकों में भी इसके कई अध्याय शामिल किए गए। इस प्रकाशन की देखरेख डॉ. वंदना गुप्ता कर रही थीं। इसमें कोविड–19 चिकित्सा विज्ञान (अनुराग सिंह द्वारा), कोविड–19 वैक्सीन (सिमरन प्रीत कौर द्वारा 2 प्रकाशन), कोविड–19 निदान (भावना शर्मा और फरदीन शहंशाह द्वारा) शामिल हैं। इसके अलावा विभाग ने कोरोना वैक्सीन के नैदानिक परिप्रेक्ष्य पर एक पुस्तक प्रकाशित करने का लक्ष्य रखा है। इसमें अनुराग सिंह, सिमरन प्रीत कौर, फरदीन शहंशाह और भावना शर्मा सह–लेखक की भूमिका में हैं। इसके अलावा डॉ. वंदना गुप्ता, डॉ.निधि चंद्रा और उनके मार्गदर्शन में विभाग के स्नातक छात्रों द्वारा सूक्ष्म मृदा के औद्योगिक अनुप्रयोगों के चार अध्यायों का प्रकाशन बेंथम साइंस पब्लिशर्स के अधीन जारी है।

आरएलए का माइक्रोबायोलॉजी विभाग।

माइक्रोबायोलॉजी विभाग वर्तमान में विभिन्न विश्वविद्यालयों के लगभग 65 छात्रों की भागीदारी के साथ पायथन प्रोग्रामिंग पर एक सर्टिफिकेट कोर्स चला रहा है। इसके साथ ही पांच शोध परियोजनाओं को कॉलेज के शोध अनुदान के तहत स्वीकार कर लिया गया है।

इसके अलावा विभाग ने जैव सुरक्षा, जैव रसायन और आईपीआर नामक एक विकास कार्यक्रम का आयोजन किया। भारत और विदेशों से जुड़े वक्ताओं के साथ छात्रों और संकायों के लिए दो दिवसीय वेबिनार श्रृंखला भी ऑनलाइन ही आयोजित की गई। इस तरह विभाग ने कोरोना जैसी महामारी में भी अपने इरादे साफ कर दिए कि हम रुकने वाले नहीं हैं। विभाग अपनी लंबी विरासत को बनाए रखने के लिए लगातार प्रयासरत है।

हिंदी आमजन की अभिव्यक्ति का सबसे सरल माध्यम है

शिल्पी

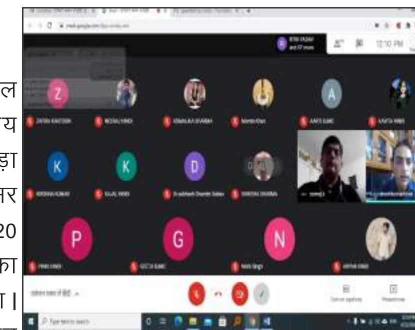

छात्रों को संबोधित करते नीरज कुमार।

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय द्वारा हिंदी पखवाड़ा के समापन के अवसर पर 23 सितंबर 2020 को वेबिनार का आयोजन किया गया। जिसका आयोजन विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. राकेश कुमार ने किया। इस वेबिनार का विषय था "वर्तमान समय मे हिंदी"।

संगोष्ठी की शुरुआत करने से पहले डॉ. राकेश कुमार ने हिंदी को आजादी की लड़ाई से जोड़ते हुए बताया कि आजादी से पहले पत्रकारिता अपने शिखर पर थी। भारत को आजाद कराने में हिंदी की भूमिका बहुत अहम रही है। इस सेमिनार के मुख्य वक्ता सूचना, जनसंपर्क एवं भाषा विभाग, हरियाणा के उप–निदेशक नीरज कुमार थे।

नीरज कुमार ने बताया कि आजादी के 70 वर्ष बाद भी हमें हिंदी भाषा के विषय को लेकर ई–संगोष्ठी करनी पड़ रही है तो ये कहीं न कहीं एक चिंतन का विषय है।

सोशल मीडिया के माध्यम से आज पूरा विश्व एक–दूसरे से जुड़ा हुआ है। संचार के सबसे लोकप्रिय साधन सोशल मीडिया ने हिंदी के प्रचार–प्रसार को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एक समय था जब सोशल मीडिया पर लोग सिर्फ अंग्रेजी का प्रयोग करते थे। लेकिन अब सोशल मीडिया पर भी हिंदी का प्रभाव खूब नजर आता है।

समाज में हिंदी की स्थिति पर विद्यार्थियों ने भी अपने विचारों को साझा किया। वेबिनार के अंतिम भाग में नीरज कुमार ने छात्रों के प्रश्नों का उत्तर किया। तर्क वितर्क भरी इस चर्चा में हिंदी भाषा के भूत, वर्तमान और भविष्य की संभावनाओं को उजागर किया। डॉ. सुभाष चंद्र डबास ने धन्यवाद ज्ञापन कर संगोष्ठी का समापन किया।

डाटा साइन्स में संभावनाओं को तलाशते छात्र

दीपशिखा

नई दिल्ली। राम लाल आनंद कॉलेज के प्लेसमेंट सेल द्वारा 16 जनवरी 2021 को वेबिनार का आयोजन किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को स्टेटिस्टिक्स से संबंधित क्षेत्रों के बारे में जानकारी देना, आम तौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले प्रोग्रामिंग लैंग्वेज के बारे में बताना तथा डाटा साइंस से संबंधित नौकरियों के बारे में बताना था। इस कार्यक्रम में अतिथि वक्ता के रूप में भरत कठौरिया शामिल हुए जो कि हमारे कॉलेज के पूर्व छात्र रहे हैं तथा वर्तमान में यू.के की कंपनी स्मार्ट क्यूल्स में बतौर मैने. जिंग कंसल्टेंट कार्यरत हैं।

कार्यक्रम के दौरान उन्होंने स्टेट्स और डाटा साइंस से संबंधित लाभ व अवसरों की चर्चा की। सत्र को और लाभकारी बनाते हुए उन्होंने सरकारी संभावनाओं जैसे भारतीय सांख्यिकी सेवा, रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया तथा निजी क्षेत्र की संभावनाओं पर चर्चा की। उन्होंने यह भी बताया कि डाटा साइंस में इच्छुक बच्चों को किन प्रतिभाओं की जरूरत है। सत्र के आखिर में उन्होंने विद्यार्थियों को स्नातक से स्नातकोत्तर और फिर अपने इच्छानुसार जॉब चुनने के लिए मार्गदर्शन प्रदान किया। यह सत्र ऑनलाइन होने के बाद भी बहुत उत्साहजनक रहा।

छात्रों ने फेस्ट में जाने पटकथा के गुण

फेस्ट के विभिन्न कार्यक्रमों में विद्यार्थियों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया

प्रियांशु गौतम

नई दिल्ली। राम लाल आनंद कॉलेज की इंग्लिश लिटरेरी सोसायटी यूबिक्विटस द्वारा लिटरेचर फेस्ट का आयोजन किया गया। फेस्ट के विभिन्न कार्यक्रमों में 3 रोमांचक प्रतियोगिताएं और एक वेबिनार शामिल था। फेस्ट 23 और 25 जनवरी को आयोजित किया गया।

वेबिनार की शुरुआत 23 जनवरी से हुई, जिसमें लेखक और निर्देशक कमलेश के. मिश्रा, आई.आई. एफ अवार्ड विजेता और मशहूर पटकथा लेखक दिलीप शुक्ला के साथ मौजूद रहे। वक्ताओं ने फिल्म लेखन और फिल्म निर्देशक पर अपनी बातें छात्रों के सामने रखी। उन्होंने फिल्म की पटकथा लेखन और फिल्म निर्देशन में अपने बहुमूल्य अनुभव और सलाह को साझा किया। वेबिनार को गूगल मीट पर आयोजित किया गया। फेस्ट में पत्र लेखन और कविता लेखन प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। पत्र लेखन प्रतियोगिता में प्रतिभागियों को अपने पसंदीदा काल्पनिक चरित्र को एक पत्र लिखना था। कविता लेखन प्रतियोगिता में प्रतिभागियों को संकेत के आधार पर एक कविता गढ़नी थी। पत्र लेखन और कविता लेखन प्रतियोगिता के विजेता क्रमशः रूपाली और वैष्णवी रहे।

ऑनलाइन लिटरेचर फेस्ट का आयोजन।

तीसरी प्रतियोगिता एक लाइव क्विज प्रतियोगिता थी। इस क्विज ने साहित्य पर प्रतिभागियों के ज्ञान का परीक्षण किया। वेबिनार में प्रतिभागियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी से फेस्ट सफल रहा। इस फेस्ट का आयोजन सोसाइटी की समन्वयक डॉ. प्रेरणा मल्होत्रा, संयोजक डॉ. ऋतंभरा मिश्रा और सोसायटी के सभी सदस्यों ने मिलकर किया था।

हसरतें ने चेन्नई तक लहराया परचम

पूजा अग्रवाल

नई दिल्ली। हसरतें रामलाल आनंद महाविद्यालय की एक सोसायटी है। हसरतें ने 2 अक्टूबर 2020 को आकाशवाणी द रेडियो प्ले कंपटीशन में भाग लिया। जिसमें हसरतें के 'वन्स अपॉन ए नाइटमेयर' को पहले पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस नाटक में रागिनी सक्सेना और सुभग सिंह ने स्वर दिए व निर्देशन एवं संपादन रहा कृतिक वार्शने का।

इस ललकार कार्यक्रम का आयोजन एस.आर.एम यूनिवर्सिटी चेन्नई ने किया। यह कार्यक्रम ऑनलाइन था। हसरतें को यह पुरस्कार रेडियो में अच्छे पार्श्व गीत और कहानी के आधार पर दिया गया। नाटक कला ने हमेशा से ही लोगों को जागरूक करने का काम किया है। उसी प्रकार हसरतें सोसाइटी ने भी एक लंबे समय से अपने नाटकों के द्वारा समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है।

महिला दिवस के अवसर पर गूंजते कविता के स्वर

अमर केशरी

नई दिल्ली। महाविद्यालय के हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 8 मार्च को काव्य गोष्ठी का आयोजन किया। कार्यक्रम का आयोजन मोलिटिक्स (वेब पोर्टल) के सहयोग से किया गया। मोलिटिक्स की ओर से उपस्थित अर्पिता सिन्हा कार्यक्रम की मुख्य अतिथि रही।

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के समन्वयक डॉ. राकेश कुमार ने बताया कि प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक महिलाओं की स्थिति–सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक रूप से समान नहीं रही। आज की महिला पूरी तरह से सशक्त हैं, जिससे वह अपने जीवन से जुड़े हर फैसले स्वयं ले सकती है।

काव्य गोष्ठी की शुरुआत हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की प्रथम वर्ष की छात्रा दीपशिखा ने मशहूर शायर मुनीर नियाजी के शेर से की–'शहर का तब्दील होना, शाद रहना और उदास, रौनकें जितनी यहाँ हैं औरतों के दम से हैं।' अन्य महाविद्यालयों के छात्रों ने भी इस प्रतियोगिता में भाग लिया। सभी छात्रों ने अपने कौशल का प्रदर्शन किया।

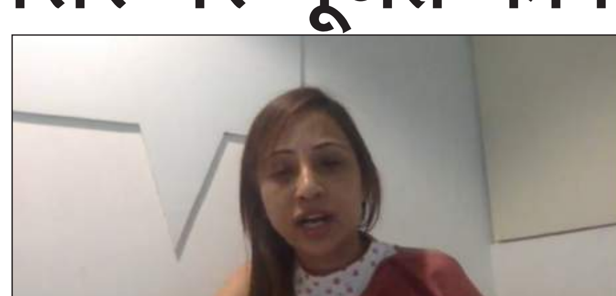

मोलिटिक्स की निर्देशक अर्पिता सिन्हा।

डॉ. अटल तिवारी, डॉ. प्रदीप कुमार और डॉ. सीमा भारती ने भी काव्य पाठ किया।

कार्यक्रम की अंतिम कड़ी में विभाग द्वारा पूर्व आयोजित फोटोग्राफी प्रतियोगिता के परिणाम भी जारी किये गए। जिसमें प्रथम स्थान महाराजा अग्रसेन कॉलेज की आकांक्षा पांडे, दूसरे स्थान पर रामलाल आनंद कॉलेज की अंजलि और तीसरे स्थान पर आत्माराम सनातन धर्म कॉलेज के अंकित रहे। कार्यक्रम के अंत में विभाग के समन्वयक डॉ.राकेश कुमार ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।

पाँव की ज़ंजीर न देख

आर.एल.ए. समाचार का यह अंक ऐसे समय में आ रहा है जब हमारी दुनिया थोड़ी थम सी गई है। विद्यार्थियों की गतिविधियों से गुलजार रहने वाले गलियारे सूने नजर आ रहे हैं। नए–नए प्रयोगों के लिए बनाई गई प्रयोगशालाएं रिक्त दिखाई दे रही हैं। कभी न थमने वाली बातों का सिलसिला भी तो कुछ रुका सा है। पर इस सब के बीच हमने नए तरीके से जीना–सोचना और आगे बढ़ना सीख लिया है। उसी का आईना है यह अंक। जो यह दर्शाता है कि रचनात्मकता–जिजिविषा और भविष्योन्मुखी दृष्टि से यदि हम अपने समय और दुनिया को देखें तो ऐसा बहुत कुछ है जिसे संजोया जा सकता है। यह अंक दिखाता है कि हम एक संस्थान के रूप में अपने समय के सबसे कठिन सवालों से किस प्रकार जूझ रहे हैं और किस प्रकार डटकर अपने समय की चुनौतियों के सामने खड़े हुए हैं। महाविद्यालय के प्रत्येक विभाग की यह कोशिश रही है कि समस्याओं के बीच भी पठन–पाठन–अध्ययन और विचार की शृंखला बरकरार रहे और इस प्रयास के साक्षी रहे हैं हमारे पत्रकारिता विभाग के सक्रिय विद्यार्थी जिन्होंने इस अंक को अपने श्रम–प्रतिभा और लगन से तैयार किया है। इसी जज्बे को देखकर मुझे मजरूह सुल्तानपुरी का एक शेर याद आ रहा है,

देख जिंदाँ से परे रंग–ए–चमन जोश–ए–बहार
रक्स करना है तो फिर पाँव की जंजीर न देख।

प्रो. राकेश कुमार

मानसिक स्वास्थ्य की व्यापक समस्या

विकास कुमार

वीर भोग्या वसुंधरा, ये वक्तव्य मैं काफी दिनों से सुनता आ रहा हूं। पहले मुझे लगता था कि ये गलत है, ऐसा नहीं होता और होना भी नहीं चाहिए। जैसे–जैसे जिंदगी के अनुभवों से सामना हुआ तब लगा कि हां ऐसा होता है, पर होना नहीं चाहिए। ये दुनिया एक जंगल है। यहां जीवनयापन के लिए वीर होना अनिवार्य है। मेरी बातें आप शारीरिक स्वास्थ्य के बाहरी संदर्भ में समझेंगे लेकिन यह बात है उस अंग की जिसकी वजह से आपकी सभी शारीरिक क्रियाओं का संचालन होता है। हमारा मस्तिष्क चीजों को जानने, समझने, जांचने की क्षमता देता है। मानसिक स्वास्थ्य शब्द आप हमेशा सुनते होंगे पर कभी इससे जुड़ी बातों को जानने की उत्सुकता दिखाई है आपने? नहीं! यही तो नाकामी है हमारी।

डब्ल्यूएचओ की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत की 7.5 प्रतिशत आबादी मानसिक अवसाद से गुजर रही है। उनका यह भी मानना था कि 2020 में यह आबादी बढ़कर 20 प्रतिशत हो जाएगी, अब तो हो भी गई होगी। रोगियों की इतनी बड़ी संख्या होने के बावजूद इसकी उपेक्षा की जा रही है। कुछ रूढ़िवादी लोग तो इसे काल्पनिक मानते हैं। गांव में यह मामला चरम पर है। मानसिक रोगी से ग्रस्त लोगों को ग्रामीण इलाकों में पागल मान लिया जाता है।

मानसिक स्वास्थ्य के बढ़ते मामलों की बढ़ी वजह है बढ़ती आबादी। जनसंख्या के कारण संसाधन का बंटवारा होना व अवसर पाने के लिए प्रतियोगिताओं में बकरों की तरह बलि चढ़ाने, बेरोजगारों में मानसिक अवसाद की सबसे बड़ी वजह है। लोगों में अब धैर्य नहीं रह गया। छोटी–छोटी बातों पर हम झगड़ने लगते हैं। कामों में इतना व्यस्त रहते हैं कि परिवार और दोस्तों को समय नहीं दे पाते। यहां तक कि खुद के लिए भी समय नहीं होता। अपनी–अपनी दुनिया में सिमट जाने के कारण हमारे अंदर गुस्सा और चिढ़–चिढ़ा पन बढ़ रहा है। बीते दिनों मानसिक अवसाद की बातें सोशल मीडिया पर उठी है। बहुत सारे मामलों पर बहस और संवाद हुए है। लेकिन एक हिस्सा वह भी था जो लोगों को अपनी परेशानी के बारे में बात करने को प्रेरित कर रहा था। इसे मान. सिक स्वास्थ्य से लड़ने का सबसे सरल उपाय माना जा सकता है। हम बात करके जीवन की हर समस्या को सुलझा सकते हैं।

हमारी बातों में पहाड़

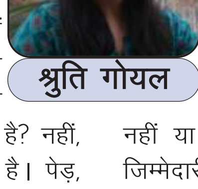

श्रुति गोयल

किताबों का शौक है? वेद ने पूछा। बहुत, मेरे पास पुरानी से पुरानी किताबें भी मिल जाएंगी। माया और वेद पहली बाद मिल रहे थे। तो क्या आप हर साल गांव जाते हैं? माया ने पूछा। हर साल तो कहां हो पाता है पर 3–4 साल में एक बार। वेद ने बताया। हर बार पहले से कुछ अलग लगता है? नहीं, सब कुछ वही रहता है। पेड़, खेत, नदी सिवाय लोगों के। मतलब? हमारे और आपके जैसे ही लोग होते हैं जो भरे पूरे घर को खाली मकान कर देते हैं। अब देखिए न, हम दिल्ली में बैठकर गांव की बातें कर रहे हैं। तीन आप चाय लेना पसंद करेंगी या कॉफी? वेद ने रसोई में जाते हुए पूछा। कॉफी...पर गांव में सुविधाएं भी तो नहीं हैं? इसी कारण लोग यहां आ जाते हैं। मैंने भी यही सोचा था। पर आज बहुत बार पीछे देखने पर यह भी लगता है कि सही प्रश्न नहीं उठाया। एक तरफ चाय चढ़ाकर वेद कॉफी फेंट रहा था। सही प्रश्न? माया के माथे पर लकीरें पड़ते हुए। क्या गांव देहात में सुविधाएं है नहीं या हो भी नहीं सकती? जिम्मेदारी लेना किसे पसंद है? हम सब बहुत जल्दी में हैं। पल दो पल तो ठहर सकते हैं न? चाय की खुशबू रसोई से बाहर तैरने लगी। वेद एक गिलास में चाय लाया और दूसरे कप में कॉफी। आपको बुरा न लगे तो मैं चाय ले सकती हूं? आपको कॉफी पीनी पड़ेगी। वेद ने माया की तरफ चाय का गिलास कर दिया।

शिक्षा का बदलता स्वरूप

मानषी बिष्ट

देश में शिक्षा के क्षेत्र में ऑनलाइन क्रांति लाने का श्रेय बहुत हद तक कोरोना वायरस को जाता है। पाठ्यक्रम की निरंतरता बनाए रखने और लॉकडाउन के बाद आसान शुरुआत के लिए स्कूल–कॉलेजों, तकनीकी संस्थानों और यहां तक कि कोचिंग सेंटरों ने भी ऑनलाइन कक्षाएं शुरू कर दी हैं। देश भर के लाखों छात्र हर रोज जूम से लेकर गूगल मीट तक कई प्लेटफॉर्म के जरिए वर्चुअल क्लासरूम से जुड़ रहे हैं। ऑनलाइन होमवर्क दिए और दिखाए जा रहे हैं। उनका मूल्यांकन हो रहा है और परीक्षाएं भी ली गई हैं।

ऑनलाइन शिक्षा बाजार के लिए अनुमान था कि 2021 तक उसका इस्तेमाल करने वाले 96 लाख हो जाएंगे और कारोबार 1.96 अरब डॉलर (14,836 करोड़ रु.) का हो जाएगा, पर यह लक्ष्य 2020 में ही हासिल हो गया। केंद्र सरकार भी ऑनलाइन पढ़ाई को बढ़ावा दे रही है। उसने पीएमईविद्या कार्यक्रम लॉन्च किया है। यह मल्टी–मोड डिजिटल ऑनलाइन लर्निंग मंच टीवी चैनलों, कम्युनिटी रेडियो और पॉडकास्ट के जरिए चलता है।

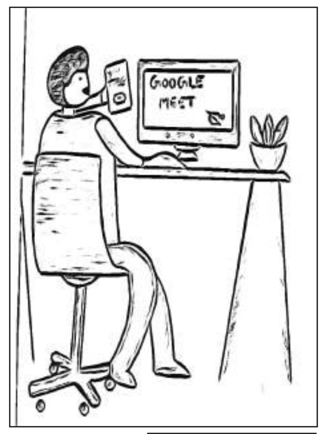

कार्टून : विकास त्रिपाठी

कोरोना के बाद और मौजूदा समय में ऑनलाइन शिक्षा बाजार के लिए अनुमान था कि 2021 तक उसका इस्तेमाल करने वाले 96 लाख हो जाएंगे और कारोबार 1.96 अरब डॉलर (14,836 करोड़ रुपए) का हो जाएगा, पर यह लक्ष्य 2020 में ही हासिल हो गया। केन्द्र की सरकार भी ऑनलाइन पढ़ाई को बढ़ावा दे रही है...

हालांकि ऑनलाइन पढ़ाई के आड़े डिजिटल पहुंच की खाई आ रही है। कई सर्वे से पता चलता है कि छात्रों के घरों में गैर–भरोसेमंद कनेक्टिविटी और बिजली आपूर्ति ऑनलाइन पढ़ाई के लिए दिक्कत बन सकती है। दिल्ली विश्वविद्यालय कैंपस मीडिया प्लेटफॉर्म पर 35 कॉलेजों के 12,214 छात्रों के एक ऑनलाइन सर्वे में पाया गया कि 85 फीसद छात्र ऑनलाइन परीक्षा के खिलाफ हैं, 75.6 फीसद छात्रों के पास क्लास या परीक्षा के लिए लैपटॉप नहीं हैं, जबकि 79.5 फीसद ने कहा कि उनके पास ब्रॉडबैंड कनेक्शन नहीं हैं। तकरीबन 65 फीसद ने कहा कि उनके पास स्थाई मोबाइल नेटवर्क कनेक्शन नहीं है जबकि लगभग 70 फीसद का दावा था कि उनके घर में ऑनलाइन परीक्षा के लिए माहौल नहीं है।

ऑनलाइन क्लास के कुछ अच्छे पहलू भी हैं। यह तकनीक की मदद से पढ़ाई के नवीन तरीकों को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है, छात्रों को सर्वश्रेष्ठ शिक्षकों द्वारा तैयार सर्वश्रेष्ठ सामग्री तक पहुंचने में मदद मिल सकती है, अपनी गति से सीखने का अवसर मिलता है, एक ही समय पर एक साथ बहुत से विद्यार्थियों तक पंहुचा जा सकता है, आभासी दुनिया की गुमनामी के कारण साथियों के दबाव से राहत रहती है और तनाव मुक्त वातावरण हो जाता है तथा यह नियमित कैंपस की पढ़ाई वाली डिग्री से बहुत ज्यादा कम खर्चीला है।

ऑनलाइन पढ़ाई कई जगहों पर नाकाम भी नजर आती है। वर्चुअल लर्निंग और शिक्षण के लिए समय और अभ्यास दोनों की जरुरत होती है, जो अचानक आई महामारी में सही से मिल नहीं सका। स्कूली माहौल से अलग होने से ऑनलाइन क्लास में इधर–उधर की चर्चा और बहसें शुरू हो जाती हैं। घरेलू माहौल विद्यार्थियों और शिक्षकों, दोनों के लिए भटकाव पैदा कर देता है। ऑनलाइन पढ़ाई में सब कुछ इंटरनेट, बिजली और डिजिटल डिवाइस की उपलब्धता पर निर्भर है, आर्थिक रूप से कमजोर पृष्ठभूमि के और दूरदराज के क्षेत्रों के छात्रों के पास अक्सर तीनों में से कोई साधन नहीं होता। स्क्रीन के सामने ज्यादा समय बिताने से शारीरिक और मानसिक आघात लग सकने का खतरा रहता है।

यह कहा तो जा सकता है कि कोविड–19 की वजह से ऑनलाइन शिक्षा ने भारत में रफ्तार पकड़ी है, मगर इसे कामयाब बनाने के लिए कस्टमाइज ऑनलाइन लर्निंग मॉड्यूल और ज्यादा मजबूत डिजिटल बुनियादी ढांचे की सख्त जरुरत है।

पहाड़ों पर विकास और पर्यावरण संरक्षण की जरूरत

मनोज थायट

विकास किसी भी समाज की प्रगति और बेहतर सुविधाओं के लिए किया जाता है। क्या आप इस बात की कल्पना कर सकते हैं कि किसी क्षेत्र का विकास उस क्षेत्र के लोगों और प्रकृति के लिए आफत बना हो? विकास शब्द का सामान्य अर्थ प्रगति, अच्छा जीवन, कल्याण, बेहतर सुविधाएं आदि से है। विकास समाज के सभी पहलुओं और प्रत्येक नागरिक से संबंधित है। पहाड़ी क्षेत्र प्राकृतिक संसाधनों के भंडार हैं। भारत के 12 उत्तर–पूर्वी राज्य हिमालयी क्षेत्र में आते हैं। संसाधनों के भंडारों को लूटने के लिए विकास को माध्यम बनाया गया और पहाड़ी लोगों के लिए दावत में तबाही को परोसा गया।

भौतिक संसाधनों की अनंत लालसाओं को पूरा करने के लिए अब दोहन नहीं बल्कि विदोहन हो रहा है। प्रकृति ने मानव को तोहफे के रूप में जल, जंगल, जमीन, प्राकृतिक संसाधन, शुद्ध वायु, वनस्पति, पेड़–पौधे आदि दिया। साथ ही मानव को प्रकृति ने कुछ नैतिक जिम्मेदारियां भी दी कि वह पेड़–पौधों, वनस्पतियों और वन्य प्राणियों की रक्षा भी करेगा। मानव ने स्वयं को सर्वोपरि मान लिया है और जिम्मेदारियों को द्वितीय। कमोबेश वर्तमान स्थिति यह है कि पर्यावरण के संसाधन अपने मूल रूप में रह ही नहीं गए हैं। इसी का परिणाम है कि समय–समय पर आपदाओं में मानवीय त्रासदी हो रही है। पर्यावरण संरक्षण की बड़ी–बड़ी बातें बड़े–बड़े होटलों के सभागारों में चाय–समोसा तक ही रह जाती है।

उत्तर भारत के पर्वतीय राज्य उत्तराखंड को केंद्र में रखकर पहाड़ों पर विकास को आसानी से समझा जा सकता है। 9 नवंबर 2000 को संयुक्त राज्य उत्तर प्रदेश से अलग होकर भारत का 27वां राज्य उत्तराखंड. बना। इस राज्य को बनाने का मूल उद्देश्य यही था कि संयुक्त राज्य उत्तर प्रदेश से पर्वती भाग को अलग कर दिया जाए। राज्य क्रांतिकारियों की भी मांग कुछ यही थी। नया राज्य बना तो पहाड़ों पर विकास और अर्थव्यवस्था को बढ़ाने के लिए मनमाने तरीके से डायनामाइट के भीषण विस्फोटों से पहाड़ों को तोड़कर सड़कें बनाई जाने लगी। इस बात को नजरअंदाज किया गया कि मध्य हिमालय कच्चे और नाजुक पहाड़ों से बना है। टूटते पहाड़ों के कारण मिट्टी की बुनियाद कमजोर होते हुए सतह को छोड़ने लगी और आए दिन भूस्खलन जैसी घटनाएं पहाड़ में होने लगी। बड़े–बड़े पहाड़ों को काटकर और गांव को खाली करके बांध बनाए जाने लगे। पहाड़ों को तोड़कर पत्थर और नदियों से बजरी (रेत) अत्यधिक मात्रा में निकाली जाने लगी। परिणाम, पहाड़ कमजोर होने लगे। विकास के नाम पर उत्तराखंड राज्य में पेड़ों की कटाई के आंकड़ों के लिए शायद पुस्तकें कम पड़ जाएं। राज्य में पर्यटन रोजगार का प्रमुख जरिया है किंतु अब स्थिति यह है कि पर्यटन स्थलों पर निर्माण, प्लास्टिक, वाहनों ने उन्हें भी अशुद्ध कर दिया है।

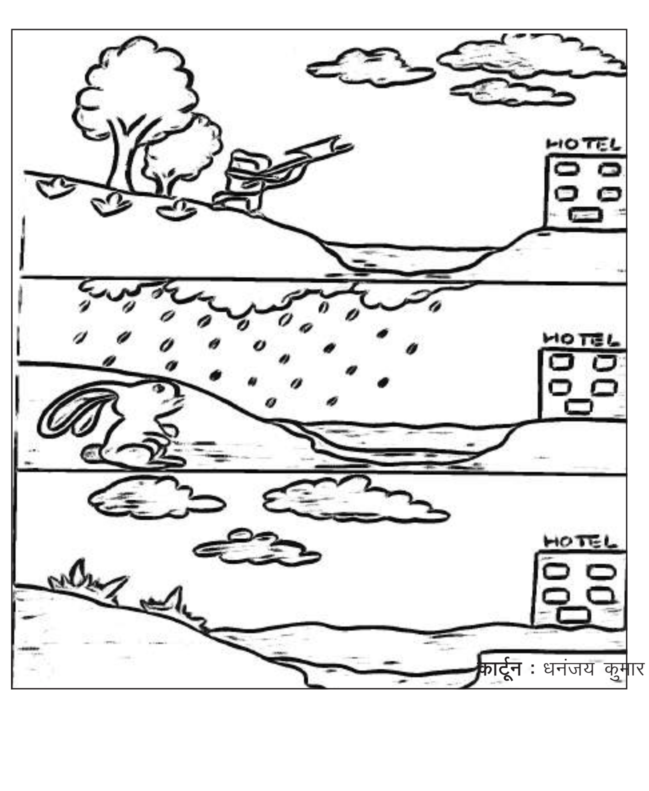

कार्टून : धनंजय कुमार

पहाड़ और पठार में अंतर होता है, दोनों के विकास के मानकों में भी अंतर होना चाहिए। लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह है कि पठार के विकास मानकों को पहाड़ों पर भी लागू किया जाता है, जो बाद में पहाड़ के उन स्थानीय लोगों के लिए मुसीबतों का पहाड़ बनकर उन पर गिरते हैं। समाधान यही है कि पहाड़ के लिए विकास मानक तय किए जाएं और विकास के नाम पर पहाड़ों को तबाह करने से पहले उन लोगों के बारे में भी सोचना चाहिए जिनके वो घर है।

गांधीवादी दृष्टि से हो आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना

दो–दिवसीय नेशनल कांफ्रेंस में विद्वानों ने आत्मनिर्भर भारत को गांधी के मूल्यों पर परखा

गीतू कत्याल

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय के गांधी स्टडी सर्कल द्वारा 28 और 29 सितम्बर 2020 को दो दिवसीय नेशनल कांफ्रेंस का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन का विषय आत्मनिर्भर भारत एक गांधीवादी दृष्टिकोण था। गुजरात विद्यापीठ और रामलाल आनंद कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान से आयोजन को गूगल मीट पर संचालित किया गया।

कॉन्फ्रेंस की अध्यक्षता गांधी स्टडी सर्कल के संयोजक डॉ. देवेंद्र कुमार और सह–समन्वयक डॉ. सुभाष चंद्र डबास ने की। नेशनल कॉन्फ्रेंस को चार सत्र में विभाजित किया गया।

पहले सत्र का आरम्भ रामलाल आनंद महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ राकेश कुमार गुप्ता ने शुभारम्भ भाषण देते हुए किया। इस सम्मेलन में गांधी स्टडी सर्कल ने पूर्व इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस पर आधारित गांधी एक्रॉस दी बाउंड्री नामक पुस्तक का विमोचन किया। प्रोफेसर अनामिका शाह ने गांधी और आत्मनिर्भरता की संकल्पना विषय पर अपना वक्तव्य पेश किया।

दूसरे सत्र का आरम्भ भावनगर विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रोफेसर विद्युतभाई जोशी ने किया। उनका विषय इक्कीसवीं शताब्दी में स्वावलंबन का स्वरूप था। इसके बाद इंडियन सोसाइटी ऑफ कम्युनिकेशन की ट्रस्टी मंदाबेन पारेक ने महिला स्वयं सहायक समूह एवं आत्मनिर्भरता विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

तीसरे सत्र की शुरुआत प्रोफेसर सत्यकाम जोशी ने की। उनका विषय आदिवासी उत्कर्ष और गांधी का स्वावलंबन था।

समापन सत्र में डॉ. राजेन्द्र खिमानी गुजरात विद्यापीठ के डायरेक्टर ने ग्रामीण भारत, कृषि और स्वावलंबन विषय पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम का समापन गांधी स्टडी सर्कल के सह–समन्वयक डॉ. सुभाष चंद्र डबास ने सबका आभार प्रकट करते हुए किया। वहीं 2019–2020 के सत्र में राम लाल आनंद महाविद्यालय के गांधी स्टडी सर्किल ने दिल्ली विश्वविद्यालय के 52 महाविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। स्क्रीनिंग कमेटी द्वारा इसका चयन किया गया जिसमें संयोजक डॉ. देवेंद्र कुमार और छात्र अध्यक्ष दीपक कुमार त्रिवेदी को गांधी भवन द्वारा पुरस्कृत भी किया गया।

कॉर्पोरेट जगत के लिए तैयार होते विद्यार्थी

प्रीति

नई दिल्ली। आज की डिजिटल दुनिया में वेबसाइट निर्माण करना एक बड़ी कला मानी जा रही है। इस बात को समझते हुए राम आनंद महाविद्यालय की बीए प्रोग्राम समिति ने फुल स्टैक वेब डेवलपमेंट एंड होस्टिंग सर्टिफिकेट कोर्स शुरू किया। तीन माह तक चलने वाले इस कोर्स में छात्रों को एक वेबसाइट बनाना और उसे ऑनलाइन होस्ट करना सिखाया।

कोर्स की शुरुआत 23 जनवरी को ऑनलाइन की गई। उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए बीए प्रोग्राम समिति के संयोजक डॉ कृष्ण गोपाल त्यागी ने कहा कि इस कोर्स की आज के दौर में अत्यधिक आवश्यकता है।

वेबसाइट निर्माण के कौशल को सीख कर छात्र कॉर्पोरेट दुनिया में अपनी पहचान बना सकते हैं। इस कोर्स की संयोजक नूपुर त्यागी थीं। नूपुर त्यागी ने छात्रों को कोर्स के बारे में बताया कि यह कोर्स सात भागों में बंटा हुआ है, जिसमें एचटीएमएल, सीएसएस और जावास्क्रिप्ट जैसे कई सॉफ्टवेयर सिखाए गये। 30 घंटों के इस कोर्स की क्लास हर शनिवार को हुई। कोर्स में रामलाल आनंद महाविद्यालय के छात्रों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। शिक्षा को मद्देनजर रखते हुए इस कोर्स को निशुल्क रखा गया था। कोर्स की समाप्ति 27 मार्च को हुई।

अनुवाद में रोजगार के अवसर

पुष्पेंद्र

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के रामलाल आनंद महाविद्यालय एवं भारतीय अनुवाद परिषद के तत्वावधान में अनुवाद प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम की शुरुआत 23 जनवरी 2021 को हुई। यह पाठ्यक्रम 30 घंटे की अवधि का था। इस पाठ्यक्रम के संरक्षक प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता एवं इसकी संयोजक हिंदी विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. नीलम ऋषिकल्प थीं।

आज अनुवाद का महत्व बहुत बढ़ गया है। आज विश्व भर में अनुवाद की आवश्यकता जीवन के हर क्षेत्र में किसी न किसी रूप में अवश्य महसूस की जा रही है। इस पाठ्यक्रम में सभी विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करने के लिए भारतीय अनुवाद परिषद् के प्रोफेसर डॉ. पूरन चंद टंडन को बुलाया गया था। उन्होंने बताया कि आज मीडिया जगत में भी अनुवाद का बहुत महत्व बढ़ गया है।

कार्यशाला में दिखी मिथिला की कहानियां

प्रतिभागियों ने लोककथाओं पर आधारित कलाकृतियों को बनाना सीखा

प्रीति

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय की स्पिक मैके सोसायटी ने मधुबनी पेंटिंग की कार्यशाला आयोजित की। वास्तुकार और मैथिली चित्रकार मनीषा झा इस कार्यशाला की मुख्य अतिथि रहीं। इस तीन दिवसीय कार्यशाला की शुरुआत 25 फरवरी को हुई।

कार्यशाला की शुरुआत स्पिक मैके के शिल्प अधिकारी नीरजा सरीन ने की। उन्होंने प्रतिभागियों को अपने काम के बारे में समझाते हुए मनीषा झा का परिचय करवाया। साथ ही प्रतिभागियों को मैथिली पेंटिंग और इसमें व्यवसाय के अवसरों के बारे में अवगत करवाया।

मनीषा झा ने प्रतिभागियों को मैथिली भरनी अंदाज में मछली बनाना सिखाया। प्रतिभागियों को

प्रसिद्ध मधुबनी कलाकर मनीषा झा।

प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल भी बताया। मनीषा झा ने सूर्य देव और देवी काली की विशेषता का वर्णन किया। उन्होंने देवी काली और राक्षस रक्तबीज की कथा का वर्णन किया। इन कहानियों से सत्र और भी रोचक हो गया। प्रतिभागियों ने कार्यक्रम में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। उन्होंने मैथिली पेंटिंग के तीसरे प्रकार को बताते हुए गोइदाना स्टाइल को भी समझाया। मनीषा झा ने गोइदाना स्टाइल के बारे में बताया कि वो मोर के आकार में बनता है। उन्होंने कहानियों के जरिए मैथिली कला की कई कलाकृतियों का परिचय दिया। इसमें धार्मिक विषयों के साथ–साथ सामाजिक विषयों पर आधारित कलाकृतियां भी शामिल रही।

मनीष झा ने कार्यशाला के अंत में प्रतिभागियों को मधुबनी कला को प्रचारित– प्रसारित करने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि वह भी अन्य कलाकारों को देख कर ही प्रेरित हुई थी, इस क्रम को आगे बढ़ाना हम सभी का कर्तव्य होना चाहिए।

मधुबनी पेंटिंग कार्यशाला में लगभग 70 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। स्पिक मैके सोसाइटी की संयोजक उर्वशी कुहाड़ ने कार्यशाला की प्रशिक्षक मनीषा झा का धन्यवाद ज्ञापन किया। साथ ही विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ाया।

सौरभ ने बताया, पत्रकारिता कैसे करें

शिल्पी

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय में 22 सितंबर 2020 को प्लेसमेंट और करियर काउंसिलिंग सोसाइटी की ओर से 'करियर इन मीडिया' विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में पत्रकारिता जगत की जानी–मानी हस्ती और द लल्लनटॉप के फाउंडर संपादक सौरभ द्विवेदी आए। कार्यक्रम का संचालन सीमा गुप्ता और डॉ. दिनकर सिंह द्वारा किया गया। वेबिनार की शुरुआत डॉ. दिनकर सिंह ने मुख्य अतिथि के स्वागत के साथ की। वेबिनार में सौरभ द्विवेदी ने

सौरभ द्विवेदी

पत्रकारिता की मांग

1. अनुवाद की अच्छी जानकारी होनी चाहिए
2. हिंदी और इंग्लिश टाइपिंग की अनिवार्यता
3. आप जो भी पढ़िए उसकी पूरी मुकम्मल जानकारी रखिए

विद्यार्थियों को पत्रकारिता जगत की बारीकियों के बारे में बताया। उन्होंने कहा पत्रकारिता जगत में रोजगार पाने के लिए विद्यार्थियों को अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषाओं का ज्ञान होना जरूरी है। आप जो भी पढ़ें उसकी सारी जानकारी रखें। अगर आप साहित्य की फील्ड में नाम कमाना चाहते हैं तो आपको साहित्य के बारे में हर छोटी से बड़ी जानकारी होनी चाहिए। सौरभ ने बताया कि ट्रांसलेशन विद्यार्थियों के लिए पत्रकारिता जगत में सफल होने के लिए बहुत मददगार साबित होता है। सेमिनार का समापन विद्यार्थियों के प्रश्न और सौरभ द्विवेदी के जवाबों के साथ हुआ।

ऑनलाइन रंगमंच पर दिखा छात्रों का उत्साह

श्रुति गोयल

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय की हसरतें (नाट्य कला) सोसायटी द्वारा 2 से 4 अक्टूबर तक एक तीन दिवसीय अंतर कॉलेज रंगमंच कार्यशाला का ऑनलाइन आयोजन किया गया। अवतार साहनी और विपिन कुमार कार्यशाला के परामर्शदाता थे। कार्यशाला का आयोजन सोसायटी की अध्यक्ष रागिनी सक्सेना और संयोजक डॉ. वंदना गंडोत्रा के नेतृत्व में हुआ। प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता एवं अन्य शिक्षक सदस्यों के साथ दीपशिखा कुमारी, डॉ. प्रभाष पांडे और डॉ. सुधा चौधरी भी इस पूरे कार्यक्रम में जुड़े रहे।

इस तीन दिवसीय कार्यशाला में न केवल रामलाल आनंद महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने भाग लिया बल्कि आर्यभट्ट कॉलेज, हिंदू कॉलेज, पीजीडीएवी कॉलेज, स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज, डीपीएसआर, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, जयपुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय आदि अन्य महाविद्यालयों के भी बहुत से प्रतिभागियों ने भाग लिया।

सभी प्रतिभागियों ने अद्भुत विचारों से कार्यशाला को मजेदार और परस्पर संवादात्मक बनाने में सहयोग दिया। प्रतिभागियों ने प्रत्येक सत्र के 12 घंटे के भीतर

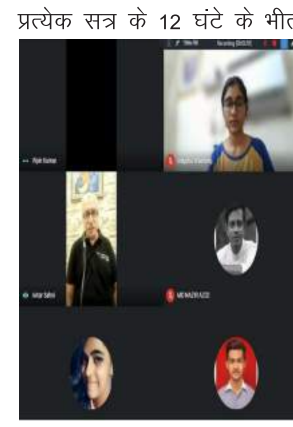

चर्चा करते अवतार साहनी।

आयोजकों और सलाहकारों को अपना कार्य भेजा, जिसके बाद में अवतार साहनी और विपिन कुमार द्वारा उसकी समीक्षा की गई। यह कार्यक्रम बेहद सफल और लाभदायी रहा। उन सभी छात्रों के लिए जो आगे चलकर नाटक या फिल्मों में अपना करियर बनाना चाहते हैं। इस आयोजन के लिए 146 प्रतिभागियों ने इसमें अपना पंजीकरण कराया। जिसमें से 59 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से कार्यशाला में तीनों दिन भाग लिया। कार्यशाला का आयोजन गूगल मीट पर किया गया। यह कार्यक्रम सफल और लाभदायी रहा।

फेक न्यूज चेक करने का तरीका सीखा

विशेषज्ञ गीतिका वशिष्ठ ने फेक न्यूज के प्रति विद्यार्थियों को किया प्रशिक्षित

रक्षा रावत

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग ने फेक न्यूज पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। यह आयोजन 19 दिसंबर 2020 को 12 से 2 बजे तक चला। पत्रकारिता सहित महाविद्यालय के सभी विभागों के विद्यार्थियों ने इसमें काफी बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। इस आयोजन की मुख्य अध्यक्ष गीतिका वशिष्ठ थीं, जो फैक्टशाला के लिये एक ट्रेनर एवं मीडिया शिक्षक के रूप में कार्य कर रही हैं।

यह कार्यशाला फैक्टशाला मीडिया लिटरेसी एवं डेटा लीडस् के संयुक्त प्रयास के कारण संपन्न हो पाई। गीतिका वशिष्ठ ने छात्रों से फेक न्यूज के विषय पर चर्चा की और बताया कि समाज में इसका क्या प्रभाव है, तथा यह कितनी गति से आगे बढ़ रही है। उन्होंने फेक न्यूज के दूरगामी परिणामों के विषय में छात्रों को सूचित किया तथा इसके महत्व को विस्तार में छात्रो के समक्ष रेखांकित किया।

उन्होंने बच्चों से कुछ प्रश्न भी किए जो खबर की सच्चाई को

फैक्ट चेकिंग

1. रिवर्स गूगल सर्च की मदद
2. वीडियो के हर फ्रेम देखना
3. कीवर्ड गूगल सर्च करना
4. फैक्ट चेक वेबसाइट की मदद लेना...

पकड़ने के क्रम में मददगार साबित हो सकते हैं। अलावा इसके उन्होंने बच्चों के साथ कुछ आनलाइन गतिविधियों का आयोजन किया। विभागाध्यक्ष डॉ. राकेश कुमार ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कार्यशाला का अंत किया।

डॉ. अनिल कुमार के साथ यूनियन बजट पर चर्चा

गुंजन

नई दिल्ली। यूनियन बजट पर चर्चा के लिए रामलाल आनंद महाविद्यालय की बीए प्रोग्राम सोसायटी और इकोनॉमिक्स विभाग ने 11 फरवरी को एक वेबिनार का आयोजन किया। चर्चा के लिए श्रीराम कालेज ऑफ कॉमर्स के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. अनिल कुमार को आमंत्रित किया गया। उन्होंने इस बजट का प्रभाव समाज के अलग क्षेत्रों पर कैसा रहेगा, इसके बारे में भी बताया।

एनसीसी कैडेट उज्ज्वल शर्मा को मिला प्रथम स्थान

एनसीसी के कैडेट्स को लाल किले पर ध्वजारोहण समारोह का हिस्सा बनने का अवसर मिला

मंटू

नई दिल्ली। महाविद्यालय में 20 अगस्त को एक भारत श्रेष्ठ भारत कैंप का आयोजन किया गया, जिसमें जेयूओ उज्ज्वल शर्मा ने आंध्र प्रदेश और तेलंगाना निदेशालय और दिल्ली निदेशालय के बीच ऑनलाइन 'एक भारत श्रेष्ठ भारत शिविर' में भाग लिया। इसमें उज्ज्वल शर्मा को प्रथम पुरस्कार भी मिला।

27 अगस्त को एसयूओ ऋतिक सिंह और जेयूओ राहुल आनंद ने रक्षामंत्री राजनाथ सिंह द्वारा डीजी एनसीसी प्रशिक्षण ऐप लॉन्च समारोह में भाग लिया। 18 अक्टूबर को आरएलए एनसीसी ने "राष्ट्रीय एकता में एनसीसी की भूमिका" पर एक ऑनलाइन राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया, जिसमें सेना के बड़े–बड़े अधिकारी लेफ्टिनेंट जनरल सतीश दुआ, एल. मार्शल नरेश वर्मा, मेजर जनरल विक्रम डोगरा, मेजर जनरल दीलावर सिंह, कर्नल सोनम वांग्चुक, कर्नल अनूप अवस्थी व इस आयोजन से कुल 700 दर्शक जुड़े थे। 12 नवंबर को कैडेट्स ने यातायात जागरूकता सप्ताह मनाया। जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से पोस्टर और बैनर के साथ कॉलेज के पास विभिन्न यातायात संकेतों के बारे में बताया। 18 दिसंबर को संविधान दिवस वीडियो मेकिंग

कैडेट उज्ज्वल शर्मा

प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए श्री राजनाथ सिंह (माननीय रक्षा मंत्री) द्वारा सीडीटी चिराग शर्मा की सराहना की गई। 1 दिसंबर को एनसीसी ग्रुप–सी मुख्यालय सफदरजंग में एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया था। सीडीटी शिवा शर्मा ने रक्तदान के लिए स्वेच्छा से सहयोग किया। 8 दिसंबर को आरएलए के कैडेटों ने अपने इलाके की सफाई के लिए स्वेच्छा से काम किया और आसपास के क्षेत्रों में स्वच्छता को बढ़ावा दिया। उन्होंने जागरूकता फैलाने के लिए पोस्टर बनाए व स्वच्छता का महत्व बताया। 11 जनवरी 2021 को एनसीसी का परीक्षण सत्र 2020–21 के लिए कॉलेज में ऑफलाइन आयोजित किया गया था, जिसमें एसोसिएट एनसीसी अधिकारी कैप्टन डॉ. संजय कुमार शर्मा व पीएस टफ की उपस्थिति में परीक्षण बौद्धिक लिखित और साक्षात्कार के तीन स्तर शामिल थे। राजपथ सैनिटाइजेशन अभियान में 18 जनवरी से 31 जनवरी तक इस शिविर में भाग लेने वाले कैडेट्स ने स्वास्थ्य के बारे में नुक्कड़ नाटक, कविता व स्लोगन के माध्यम से जागरूकता बढ़ाई।

25 जनवरी को एनसीसी ने शिक्षण और गैर शिक्षण कर्मचारियों के साथ गणतंत्र दिवस मनाया। ध्वजारोहण समारोह प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता व कैप्टन डॉ. संजय कुमार शर्मा के द्वारा किया गया। 3 फरवरी से 8 फरवरी तक बी और सी सर्टिफिकेट परीक्षा के लिए 7 डीबीएन यूनिट द्वारा सीएटीसी कैंप का आयोजन किया गया था। शिविर में आरएलए के सभी कैडेट्स ने हिस्सा लिया।

रामलाल आनंद महाविद्यालय के एनसीसी कैडेट्स ने बढ़ाया महाविद्यालय का मान।

आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं महिलाएं

'अपनी लक्ष्मी' वेबिनार ने विद्यार्थियों को किया वित्तीय रूप से स्वतंत्र और जागरुक

निक्की, भूमि

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय की महिला कल्याण सलाहकार समिति की ओर से लोगो बनाने की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अक्तूबर 2020 में यह प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें सभी विद्यार्थियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। सभी विद्यार्थियों ने अपने रचनात्मकता और कलात्मक कौशल का प्रदर्शन किया।

वेबिनार में विद्यार्थी और शिक्षक।

समिति ने 10 अक्टूबर 2020 को विजेता का नाम घोषित किया। इस प्रतियोगिता की विजेता बीए हिस्ट्री ऑनर्स दूसरी वर्ष की अनिशा कुमारी रहीं। कार्यक्रम को सभी विद्यार्थियों ने बहुत पसंद किया। समिति ने आश्वासन दिया कि ऐसी प्रतियोगिता हर वर्ष रखी जाएगी तथा जागरूकता अभियान ऐसे ही चलता रहेगा। महिला कल्याण सलाहकार समिति का काम लड़कियों को उनके अधिकारों और सामाजिक मुद्दों से अवगत करवाना है। जागरुकता की इस कड़ी में समिति ने एक वेबिनार का आयोजन भी किया। महामारी की बाधाओं के कारण वेबिनार का आयोजन जूम एप पर 8 मार्च 2021 में किया गया। इस वेबिनार में वित्तीय स्वतंत्रता के संदर्भ में बच्चों को साक्षर किया गया। साक्षारता कार्यक्रम का नेतृत्व शिखा मित्तल ने किया। उन्होंने विद्यार्थियों को वित्तीय साक्षरता, वित्तीय बचत, वित्तीय स्वतंत्रता और वित्तीय बीमा के बारे में शिक्षित किया।

सत्र के अंत तक सभी विद्यार्थियों को आर्थिक सुरक्षा का महत्व समझ आ गया। साथ ही विद्यार्थियों ने जाना कि अपने वित्तीय संसाधनों का उपयोग कैसे करना है। इस वेबिनार में विद्यार्थियों ने प्रभावी निर्णय लेने के गुण भी सीखे। यह वेबिनार उनके आर्थिक सशक्तिकरण की नींव रखने में एक अहम भूमिका निभाएगा।

प्राचीन नाटकों से अवगत हुए छात्र

शिवशंकर

नई दिल्ली। रामलाल आनंद कॉलेज की अंग्रेजी साहित्यिक सोसायटी यू–बिक्विटस द्वारा 8 और 9 फरवरी को प्राचीन भारतीय नाटक और रास थ्योरी के सिद्धांतों पर दो दिवसीय वेबिनार आयोजित किया गया।

दिल्ली विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर वोकेशनल स्टडीज में पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर भरत गुप्त कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे। प्रोफेसर गुप्त ने यूरोपीय और भारतीय नाटक में अपने ज्ञान के साथ–साथ अपनी संरचना से दर्शकों को मंत्र मुग्ध कर दिया। रास और प्राचीन नाटक के बारे में चर्चा करते हुए उन्होंने वेबिनार का ध्यान अपनी ओर खींचा। दो दिवसीय कार्यक्रम 200 से अधिक प्रतिभागियों को आकर्षित करने में कामयाब रहा। सत्र के बाद दर्शकों ने सक्रिय रूप से चर्चा में भाग लिया, जिससे यह कार्यक्रम और भी आकर्षक हो गया। इसके बाद एक प्रश्न और उत्तर का दौर था, जहां प्रोफेसर भरत गुप्ता ने सभी प्रश्नों का उत्तर दिया।

सभी प्रतिभागियों को ई–प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। इस आयोजन का सफल संचालन इंग्लिश लिटरेरी सोसाइटी की संयोजक डॉ. प्रेरणा मल्होत्रा, समन्वयक डॉ. ऋतंभरा मिश्रा और सोसाइटी के अन्य सदस्यों के कारण हो सका।

प्रतियोगियों ने अभिव्यक्ति को शब्दों में पिरोया

ग्रेसी अरोड़ा

नई दिल्ली। रामलाल आनंद महाविद्यालय की रचनात्मक लेखन सोसाइटी अभिव्यक्ति ने रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया।

30 जनवरी को आयोजित इस प्रतियोगिता में अनेक महाविद्यालयों के 80 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। प्रतियोगिता को ऑनलाइन माध्यम पर आयोजित किया गया। लेखन प्रतियोगिता के पहले दौर में दो लघु वीडियो दिखाए गए। प्रतिभागियों को दो वीडियो में से किसी एक के वीडियो आधार पर 500–600 शब्दों का एक लेख लिखना था। लेखकों को अपनी रचनाएं लिखने के लिए लगभग डेढ़ घंटे का समय दिया गया था। पहले दौर के परिणाम दोपहर में लगभग 4 बजे घोषित किए गए। दूसरे दौर में प्रतियोगियों को अपने लेख का वर्णन करने के लिए कहा गया, जिससे उनके कौशल और अभिव्यक्ति करने की क्षमता का अंदाजा लगाया जा सके। प्रतिभागियों ने कई रोचक रचनाएं प्रस्तुत कीं।

दूसरे राउंड की समाप्ति के बाद दो विजेताओं के नाम घोषित किए गए। हिंदी और अंग्रेजी दोनो भाषाओं में विजेताओं का पृथक चुनाव हुआ और उन्हें नकद पुरस्कार और ई–प्रमाण पत्र भी दिए गए। अंग्रेजी का प्रथम पुरस्कार रिशिका कश्यप और द्वितीय पुरस्कार सोमी सेंघल ने जीता। हिंदी में शुधांशू मिश्रा प्रथम, जबकि आयुश कुमार पाल द्वितीय पुरस्कार के विजेता बने। प्रतिभागियों ने प्रतियोगिता के सुचारू संचालन में आयोजकों द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की।

किताबों तक सीमित नहीं पत्रकारिता

मीडिया प्रोडक्शन के लिए एडिटिंग सॉफ्टवेयर कोर्स का आयोजन

शिवानी मिश्रा

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के राम लाल आनंद महाविद्यालय में हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग द्वारा एडिटिंग सॉफ्टवेयर कोर्स की सफल कार्यशाला का आयोजन हुआ। यह कार्यशाला गूगल मीट पर 20 जनवरी से 20 फरवरी 2021 तक चली। कार्यशाला के संरक्षक प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता, प्रभारी डॉ. सुभाष चंद्र डबास, संयोजक डॉ. राकेश कुमार, व पाठ्यक्रम सह–समन्वयक डॉ. प्रदीप कुमार रहे। इसके अतिरिक्त छात्र समन्वयक के रूप में विकास त्रिपाठी (द्वितीय वर्ष), गीतू कत्याल (द्वितीय वर्ष) व प्रथम वर्ष से समीरा और रक्षा रावत मौजूद रहीं।

आज के समय में मीडिया उद्योग में किताबी ज्ञान के साथ ही साफ्टवेयर का उपयोग करना आना भी जरूरी है। इसी धारणा के साथ प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता ने इस कार्यशाला का उद्घाटन किया। पांच मुख्य सॉफ्टवेयर के तौर पर एडोब प्रीमियर प्रो, कोरल ड्रॉ, एडोब फोटोशॉप, क्वार्क एक्सप्रेस और एडोब ऑडिशन को रखा गया। सॉफ्टवेयर्स का प्रशिक्षण संदीप संजू तिलवारी, दीपक त्रिवेदी, असमा बानो और डॉ. अटल तिवारी ने दिया। प्रशिक्षकों द्वारा सॉफ्टवेयर की बारीकियां छात्रों को अच्छी तरह समझायी गईं व साथ ही उनकी समस्याओं का भी समाधान कराया गया। सभी विद्यार्थियों के कोर्स पूरा करने पर एक आयोजन किया गया, जिसमें प्रमाण पत्र देकर कार्यशाला का समापन हुआ।

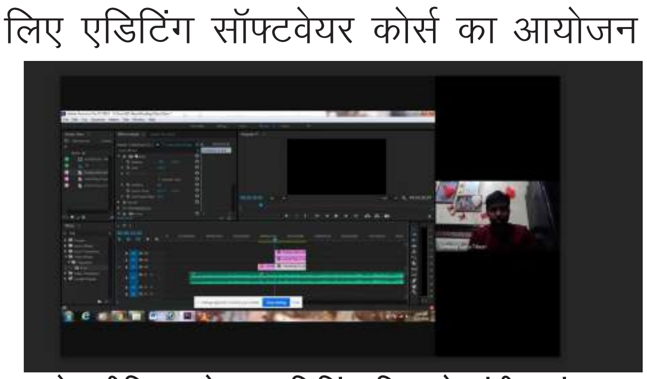

एडोब प्रीमियर प्रो पर एडिटिंग सिखाते संदीप संजू।

विद्यार्थियों ने समझा शेयर बाजार का दांव–पेंच

'मैं आपको बताऊंगा कि अमीर कैसे बनें'

सुमित

नई दिल्ली। राम लाल आनंद कॉलेज की कामर्स सोसाइटी 'क–चिंग' ने सत्र का पहला आयोजन 'स्टॉकओक्लॉक' के रूप में किया। यह कार्यक्रम 8 फरवरी को ऑनलाइन आयोजित किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष हर्ष गोयल, हर्ष गोयल स्कूल ऑफ फाइनेंस के सह–संस्थापक, शेयर बाजार प्रशिक्षक और निवेशक हैं।

इस कार्यक्रम का शुभारंभ कॉमर्स विभाग की प्रमुख डॉ. नूपुर साबू ने किया। कार्यक्रम को शेयर बाजार के बारे में जगरुकता फैलाने के लिए आयोजित किया गया। हर्ष गोयल ने छात्रों से शेयर बाजार को लेकर बातचीत की। विद्यार्थियों को शेयर बाजार के नफा नुकसान से रूबरू किया। कार्यक्रम की संयोजक मिशा सबरीन ने भी अपने विचार रखे। उम्मीद है कि अब छात्र शेयर बाजार की महत्वपूर्ण बातों को समझ पाएंगे। इसमें विभिन्न कॉलेज के 130 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया था। हालांकि कोविड–19 महामारी की स्थिति को देखते हुए यह कार्यक्रम वर्चुअल ही रखा गया था, वर्चुअल कार्यक्रम होने के बावजूद 130 छात्रों का हिस्सा लेना बड़ी सफलता माना जा सकता है।

आरएलए समाचार संरक्षक मंडल

प्राचार्य
डॉ. राकेश कुमार गुप्ता

विभागाध्यक्ष
डॉ. सुभाष चंद्र डबास

संयोजक
डॉ. राकेश कुमार

परामर्शदाता
डॉ. अटल तिवारी

संपादक
अभिषेक कुमार उपाध्याय

संपादकीय सहयोग
विकास त्रिपाठी
चेतना काला
शिल्पी कुमारी
शिवानी मिश्रा

RAM LAL ANAND COLLEGE
UNIVERSITY OF DELHI

जनवरी–जून 2020

संभव

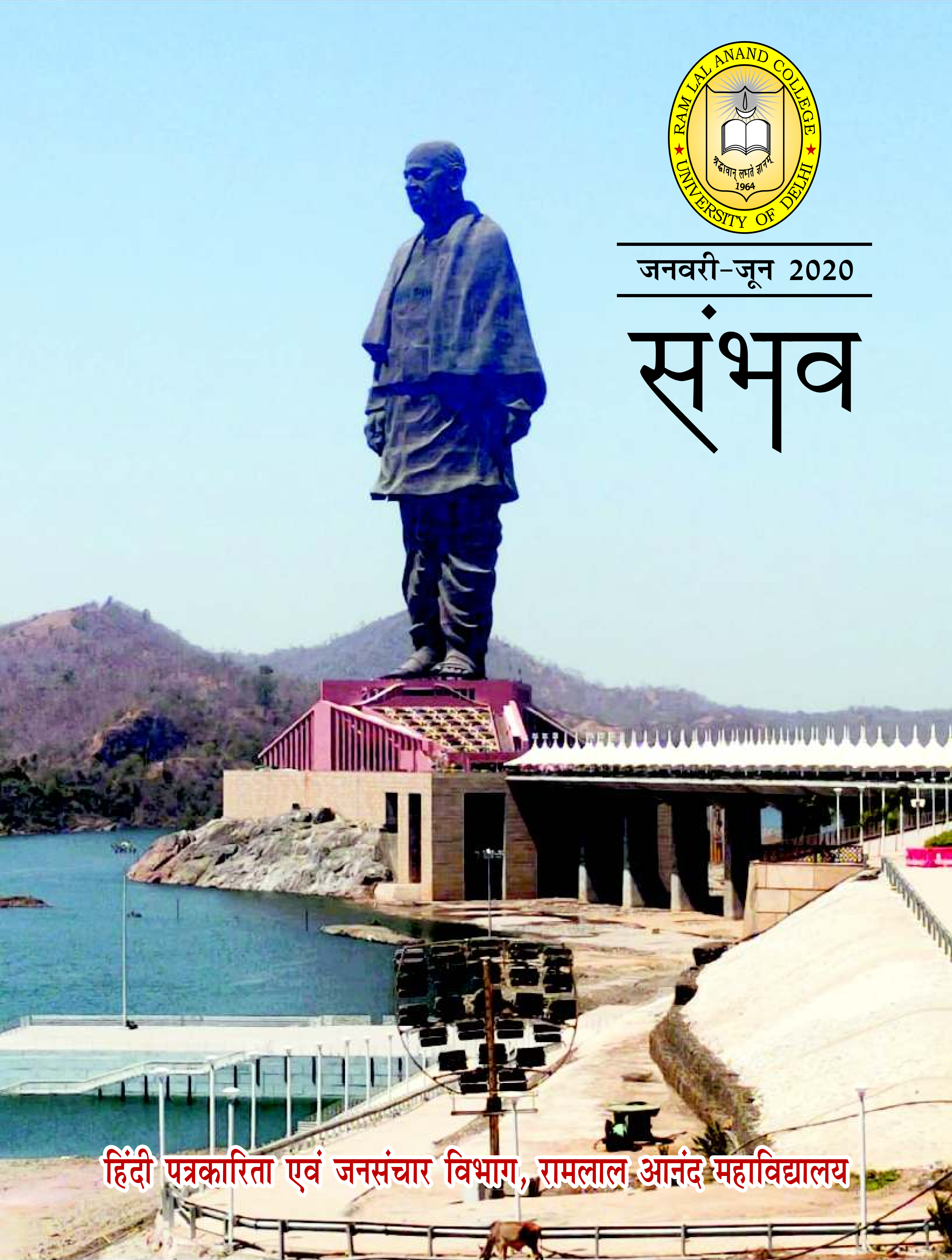

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, रामलाल आनंद महाविद्यालय

जो सिखाया आपने

प्रियंका

रोशनी बनकर आए हमारी जिंदगी में
अंधेरा सारा दूर किया
सही-गलत की राह दिखाकर
जीवन में चमत्कार किया
मां-बाप ने तो सिर्फ जन्म दिया
और कॉपी-कलम पकड़ाई थी
शिक्षक ने जीने के सारे सबक सिखलाए
गिनतियों को गिन-गिनकर
बड़ा से बड़ा सवाल हल करवाया
शांति-अहिंसा और ज्ञान का
हम सबको पाठ-पढ़ाया
बिना धर्म की कलम से
जीवन के मूल आदर्शों पर चलना सिखाया
किसी को आसमान में उड़ना
तो किसी को तैरना बताया
शिक्षक ने ही हमें विद्यार्थी बनने से पहले
आदर्शवादी इंसान बनाया
नमन है आप सभी गुरुओं को
जिन्हें भगवान ने हमारे लिए बनाया।

अनुक्रमणिका

संपादकीय

विकल्प का मीडिया और मीडिया का विकल्प	**राकेश कुमार**	1

लेख

भारतीय विदेश नीति का रूपांतरण	**धनंजय कुमार**	2
कोविड-19 के दौरान वैश्विक राजनीति की झलक	**विकास त्रिपाठी**	4
उत्तराखंड : वो, पलायन और पहाड़	**पारसमणि**	6
आईपीएल : रोमांच के बीच विवादों का साया	**अभिषेक कुमार उपाध्याय**	8
जलवायु परिवर्तन बन गया चुनौती	**पुष्पेंद्र**	10
देश में शिक्षा की लौ जलाने वाली सावित्रीबाई फुले	**चेतना काला**	12
गजल से मोहब्बत का पैगाम देने वाली बेगम अख्तर	**भारती**	13
उम्मीद की नई किरण है सौर ऊर्जा	**आरती**	15
सरकारों के साथ व्यक्तिगत प्रयास करने होंगे	**श्रुति गोयल**	16
संचार का सशक्त माध्यम है फोटो पत्रकारिता	**आशीष**	18
फैशन इंडस्ट्री का महिलाओं पर बढ़ता दबाव	**लीशा**	19
कोरोना वायरस : खोज से लेकर अब तक का सफर	**मानसी बिष्ट**	20
अर्थव्यवस्था हुई कोरोना पॉजिटिव	**गीतू कत्याल**	21
एर्दोआन का शासन और तुर्की की राजनीति	**दीपक कुमार त्रिवेदी**	23

सैर-सपाटा

शैक्षिक यात्रा में गांधीजी को जानना	**सचिन चौहान**	25
आंख झपकी...खुली तो लगा उदयपुर पहुंच गए	**प्रज्ञा सैनी**	27
रूठ न जाना, मैं जो कहूं तो	**विद्या शर्मा**	29

कविता

जो सिखाया आपने	**प्रियंका**	फ्रंट इनर
मैं हो चुका अब खाली हूं	**जुनैद कादरी**	बैक पृष्ठ

संभव

वर्ष : 14 अंक : 1

पूर्णांक–16

जनवरी–जून 2020

जून 2020 में प्रकाशित

संरक्षक मंडल

प्राचार्य

डॉ. राकेश कुमार गुप्ता

प्रभारी

डॉ. नीलम ऋषिकल्प

संपादक मंडल

संपादक

डॉ. राकेश कुमार

डॉ. अटल तिवारी

छात्र संपादक

दीपक कुमार त्रिवेदी

उप-संपादक

धनंजय कुमार, चेतना काला

फोटो

डॉ. अटल तिवारी,

दीपक कुमार त्रिवेदी और इंटरनेट

संपादकीय पता :

हिंदी, हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

रामलाल आनंद महाविद्यालय,

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

बेनितो जुआरेज़ मार्ग, नई दिल्ली–110021

दूरभाष: 011-24112557

ईमेल : sambhavrla@gmail.com

स्वामी-प्रकाशक-मुद्रक

डॉ. राकेश कुमार गुप्ता

द्वारा बेनितो जुआरेज मार्ग

नई दिल्ली–110021 से प्रकाशित

और **यशस्वी प्रिंटर्स,** जी–2/122,

द्वितीय तल, सेक्टर-16, दिल्ली–110089

से मुद्रित

'संभव' में प्रकाशित रचनाओं के विचार लेखकों के अपने हैं, उनसे संपादक मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

संपादकीय

विकल्प का मीडिया और मीडिया का विकल्प

भूमंडलीकरण और संचार क्रांति ने दुनिया को एक दूसरे के साथ इस प्रकार जोड़ दिया है कि आज दुनिया की किसी भी घटना को स्थानीय नहीं माना जा सकता। भूमंडलीकरण ने पूरी दुनिया को एक बड़े बाज़ार में तब्दील कर दिया था। इसका परिणाम यह हुआ कि पूंजी, वस्तुएं, सेवाएं और व्यक्ति एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने लगे। आवागमन का यह दौर बेहद तेज़ और पेचीदा था। इस तेज़ी को बढ़ाया संचार क्रांति ने। ऐसा लगा कि जैसे पूरी दुनिया हमारी मुट्ठी में आ गई है।

भूमंडलीकरण के पैरोकारों ने दुनिया भर को यह सपना बेचा था कि दुनिया अब बराबर हो जाएगी। सभी देश एक दूसरे की मदद से समृद्धि और खुशहाली के रास्ते पर साथ-साथ आगे बढ़ेंगे, यही बात संचार क्रांति के विषय में भी कही जाती है। परंतु जैसे कवि मुक्तिबोध ने कहा था कि–''कविता में कहने की आदत नहीं पर कह दूं कि वर्तमान समाज चल नहीं सकता, पूंजी से जुड़ा हृदय बदल नहीं सकता।'' तो कुछ ऐसा ही घटित हुआ। वास्तव में न तो भूमंडलीकरण के आने से पूंजी और संसाधनों का एक समान वितरण हुआ और न ही संचार क्रांति ने जनमाध्यमों के लोकतांत्रिकरण को मज़बूत किया।

आज पूंजी का केंद्रीकरण हुआ है तो संचार माध्यम भी कुछ बड़े कॉरपोरेट घरानों के हाथों में केंद्रित हो चुका है। आज ज़रूरत यह है कि पूंजी और मीडिया के गठजोड़ को तोड़ा जाए और एक जनवादी मीडिया का निर्माण किया जाए। हालांकि यह भी साफ है मीडिया और पूंजी का यह गठजोड़ तोड़ना इतना आसान न होगा पर इसके दुष्परिणामों को देखकर सचेत अवश्य हुआ जा सकता।

पिछले दिनों दुनिया भर को एक ऐसे वायरस ने अपना कैदी बना लिया जिसको मात्र एक चम्मच में भरा जा सकता है। दुनिया भर के देशों को इस चुनौती का सामना मिलकर करना होगा। आज नागरिकों का यह कर्तव्य है कि समाज के हित में कोविड 19 से लड़ने के लिए तैयार रहें। सभी को संभव का यह अंक इस विषय पर जानकारी और सलाह भी देता है। मुझे लगता है कि आप सभी को यह अंक अच्छा लगेगा।

डॉ. राकेश कुमार

संयोजक, हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार

भारतीय विदेश नीति का रूपांतरण

• धनंजय कुमार

15 अगस्त 1947 की आधी रात को पंडित जवाहर लाल नेहरू के शब्दों के साथ भारत का नया सूर्योदय हुआ। 200 वर्षों की परितंत्रता के बाद इतिहास में वो समय आया जब ब्रिटिश इंडिया के माथे से ब्रिटिश शब्द हटा और रह गया अकेला इंडिया। जब किसी लक्ष्य का इंतजार कई पीढ़ियों तक बस इंतजार रह जाए तब लक्ष्य स्वप्न सा लगने लगता है। आधी रात को नेहरू के शब्दों के साथ ये स्वप्न साकार हुआ। भारत एक त्रासदी युग समाप्त करके स्वतंत्र युग में प्रवेश कर रहा था। ये स्वतंत्रता मुक्त बिल्कुल नहीं थी, इसकी बहुत बड़ी कीमत विभाजन के रूप में चुकानी पड़ी। भारत अब आजाद पंछी की तरह आसमान में उड़ना चाहता था। चिंता यह थी कि इस पंछी के लिए ये आसमान कितना साफ था। सच्चाई यह थी कि अभी इस पंछी के पर निकलने शुरू ही हुए थे, उड़ान भरने में अभी वक्त लगना था। इसी उड़ान की गति को नियंत्रित करने का जिम्मा विदेश नीति के कंधों पर था।

दोहरी चुनौती और भारत की नीति : 1947 से लेकर 21वीं सदी के दूसरे दशक तक भारत की यात्रा चुनौतियों और बाधाओं से सजी पड़ी थी। आजादी के स्वाद को फीका करने के लिए दो मोर्चों पर चुनौतियां सुनहरे सपनों के साथ युद्ध लड़ रही थीं। पहली चुनौती वैश्विक राजनीतिक घटनाक्रम, जो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पल-पल बदल रहा था। दूसरी चुनौती भारत की अपनी थी, जिसमें गरीबी, शिक्षा, आर्थिक बदहाली आदि से पार पाना था। पूंजीवाद और साम्यवाद के सिद्धांतों ने पूरे विश्व को दो खेमों में विभाजित कर डाला था। भारत के लिए यही बड़ी चुनौती थी। जिस देश ने अभी अपने पैरों पर सही से खड़ा होना भी नहीं सीखा था, दो विचारधाराएं उसके कंधों पर लदने को तैयार खड़ी थीं। भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू वैश्विक राजनीति की गहरी समझ रखते थे। नेहरू ने इस समस्या का हल इसमें ढूंढा कि भारत किसी एक तरफ नहीं झुकेगा। भारत के लिए एक तरफ झुकने का आशय था, अपने विकास के दूसरे दरवाजे बंद कर लेना। भारत को बिना शर्त के वैश्विक सहयोग की आवश्यकता थी। इसमें अमेरिका भी उतना ही महत्वपूर्ण था जितना कि रूस। भारत को एक ऐसी विदेश नीति की जरूरत थी जो घरेलू परिवर्तन और विकास में सहायक हो सके। यही विदेश नीति का अघोषित उद्देश्य भी है।

हालात-ए-आजादी : जिस हालत में अंग्रेज इस देश को छोड़कर गए थे, भारत उन परिस्थितियों को कभी नहीं भुला सकता। ब्रिटिश आर्थिक इतिहासकार अंगस मैडीसन के अनुसार 1820 में अकेले भारत की जीडीपी विश्व जीडीपी का 23 प्रतिशत थी। 1947 तक आते-आते भारत विश्व के गरीब, अशिक्षित और पिछड़े राष्ट्रों में शामिल हो गया। 1900 से 1947 तक भारत की विकास दर 1 प्रतिशत के भी नीचे रही, जबकि इसी दौरान आबादी 3.5 प्रतिशत की दर से बढ़ी। अंग्रेजी हुकूमत ने देश को मात्र 16 फीसदी साक्षरता के साथ छोड़ा था। कोई बड़ा घरेलू उद्योग भी नहीं था। 90 प्रतिशत जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे थी। भारत की दरिद्रता एक कठोर सत्य था।

ऐसे में स्वाभाविक था कि वैश्विक नीति में घरेलू विकास को महत्व दिया जाए। यहीं से भारत ने गुटनिरपेक्ष रहने का फैसला लिया। हमने इस चीज को हमेशा से स्पष्ट रखा कि गुटनिरपेक्ष रहने का अर्थ निष्क्रिय रहना नहीं था। भारत ने हमेशा से वैश्विक मामलों में अपनी समझ रखी है और

वैश्विक शांति के लिए किसी के समर्थन से कभी परहेज नहीं किया। यहां गुटनिरपेक्षता का अर्थ यह है कि भारत दो राष्ट्रों या गुटों के झगड़े में सम्मिलित नहीं होगा। लेकिन भारत की गुटनिरपेक्षता का दामन जितना साफ लगता है, उतना है नहीं। इस पर शुरू से सोवियत खेमे की तरफ झुकाव का आरोप लगता रहा। अमेरिका ने इसी कड़ी में भारत में सार्वजनिक क्षेत्र के दो उद्यम, भिलाई और बोकारो स्टील प्लांट में सहयोग देने से मना कर दिया था।

उनका कहना था कि भारत में समाजवाद को बढ़ावा देना अमेरिका के हित में नहीं है। अमेरिका के मना करने के बाद भारत ने सोवियत संघ के सहयोग से दोनों ही उद्योगों का निर्माण किया, लेकिन इसे भी झुठलाया नहीं जा सकता कि जब 60 के दशक में देश में भीषण अकाल पड़ा तो अमेरिका ने पीएल-480 गेहूं देकर भारत की सहायता की। हरित क्रांति के समय भी अमेरिकी सहयोग कम नहीं रहा। नई दिल्ली पर राष्ट्रीय हितों के लिए अंतरराष्ट्रीय मुद्दों को नजरअंदाज करने के आरोप को और बल मिला, जब 1971 में चीन और पाकिस्तान के साथ दोहरे मोर्चे पर युद्ध की आशंका उत्पन्न हुई तब भारत ने इस संकट में रूस की तरफ आस लगाई और रूस के साथ मैत्री-सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर कर लिए। भारत ने तब सोवियत संघ का प्रयोग कर चीन को युद्ध से पहले ही रोक दिया। अमेरिका ने 1974 और 1998 परमाणु परीक्षणों के बाद भारत पर कई प्रतिबंध लगाए, लेकिन अंततः वह भी भारत के साथ रिश्ते अच्छे करने के लिए मजबूर हुआ।

आर्थिक एकांतवास टूटा : भारत ने आजादी के बाद 45 वर्षों तक अपने आर्थिक सिद्धांत को नहीं तोड़ा। खराब से खराब परिस्थिति में भी देश ने विदेशी निवेश को कोई अवसर नहीं दिया। लेकिन 1991 की मंदी ने भारत को ऐसा घेरा कि सब्र का बांध टूट गया। भारत सरकार को आईएमएफ से सहायता लेने के लिए देश का सोना लंदन में जमा करना पड़ा। इस परिस्थिति ने भारत को अपनी अर्थव्यवस्था का वैश्वीकरण करने पर मजबूर कर दिया। इस बदलाव के पुरोधा नरसिंह राव सरकार में वित्तमंत्री रहे डॉ. मनमोहन सिंह रहे हैं।

बदलाव का प्रभाव : 1991 के बदलावों ने भारत में विकास की रफ्तार भी बदल डाली। वैश्विक निवेश और तकनीक का प्रवाह शुरू हो गया। भारत अब नेशनल से ग्लोबल होने लगा। इसका प्रभाव 1947 से 21वीं सदी के दूसरे दशक तक के भारत के समयांतर को विकास से भरने के रूप में देखा जा रहा है। 1947 में साक्षरता 16 प्रतिशत थी, जो अब 74 प्रतिशत के पार है। औसत जीवन प्रत्याशा 32 वर्ष से बढ़कर 72 वर्ष हो गई। 1 प्रतिशत की भारतीय विकास दर 8 फीसदी तक पहुंच गई जिसने अमेरिका को भारत से रिश्ते सुधारने पर मजबूर किया। 1990 के पूरे दशक में 15 बिलियन डॉलर का निवेश भारत आया था, जो बढ़कर अकेले 2010 में 38 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया। 1980 तक भारत की वैश्विक जीडीपी में 2.5 प्रतिशत की हिस्सेदारी थी जो अब 7.5 प्रतिशत है। आज भारत को दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था का गौरव हासिल है। हालांकि ये बदलाव संतुष्ट करने वाले हैं, लेकिन भारत को इससे कहीं ज्यादा की आवश्यकता है। एक पक्ष मानता है कि यदि आजादी के बाद से अमेरिका की तरफ झुकाव बढ़ाकर रखा जाता तो आज भारत इससे बेहतर परिस्थितियों का सुख भोगता, जैसा सिंगापुर और वियतनाम ने किया।

आज का भारत : आज का भारत वैश्विक पद्धति को चुनौती देने की मंशा नहीं रखता लेकिन खुद को वैश्विक मंच पर सम्मानित स्थान दिए जाने की आशा जरूर करता है। भारत की विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता अब औपचारिकता मात्र है। भारत की नीति में बदलाव पूर्णतः जाहिर तो नहीं है लेकिन इसे समझना अब कठिन भी नहीं है। भारत के बड़े बाजार ने इसे मुख्यधारा में लाकर खड़ा कर दिया है। अमेरिका के भारत से रिश्ते मजबूत करना इसी बड़े बाजार का प्रतिबिंब है। यही कारण है कि चीन सैन्य शक्ति में भारत से अग्रणी होते हुए भी युद्ध की आशंका को खारिज करता है। भारत के विदेश संबंध गुटनिरपेक्षता की नीति से आगे बढ़ चुके हैं।

ब्रिक्स, आसियान और जी-20 जैसे समूहों का हिस्सा बनकर भारत ने बहुपक्षीय संबंधों को स्थापित करने का मार्ग चुना है। आज की ग्लोबल विलेज परिकल्पना के साथ यह बहुपक्षीय नीति सही लगती है। ग्लोबल विलेज परिकल्पना पूर्व-पश्चिम, पूंजीवाद-साम्यवाद, विकसित-विकासशील जैसी धुरियां अप्रासंगिक सी लगती हैं, 21वीं सदी का भारत अपनी विदेश नीति में मानवीय मूल्यों के साथ अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं को भी आगे बढ़ाने में लगा हुआ है।

कोविड–19 के दौरान वैश्विक राजनीति की झलक

● **विकास त्रिपाठी**

फरवरी और मार्च 2020 के महीने में चीन से फैलते हुए कोरोना वायरस ने विश्व के लगभग हर देश में अपनी पैठ जमा ली है। इस अनजाने खतरे को देखते हुए दुनिया के लगभग सभी देशों की सरकारें लॉकडाउन की घोषणा कर चुकी हैं और इस वैश्विक महामारी ने 'ग्लोबल विलेज' के यातायात पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया है। इन सभी घटनाक्रमों के बीच वैश्विक राजनीति भी करवट बदल रही है तथा संतुलित और सोची समझी वैश्विक नीतियां अचानक से कार्य करना बंद कर चुकी हैं। अचानक से संयुक्त राष्ट्र अमेरिका और यूरोपीय यूनियन, जिन्हें आम तौर पर मित्र माना जाता है, एक–दूसरे पर यातायात और आर्थिक प्रतिबंध लगाने लगते हैं।

यूरोप की सरकारें डोनाल्ड ट्रंप द्वारा चीन पर लगाए गए प्रतिबंधों का विरोध करती हैं। दुनिया भर के वैज्ञानिकों के बार–बार चेतावनी देने के बावजूद ब्राजील, अमेरिका और कई अन्य देश कोरोना वायरस के घातक प्रभाव को मानने से इनकार कर देते हैं। साफ है कि साल 2020 ने यह साबित किया कि दुनिया की राजनीति में न कोई मित्र है और न ही कोई शत्रु। सभी के सभी अपने देश और नागरिकों की भलाई के लिए अपनी नीतियों में बदलाव करने को तैयार हैं। विदेश नीति के मामले में हर देश अवसर को ही आदर्श मान कर कार्य कर रहा है। इस नीति के अनुसरण में सही–गलत का महत्व न के बराबर है। इसे समझने के लिए हम साल की शुरुआत से अभी तक हो रहे घटनाक्रमों पर एक नजर डालते हैं।

ट्रंप की चीन को दोष देने की नीति : पिछले साल से ही संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दुनिया में एक 'ट्रेड वार' शुरू कर दिया था। चीन, भारत और यूरोपियन यूनियन को निशाना बनाते हुए ट्रंप प्रशासन ने हर देश के साथ होने वाले व्यापार पर टैक्स बढ़ाना शुरू कर दिया। लेकिन इस कड़ी में सबसे अधिक टैक्स चीन के साथ होने वाले व्यापार पर बढ़ाया गया।

राष्ट्रपति ट्रंप का मानना है कि चीन अमेरिका के साथ होने वाले व्यापार में हमेशा लाभ उठाता है। इसको देखते हुए ट्रंप ने महामारी से पहले ही चीन से आने वाले सामानों पर 400 मिलियन डॉलर से अधिक का टैक्स लगाया था, जिसके कारण विश्व में व्यापार के संबंध में एक अनिश्चितता की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। चीन को दुनिया का सबसे बड़ा निर्यातक माना जाता है। चीन विश्व के लगभग सभी देशों के साथ व्यापार करता है। यह स्थान एक वक्त पर अमेरिका का था। साफ है कि राष्ट्रपति ट्रंप अपनी 'मेक अमेरिका ग्रेट अगेन' की योजना पर कार्य करने में लगे हुए थे। कोविड–19 महामारी ने राष्ट्रपति ट्रंप को चीन के खिलाफ एक और हथियार दे दिया।

हर तरफ एक विवाद खड़ा करता चीन : कोरोना महामारी की शुरुआत चीन से हुई। इस वायरस ने लाखों लोगों को मौत की चपेट में ले लिया है। चीन की सरकार पर आरोप है कि सरकार ने वायरस के बारे में विश्व को शुरुआती दिनों में सचेत नहीं किया। जिनपिंग सरकार वायरस को छुपाने का हर संभव प्रयास कर रही थी। इन आरोपों से ध्यान भटकाने के लिए चीनी सरकार ने नए तरीके अपनाए। चीन ने देश के हर हिस्से में कोई न कोई विवाद खड़ा करना शुरू किया। हांगकांग में पिछले साल से ही चीन विरोधी प्रदर्शन चल रहे

थे। इसके विरोध में चीनी सरकार नया राष्ट्रीय सुरक्षा कानून लाई। हांगकांग जो कि अब तक एक स्वायत्तशासी देश था, इस नए कानून से उसकी स्वायत्तता पर कई प्रतिबंध लगा दिए गए। दक्षिण चीन सागर में स्थित ताइवान के साथ चीन का विवाद कई दशक पुराना है।

कोविड-19 महामारी ने विश्व के एक तिहाई लोगों को महीनों के लिए अपने-अपने घरों में बंद कर दिया। सामाजिक दूरी और मास्क पहनना 'न्यू नार्मल' बन गया। इन ऐतिहासिक परिवर्तनों के बीच दुनिया भर के देश अपने घर और बाहर दोनों की राजनीति को नियंत्रित करने में लगे हुए थे। एक वायरस जो चीन के एक बाजार से फैलना शुरू हुआ, आज दुनिया के हर कोने में फैला हुआ है। इस वायरस ने दुनिया के वैश्वीकरण की परिकल्पना को सच साबित कर दिया है। एक तरफ कुछ देशों ने अपनी गलत नीतियों को छुपाने के लिए दूसरे देश को दोषी करार देने का तरीका निकाला तो दूसरी ओर कुछ देश एक मुद्दे से ध्यान भटकाने के लिए अन्य परेशानियां सामने लाने लगे। हर देश का प्रशासन आरोप-प्रत्यारोप करने की नीति का पालन करने लगा।

संयुक्त राष्ट्र संघ और विश्व स्वास्थ्य संगठन जैसे संस्थानों को भी महामारी के बारे में सचेत न करने के लिए दोषी करार दिया गया। हालांकि इन सभी के बीच कुछ अच्छे संकेत भी सामने आते दिखे। एक ओर दुनिया के बड़े देश कोरोना वायरस की चपेट में आकर लड़खड़ाते दिख रहे थे तो दूसरी ओर कई छोटे देशों ने इस वायरस से लड़ने में सफलता हासिल की। विश्व के आदर्श माने जाने वाले देशों ने भेड़ चाल का पालन करते हुए एक दूसरे का अनुसरण किया। सभी ने पूर्ण बंदी का तरीका अपनाया। इसके इतर कुछ अन्य देशों ने अपने देश में अलग नीतियों का अनुसरण किया और बहुत हद तक सफल भी रहे। चीन ने ताइवान में बढ़ती चीन विरोधी नीतियों को देखते हुए ताइवान द्वीप के चारों तरफ चीनी युद्ध पोतों को तैनात कर दिया। चीन और ताइवान के बीच तनाव इस वक्त चरम पर है।

बहुपक्षीय संबंधों को बढ़ावा देता भारत : महामारी के दौरान पड़ोसी चीन की तरफ से आई चुनौतियों का प्रभाव भारतीय विदेश नीति पर पड़ा। भारत की सरकार जो पिछले कुछ सालों से गुटनिरपेक्षता की जगह बहुपक्षीय कूटनीतिक संबंधों को बढ़ावा दे रही थी अब खुले तौर पर अपने सहयोगी देशों के साथ संबंध बनाने में जुट गई है। ब्रिक्स और आसियान जैसे संगठनों में भारत चीन को अलग-थलग करने में पहले से ही लगा हुआ था, अब भारत शंघाई सहयोग संगठन में भी चीन के खिलाफ मोर्चा खड़ा कर रहा है। हाल में तनाव के बीच शंघाई सहयोग संगठन के सैन्य अभ्यास में चीन की सेना के साथ सैन्य अभ्यास करने से भारत ने मना कर दिया। कोविड-19 महामारी के दौरान बदलती वैश्विक परिस्थितियां इशारा कर रही हैं कि अब विश्व दो धुरियों के बजाय कई शक्ति केंद्रों में परिवर्तित हो रहा है।

पश्चिम और खासकर संयुक्त राष्ट्र अमेरिका वैश्विक परिदृश्य में अपने प्रभाव को खोता जा रहा है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की नीतियां अमेरिका को वैश्विक मुद्दों से बाहर खींचने में ही लगी दिखाई दे रही हैं। इस नीति का फायदा उठाते हुए चीन, रूस और तुर्की जैसे देशों ने अमेरिका का स्थान लेने की कोशिश की है। यूरोपीय देश अपने आंतरिक झगड़ों के कारण विकासशील देशों पर अब अपना प्रभाव खो रहे हैं। इस बीच भारत जैसा विकासशील और बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश अपने प्रभाव को स्थापित करने में लगा हुआ है। कोविड-19 महामारी के पश्चात आने वाली परिस्थितियां दुनिया की राजनीति में बड़ा बदलाव लाएंगी। प्रश्न यह है कि क्या यह बदलाव मानवता की भलाई के लिए होगा या नहीं?

उत्तराखंड : वो, पलायन और पहाड़

• पारसमणि

कोरोना महामारी ने सभी की कमर तोड़ कर रख दी। यूं तो हर कोई परेशान हुआ लेकिन 'वो' कुछ ज्यादा परेशान हुए। उनकी समस्याएं बाकियों से अलग थीं। वो सड़कों पर मीलों लंबी पैदल यात्रा करते और अपने घर को लौटने के लिए बेसब्र देश की हर सड़क पर लाचार दिखाई दिए। कौन थे वो? पलायन करने वाले मजदूर जो रोजगार की तलाश में महानगरों की तरफ आ गए थे। उनके गांव छोड़ देने से सब सूना हो गया। पलायन क्या है और आखिर क्यों यह संस्कृतियों को उजाड़ रहा है? भारत की अपनी एक पहचान है, विभिन्नता में एकता। ठीक उसी प्रकार उत्तराखण्ड राज्य में भी अलग-अलग बोली व संस्कृति के लोग निवास करते हैं।

कुमाऊं तथा गढ़वाल मंडल में विभक्त इस राज्य की प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन शब्दों में कर पाना संभव नहीं हो सकेगा। आंखों को सुकून देने वाला मनमोहक दृश्य, हिमालय की वादियों और दून की घाटियों में उपस्थित इस राज्य की तुलना दूसरे राज्य से नहीं की जा सकती। राज्य का गठन हुए 20 वर्ष बीत चुके हैं पर जब कभी विकास के तराजू में बीते वक्त को तौल कर देखा जाता है तो एक पलड़ा बिल्कुल खाली नजर आता है और वो है विकास का। उत्तराखण्ड में सड़कों का जाल तो बहुत बिछा है और बिजली भी लगभग हर जिले में पहुंच रही है, पर चिंता का विषय जो सामने आता है वो यह है कि आज यह राज्य पलायन की समस्या से जूझ रहा है। सड़कों का बन जाना विकास के लिए पर्याप्त नहीं, क्योंकि असल मायनों में विकास तो ग्रामीणों को मिलने वाली मूलभूत सुविधाओं की पूर्ति होता है। जब राज्य का गठन नहीं हुआ था तब यह उत्तर प्रदेश का हिस्सा था।

युवाओं तथा आंदोलनकारियों ने विकास की तर्ज पर अपनी पृथक संस्कृति के लिए एक अलग राज्य की मांग की, जो वर्ष 2000 में पूरी हुई और उत्तराखण्ड का निर्माण हो गया। इन 20 सालों में सरकारें आई-गईं। जनप्रतिनिधि बदले, पर जनता की मांगें वहीं रहीं। आज राज्य में पलायन एक चुनौती के रूप में सामने खड़ा है। यह बात तो तय है कि जल्द ही इस पर काबू न पाया गया तो यह राज्य अपना अस्तित्व खो देगा। पलायन करने वालों पर तो अक्सर इल्जाम लगाया जाता है कि फलां व्यक्ति ने अपना गांव छोड़ दिया और बस गया शहरों में। हालांकि असल बात तो यह है कि पलायित होने वाले व्यक्ति की मजबूरी होती है कि वह अपने गांव को, जहां उसने जन्म लिया उसे छोड़कर किसी पराए शहर में जा बसे।

ग्रामीण बताते हैं कि वहां किसी तरह की मूलभूत सुविधाएं मौजूद नहीं हैं तो ऐसे में जीवन यापन कैसे किया जाए? बात फिर एक रोजगार की हो, स्वास्थ्य सुविधाओं की हो, अच्छी शिक्षा की हो या फिर कृषि व्यवस्था समेत अन्य मूलभूत आवश्यकताओं की, सभी में उनके हाथ सिर्फ निराशा ही लगती है। उत्तराखण्ड की लगभग 90 प्रतिशत आबादी कृषि पर निर्भर है अर्थात उनकी जीविका व भरण-पोषण का एकमात्र जरिया उनके खेत व उपज हैं, पर दुख की बात यह है कि ये किसान खेती छोड़ने को मजबूर हैं। इन्होंने अपने

खेतों को बंजर होने के लिए छोड़ दिया है। किसानों की इस मजबूरी का कारण यह है कि सरकार कृषि क्षेत्र के लिए बेहतर योजनाएं नहीं बना रही है।

बात करें पलायन की तो आंकड़े बहुत निराश कर देने वाले हैं। सरकार ने जमीनी स्तर पर पड़ताल व सर्वेक्षण के लिए ग्रामीण विकास एवं पलायन आयोग का गठन किया, जिसने अपनी रिपोर्ट सरकार को सौंपी। आयोग की रिपोर्ट के अनुसार 646 पंचायतों के 16,207 लोग स्थायी रूप से अपना गांव छोड़कर जा चुके हैं। तमाम गांव ऐसे हैं जो आबादी विहीन हो गए हैं। इन खाली हो चुके गांवों को भूतिया गांवों की श्रेणी में रखा गया है, जहां केवल झाड़ियों में ढके हुए ताला लगे मकान खड़े हैं। अनेक गांव ऐसे हैं, जिनमें उजियारा करने के लिए केवल बुजुर्ग ही बचे हैं। पहले रोजगार की तलाश में पलायन हो रहा था पर अब पाश्चात्य जीवन शैली ने लोगों को लुभाना शुरू कर दिया है और वे अपनी संस्कृति को छोड़ कर शहरों के प्रदूषण भरे वातावरण में रहना अधिक पसंद करते हैं।

अल्मोड़ा जिले में पलायन करने वालों की कुल संख्या में 50 प्रतिशत युवा वर्ग है। युवाओं को भविष्य की धरोहर की संज्ञा दी जाती है और यह उम्मीद की जाती है कि वे अपने गांव में रहकर विकास के मार्ग तलाश करेंगे किंतु यहां हालात ठीक उलट हैं। युवा ही गांव में नहीं रहना चाहता। पलायन की मूल समस्या रोजगार की कमी व रोजगार के कम अवसरों का होना ही है। पढ़-लिखने के बाद आज के दौर का हर व्यक्ति, खेतों में पसीना नहीं बहाना चाहता। उसे एक नौकरी की तलाश होती है, जिसमें उसे तय रकम हर माह मिल जाए। सरकार की योजनाओं की कमी यही है कि वे वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली जैसी योजनाओं को लागू करके युवाओं को स्व-रोजगार के लिए प्रोत्साहित तो कर रही है किंतु इसमें रोजगार का क्षेत्र बेहद सीमित है, जैसे-बाइक के लिए लोन लेकर पर्यटकों को घुमाना। जाहिर है कोई भी युवा ड्राइवर बनने के अतिरिक्त भी कुछ अलग इच्छाएं रखता है।

सरकार को सबसे पहले राज्य में अच्छी शिक्षा की व्यवस्था करनी होगी, जिसमें कौशल विकास पाठ्यक्रम भी शामिल हो ताकि कोई भी छात्र पढ़ाई के लिए शहर का रुख न करे। इसके उपरांत योग्यता के अनुरूप उन्हें मानदेय व नौकरी प्राप्त करवाई जा सके। अब बात आती है उस वर्ग की जो पढ़ा लिखा नहीं है व अशिक्षित है। जाहिर है वह खेती ही करेगा तो सरकार को कृषि व्यवस्था सुदृढ़ करनी होगी। वर्तमान में पहाड़ी क्षेत्रों पर खेती के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती है जंगली जानवरों व आवारा पशुओं का आतंक। कई बार इनकी वजह से फसलें पूरी तरह बर्बाद हो जाती हैं। वर्षा पर निर्भर क्षेत्रों के लिए सिंचाई की उचित व्यवस्था सरकार द्वारा की जानी बेहद जरूरी है। मशरूम गर्ल दिव्या रावत जैसी युवाओं को प्रोत्साहित कर युवाओं को प्रेरित करके भी सरकार उन्हें पलायन करने से रोक सकती है।

पलायन आयोग के अनुसार पलायित लोगों की 70 प्रतिशत आबादी ने राज्य के भीतर ही पलायन किया है और वे मैदानी क्षेत्रों में जा बसे हैं। जाहिर है कि इससे सरकार को यह समझना चाहिए कि मैदानी क्षेत्रों की तरफ उनका रुख करने का मुख्य कारण पहाड़ी व मैदानी क्षेत्रों में असंतुलित विकास है। अर्थात सरकार को सर्वप्रथम इस 70 फीसदी आबादी को पहाड़ों में ही रोक के रखने के लिए मैदानी क्षेत्रों जैसी सुविधाएं मुहैया करानी होंगी। अल्मोड़ा जिले की साक्षरता दर राज्य में सबसे अच्छी है। इसके बावजूद पलायन का दर्द यह जिला गंभीर रूप से झेल रहा है। निष्कर्ष स्वरूप यही कहा जा सकता है कि उत्तराखण्ड की वर्तमान स्थिति पलायन के संदर्भ में बहुत खराब है। इसके अतिरिक्त यदि इन पर्वतीय क्षेत्रों को जल्द ही विकास की सौगात नहीं दी गई तो उत्तराखण्ड का पतन होना तय है।

आईपीएल : रोमांच के बीच विवादों का साया

• अभिषेक कुमार उपाध्याय

आईपीएल का पहला सीजन 2008 में खेला गया। कुछ ही सालों में आईपीएल ने एक बड़े व्यापार का रूप ले लिया। युवा प्रतिभाओं को मंच प्रदान करने के साथ-साथ आईपीएल ने बीसीसीआई को मुनाफे का व्यावसायिक मॉडल भी दिया है। 2018 की बैलेंस शीट के मुताबिक बीसीसीआई को सीधे तौर पर 2000 करोड़ रुपए का नफा हुआ था जो 2008 में होने वाली कमाई 350 करोड़ से 17.5 प्रतिशत अधिक है, लेकिन हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। एक तरफ जहां आईपीएल टी-20 क्रिकेट का मरकज बनकर उभरा वहीं दूसरी तरफ यह विवादों से भी घिरा रहा। 'जेंटलमेन्स गेम' कहे जाने के बावजूद क्रिकेट जगत में समय-समय पर विवाद होते रहे हैं, चाहे वो हैंसी क्रोनिए को सन 2000 में आजीवन बैन कर देना हो, तीन पाकिस्तानी खिलाड़ियों का स्पॉट फिक्सिंग मामले में दोषी पाए जाना हो या हाल ही में बॉल टेम्परिंग का दोषी पाए जाने के बाद तीन आस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों का अंतराष्ट्रीय मैचों से एक साल के लिए बैन करना हो। इसी तरह आईपीएल भी विवादों से अछूता नहीं रह सका। आईपीएल अपने 12 सीजन पूरे कर चुका है और इस दौरान हमें आईपीएल में कई विवाद भी देखने को मिले हैं।

स्लैपगेट 2008 : आईपीएल का पहला सीजन पहले विवाद को साथ लेकर आया। मुंबई इंडियंस और किंग्स इलेवन पंजाब 25 अप्रैल 2008 को मोहाली के मैदान में मुकाबले के लिए उतरे। किंग्स इलेवन पंजाब ने यह मैच काफी आसानी से जीत लिया। मैच के बाद श्रीसंत और हरभजन के बीच कुछ नोक-झोंक हो गई, जिसके बाद हरभजन ने आईपीएल की पहली कन्ट्रोवर्सी खड़ी कर दी। हरभजन ने श्रीसंत को थप्पड़ जड़ दिया, जिसके बाद उन पर 11 मैच तक का बैन लगाया गया। हालांकि आज तक इस बात का खुलासा नहीं हो पाया है कि हरभजन ने श्रीसंत को थप्पड़ क्यों मारा था।

पाकिस्तानी खिलाड़ियों पर बैन 2009 : 26/11 हमले के बाद पूरा देश आक्रोश में था। सारे सबूत यही इशारा कर रहे थे कि यह हमला पाकिस्तानी मूल के आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैयबा ने किया है। नतीजतन भारत सरकार ने पाकिस्तान से सारे संबंध तोड़ने का फैसला कर लिया, जिसके बाद आईपीएल से भी पाकिस्तानी खिलाड़ी बैन हो गए। पाकिस्तानी खिलाड़ियों के कान्ट्रैक्ट को रद्द कर दिया गया। पहले सीजन के बाद आज तक कोई पाकिस्तानी खिलाड़ी आईपीएल का हिस्सा नहीं बन पाया। हालांकि बीच-बीच में कई बार पाकिस्तानी खिलाड़ियों को आईपीएल में खिलाने की मांग उठती रहती है, पर उन्हें बीसीसीआई की तरफ से खारिज कर दिया जाता है।

ललित मोदी 2010 : ललित मोदी वह नाम है जिसने आईपीएल की संकल्पना तैयार की व उसकी नींव रखी, लेकिन कुछ समय बाद ललित विवादों में घिर गए। आईपीएल का तीसरा सीजन खत्म होने के साथ ही ललित मोदी को बीसीसीआई से बर्खास्त कर दिया गया। उन पर दुराचार, अनुशासनहीनता और वित्तीय अनियमितताओं के आरोप लगे। आरोपों की जांच के लिए एक समिति का गठन किया गया। इस समिति ने 2013 में एक रिपोर्ट जारी की, जिसमें इन आरोपों को सही पाया गया। ललित मोदी को बीसीसीआई से आजीवन बैन कर दिया गया है और वह इस समय लंदन में हैं।

स्पॉट फिक्सिंग 2013 : आईपीएल के इतिहास में 2013 एक काले धब्बे की तरह है। इस साल श्रीसंत, अजीत चंडीला और अंकित चौहान को स्पॉट फिक्सिंग के मामले में गिरफ्तार किया गया था। तीनों ही खिलाड़ी राजस्थान रॉयल्स की तरफ से खेला करते थे। यह खबर बाहर आते ही राजस्थान ने इन तीनों खिलाड़ियों के कान्ट्रैक्ट भी रद्द कर दिए। खिलाड़ियों को पांच साल के लिए बैन कर दिया गया। 2007 टी-20 वर्ल्ड कप में भारत की जीत के बाद से ही श्रीसंत लोकप्रिय हो गये थे।

मैनकाडिंग 2019 : किंग्स इलेवन पंजाब और राजस्थान रॉयल्स के बीच 25 मार्च 2019 को मैच खेला जा रहा था। मैच काफी रोमांचक था। दोनों टीमें जीतने के लिए सब कुछ करने को तैयार थीं। तभी किंग्स इलेवन पंजाब की तरफ से बॉलिंग करते हुए रविचंद्रन अश्विन ने राजस्थान रॉयल्स के जॉस बटलर को 'मैनकड' कर दिया। इस घटना ने सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया। इस रन आउट के बाद पूरे क्रिकेट जगत में मैनकड के नियम को लेकर बहस छिड़ गई। कई खिलाड़ियों का मानना था कि मैनकड क्रिकेट की भावना के विरुद्ध किया जाता है, जबकि बाकी का कहना था कि यह नियमों के अनुरूप है इसलिए इसमें कोई बुराई नहीं।

क्रिकेट और विवाद का चोली दामन का साथ रहा है। क्रिकेट के सबसे आधुनिक रूप का प्रतिनिधि होने के नाते आईपीएल में भी विवाद होना लाजिमी था। हालांकि इन सब घटनाओं के बावजूद इस खेल की मर्यादा व रोमांच बिलकुल कम नहीं हुआ है।

जलवायु परिवर्तन बन गया चुनौती

विश्व भर में आज जलवायु परिवर्तन का विषय बहुत ही अहम मुद्दा बना हुआ है। इस बात से आज कोई भी देश इंकार नहीं कर सकता कि जलवायु परिवर्तन वैश्विक समाज के सामने एक बहुत बड़ी चुनौती है। इससे निपटना वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता बन गई है। पिछले आंकड़े देखने पर पता चलता है कि 19वीं सदी के अंत से अब तक पृथ्वी की सतह का औसत तापमान लगभग 0.9 डिग्री सेल्सियस बढ़ गया है और इसी के साथ-साथ हम देखते हैं कि पिछली सदी से अब तक समुद्र के जल स्तर में काफी बढ़ोतरी हुई है। आकड़ों से पता चलता है कि वर्तमान समय गंभीरता से जलवायु परिवर्तन के बारे में सोचने का है।

प्रकृति मानव सभ्यता का पालन पोषण करती है। पृथ्वी खुद की स्वामी स्वयं है और वह अपना संतुलन खुद ही कर लेती है, लेकिन बढ़ते वैश्विक तापमान के कारण वैश्विक पर्यावरण और मौसम में बड़ा बदलाव देखने को मिलता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव सम्पूर्ण जैव-जीवन पर पड़ रहा है। ग्लोबल वार्मिंग उस स्थिति की घोतक है, जब पृथ्वी का तापमान निरंतर बढ़ता जाता है तथा औसत ताप स्तर की सीमा से भी परे चला जाता है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण सर्वाधिक दुष्प्रभाव विध्रुविय देशों एवं विकासशील देशों पर पड़ रहा है। मौसम में परिवर्तन के साथ कृषि का उत्पादन घटना, स्वास्थ्य स्तर का गिरना, जलस्तर का बढ़ना, जैव विविधता के अस्तित्व पर खतरा आदि नकारात्मक प्रभाव देखने को मिल रहे हैं।

ग्लोबल वार्मिंग जैसी वैश्विक समस्या से निजात पाने के लिए सम्पूर्ण वैश्विक समुदाय को एक साथ आना होगा। पिछले

कुछ समय में वैश्विक समुदाय के साझे प्रयासों से इसमें सकारात्मक परिणाम भी देखने को मिल रहे हैं। 1992 का रियो अर्थ समिट इस दिशा में एक मील का पत्थर साबित हुआ है। इस सम्मेलन में ग्लोबल वार्मिंग रोकने सम्बन्धी विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई तथा 'सीओपी' के आयोजन पर सहमति जताई गई। 'सीओपी' का उद्देश्य वैश्विक तापमान को निश्चित अवधि में कम करना है और इसके साथ ही 2015 में यूएनओ के द्वारा घोषित सतत् विकास लक्ष्यों के अंतर्गत भी ग्लोबल वार्मिंग जैसी वैश्विक समस्या के उन्मूलन के लिए लक्ष्य निश्चित किए गए हैं। यदि जलवायु परिवर्तन व ग्लोबल वार्मिंग जैसी ज्वलंत समस्याओं की तह में जाया जाये तो इसके कई कारण देखने को मिलते हैं। ग्लोबल वार्मिंग का मुख्य कारण ग्रीन हाउस गैस होती है, जिनमें से कुछ प्राकृतिक क्रियाओं द्वारा तो कुछ मानव निर्मित भी हैं। वातावरण में एयरोसोल जैसे प्रदूषकों की मौजूदगी भी धरती की सतह का तापमान बढ़ाती है।

अत: समय की मांग यह है कि ग्लोबल वार्मिंग रूपी वैश्विक समस्या का समाधान साझे वैश्विक प्रयासों के द्वारा किया जाना चाहिए, यह समस्या देश की भौगोलिक सीमाओं में न बंधकर सम्पूर्ण जैव-जगत की समस्या है। यह केवल तभी किया जा सकता है जब प्रत्येक व्यक्ति पर्यावरण का संरक्षण करना अपना कर्त्तव्य समझे और प्रकृति के देवत्व को स्वीकार करे। उसका सम्मान करे तथा उसका संरक्षण करे।

देश में शिक्षा की लौ जलाने वाली सावित्रीबाई फुले

• चेतना काला

इतिहास ने अपने गर्भ में अनेकों रत्नों को सहेजा है, जिन्होंने समय-समय पर समाज को एक बेहतर कल देने का प्रयास किया है। ऐसे समाज सुधारकों की सूची में एक प्रमुख नाम है सावित्री बाई फुले, जिन्होंने अपने जीवन काल में लोगों के बीच लिंग, जाति, वर्ण आदि के आधार पर होने वाले भेदभाव के खिलाफ संघर्ष और सुधार कार्य किए। सावित्री बाई के लिए समानता, मानवता, स्वतंत्रता और न्याय के सिद्धांतों का बहुत महत्व था। जिस समय औरतों को मात्र एक वस्तु माना जाता था, सावित्री बाई ने शिक्षा की चिंगारी फूंककर सभी बंधनों को चुनौती दी।

सावित्री बाई का जन्म 3 जनवरी 1831 को पुणे से 50 किलोमीटर दूर नायगांव में हुआ था। उनके पिता का नाम खंदोजी नेवसे और माता का नाम लक्ष्मी था। सावित्री का परिवार माली संप्रदाय का हिस्सा था। 1840 में 10 वर्ष की सावित्री का विवाह 12 वर्षीय ज्योतिबा फुले से हुआ। ज्योतिबा फुले को महाराष्ट्र और भारत के सामाजिक सुधार आंदोलनों में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में देखा जाता है। वे महिलाओं और दलित जातियों को शिक्षा प्रदान करने में कार्यरत थे। विवाह उपरांत ज्योतिबा ने सावित्री बाई को भी पढ़ाया। यह माना जाता है कि प्राथमिक शिक्षा ज्योतिबा से प्राप्त होने के बाद उन्हें सखाराम यशवंत प्रांजपे और केशव शिवराम भवलकर ने शिक्षित किया। इसके अतिरिक्त सावित्री बाई ने अहमदनगर और पुणे से शिक्षा ग्रहण की। पुणे से अध्यापिका बनने का शिक्षण भी ग्रहण किया था। ज्योतिबा फुले ने समाज के सामने एक सशक्त महिला के रूप में हमेशा सावित्री बाई को प्रोत्साहित किया।

फुले दंपत्ति ने 1848 में साथ मिलकर एक विद्यालय और पुस्तकालय शुरू किया। यह विद्यालय उन्होंने मात्र 9 विद्यार्थियों के साथ प्रारंभ किया था। एक ही वर्ष में उन्होंने 5 नए विद्यालय और खोल दिए। उनके इस कार्य से खुश होकर तत्कालीन सरकार ने उन्हें सम्मानित भी किया था। इस प्रकार सावित्री बाई देश की प्रथम प्राध्यापिका भी बनीं। साथ ही सावित्री बाई ने पहले किसान विद्यालय की स्थापना भी की थी। 1863 में उन्होंने गर्भवती और शोषित विधवाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अपने घर में ही भ्रूण हत्या की रोकथाम के लिए एक संस्थान शुरू किया। उन्होंने बिना दहेज या बिना खर्च के विवाह की परंपरा शुरू करते हुए सत्य शोधक समाज की स्थापना की। उन्होंने विधवाओं के लिए केंद्र तैयार करवाए। पुनर्विवाह को लेकर लोगों में बसी गलत धारणाओं का विरोध किया और अछूतों के अधिकारों के लिए भी संघर्ष किया। बताया जाता है कि जब सावित्री बाई शिक्षिका के रूप में विद्यालय जाती थीं तो उनको रोकने के प्रयास में लोग उनके ऊपर मैला फेंकते थे। सावित्री बाई ने इस यात्रा के दौरान शारीरिक और मानसिक पीड़ा को सहते हुए भी कभी हिम्मत नहीं हारी। इन संघर्षों के अतिरिक्त सावित्री बाई को मराठी की आदि कवियत्री के रूप में भी जाना जाता था। उन्होंने अपने जीवनकाल में दो पुस्तकें लिखी-काव्य फुले और बावनकशी सुबोधरत्नाकर। सावित्री बाई ने समाज में जिस क्रान्ति को लाने का प्रयास किया उसका मार्ग कदापि सरल नहीं था। इस यात्रा के दौरान उन्हें लोगों की पथरीली सोच की चोट को सहना पड़ा। लेकिन उनके धैर्य ने हर चोट का बड़ी सरलता से जवाब दिया और समाज के समक्ष वह एक आदर्श बनकर उभरीं।

ग़ज़ल से मोहब्बत का पैगाम देने वाली बेगम अख्तर

भारती

'ऐ मोहब्बत तेरे अंजाम पे रोना आया...' बेगम अख्तर का नाम सुनते ही जेहन में सबसे पहले यह गजल दौड़ने लगती है। उन्हें गजल की मल्लिका कहा जाता है। उनके नाम से गजल, ठुमरी और दादरा का खयाल आता है, जिसे सुनकर लोग झूम उठते हैं। गजल ही बेगम अख्तर की पहचान है। आज भी उनकी गाई गजलों को सुनने के लिए लोग बेताब हो उठते हैं। नई पीढ़ी में यदि आज भी कोई उनकी गाई गजलों को एक बार सुन ले तो वह हमेशा के लिए उन्हें सुनने का आदी हो जाता है। बेगम अख्तर और उनकी गजल एक सिक्के के दो पहलू की तरह हैं। एक के बिना दूसरे की कल्पना नहीं की जा सकती। बेगम अख्तर पहली महिला थीं, जिन्होंने गजल की महफिलों से उठकर पब्लिक कॉनसर्ट में जगह बनाई।

बेगम अख्तर ने उस दौर में महिलाओं का प्रतिनिधित्व किया था जब आम तौर पर महिलाएं इस क्षेत्र में कम आती थीं। उन्होंने लोगों को बताया कि गजल भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा का एक अहम हिस्सा है। एक समय था जब महिलाएं साहित्य, संगीत और कला के क्षेत्र में बेहद कम नजर आती थीं। उस दौर में बेगम अख्तर उन चुनिंदा गायिकाओं में शुमार थीं, जिन्होंने इस क्षेत्र में अपने कदम बढ़ाए। उस समय गायिकाओं में सिद्धेश्वरी देवी, गौहर जान

लखनऊ दूरदर्शन के लिए काम किया था। 1930 में वे एक पारसी थिएटर से जुड़ी थीं। उन्होंने कोरेन्थियन थिएटर कंपनी के कुछ नाटकों जैसे-'नई दुल्हन', 'रंगमहल', 'लैला मजून', 'हमारी भूल' में अभिनय के साथ-साथ गायन भी किया। अपने सिने करियर की शुरुआत उन्होंने 'एक दिन का बादशाह' फिल्म से की। इसके बाद उन्होंने 'नल दमयंती', 'मुमताज बेगम', 'अमीना', 'जवानी का नशा', 'रूपकुमारी', 'नसीब का चक्कर', 'अनार बाला', 'रोटी', 'दाना पानी' 'एहसान' जैसी फिल्मों में अदाकारी की। उनकी

कर्नाटकी, गंगूबाई हंगल, अंजनी बाई मालपकर, मोगूबाई कुर्डिकर रसूलन बाई आदि थीं, जिन्होंने सार्वजनिक तौर पर कई कॉन्सर्ट दिए। इन्हीं महिलाओं ने समाज को यह बताया कि महिलाएं किसी क्षेत्र में पुरुषों से पीछे नहीं हैं।

7 अक्टूबर 1914 को अवध की राजधानी फैजाबाद में बेगम अख्तर का जन्म हुआ था। उनका जन्म एक तवायफ मुश्तरीबाई के घर हुआ था। उन्हें सात साल की उम्र से ही उनकी मां ने मौसिकी की तालीम देनी शुरू की थी। उन्होंने उस्ताद इमदाद खां, उस्ताद अब्दुल वहीद खां (किराना), उस्ताद रमजान खां, उस्ताद बरकत अली खां-पटियाला, उस्ताद गुलाम मोहम्मद खां-गया और अता मोहम्मद खां-पटियाला से संगीत और गायिकी का ककहरा सीखा। उन्होंने कोलकाता में बिहार रिलीफ फंड के एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में अपनी पहली पब्लिक परफॉर्मेंस दी थी। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर सरोजनी नायडू थीं, जिन्होंने 13 साल की बेगम अख्तर के गजल, दादरा और ठुमरी से प्रभावित होकर उन्हें एक साड़ी उपहार स्वरूप दी थी। 1938 में बेगम अख्तर लखनऊ आई थीं और तभी से उनके दिल में लखनऊ बस गया था। उन्होंने लंबे समय तक

आखिरी फिल्म साल 1958 में आई 'जलसागर' थी। इसके फिल्मकार सत्यजीत राय थे। भारत सरकार द्वारा बेगम अख्तर को पद्मश्री और पद्मभूषण सम्मान से नवाजा गया। इसके अलावा उन्हें कई प्रतिष्ठित पुरस्कार भी हासिल हुए। इनमें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार भी शामिल है। इतना ही नहीं उन्हें मल्लिका-ए-गजल के खिताब से भी नवाजा गया था।

30 अक्टूबर 1974 को बेगम अख्तर दुनिया को छोड़ गई। इस दिन वह अहमदाबाद के एक मंच पर गायन कर रही थीं, जहां उनकी तबीयत खराब हुई और अस्पताल पहुंचकर उन्होंने दम तोड़ दिया। लखनऊ के ठाकुरगंज इलाके में उनकी मां के बगल में उनकी मजार है, लेकिन सबसे दुख की बात यह है कि जिस बेगम अख्तर ने भारतीय संस्कृति को गजल और ठुमरी दिया, उन्हीं की मजार लंबे समय तक देखरेख के अभाव में रही। लंबे समय से यह मांग होती रही है कि फैजाबाद में वह जिस कोठी में रहीं उसे संरक्षित किया जाए, लेकिन संस्कृति के पहरेदारों और सरकारों का ध्यान इस ओर कभी नहीं गया।

उम्मीद की नई किरण है सौर ऊर्जा

• आरती

किसी भी देश के विकास में ऊर्जा एक इंजन के रूप में कार्य करती है, लेकिन इस बात में भी कोई शक नहीं कि यह ऊर्जा रूपी इंजन विकास के साथ-साथ उस देश के पर्यावरण को भी बहुत नुकसान पहुंचाता है। ऐसे में देश के सामने यह समस्या खड़ी होती है कि वह विकास करे या पर्यावरण को बचाए। भारत ने अपने ऊर्जा रूपी इंजन को सौर ऊर्जा इंजन में बदल दिया। भारत एक उष्णकटिबंधीय भू-भाग वाला देश है, जहां लगभग 3000 घंटे सूर्य की किरणें जमीन पर पड़ती हैं। अगर भारत के भू-भाग पर दृष्टि डालें तो हमें यह भी पता चलेगा कि यहां लगभग 5000 लाख किलो वाट प्रति घंटा वर्ग मीटर के बराबर सौर ऊर्जा आती है। इसी ऊर्जा का उपयोग भारत अपने विकास में कर रहा है।

ग्रामीण इलाकों को रोशन करती सौर ऊर्जा : भारत की लगभग 70 फीसदी आबादी ग्रामीण इलाकों में रहती है। जहां बिजली नहीं पहुंच पाती या कम पहुंच पाती है। पहाड़ी इलाकों में तो बिजली की समस्या और भी विकराल है। भारत के ग्रामीण इलाकों की लगभग 60 फीसदी बिजली सौर ऊर्जा से आती है। सौर ऊर्जा के इसी विकास से ग्रामीण इलाकों में आज जीवन सरल हुआ है। भारत के लगभग 1,50,000 घर सौर ऊर्जा के माध्यम से ही रोशन हैं। देश में जनसंख्या के साथ-साथ ऊर्जा की मांग भी बढ़ती चली जा रही है जो कि आने वाले समय में भारत की अर्थव्यवस्था पर बहुत बुरा असर डाल सकती है। इसी को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने भारतीय रेलवे को बिजली की जगह सोलर ऊर्जा पर चलाने का प्रयास शुरू किया है।

दुनिया के सबसे बड़े रेल नेटवर्क में शामिल भारतीय रेल नेटवर्क, जोकि 62000 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है, लगभग 50 प्रतिशत बिजली पर चलता है। मध्य प्रदेश के वीना रेलवे में 1.7 मेगावाट का सौर ऊर्जा संयंत्र लगाया गया। इस संयंत्र की उत्पादन क्षमता 25 लाख यूनिट होगी, जिससे कि रेलवे को 1.37 करोड रुपए का मुनाफा होगा। भारत के विभिन्न स्टेशनों और रेलवे स्टेशन की इमारतों पर अब तक लगभग 100 मेगावाट के सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किए जा चुके हैं। भारतीय रेलवे में अब तक जिन स्टेशनों को सौर ऊर्जा से लैस किया गया है उनमें जयपुर, नई दिल्ली, पुरानी दिल्ली, गुवाहाटी, कोलकाता, वाराणसी, सिकंदराबाद, हैदराबाद आदि शामिल हैं।

भारत ने तेजी से सौर ऊर्जा का उत्पादन बढ़ाया है। दुनिया का सबसे बड़ा सौर ऊर्जा संयंत्र तमिलनाडु के मोती क्षेत्र में है, जिसकी उत्पादन क्षमता 648 मेगावाट है। एशिया का सबसे बड़ा सौर ऊर्जा संयंत्र मध्य प्रदेश का रीवा सौर ऊर्जा संयंत्र है। भारत सौर ऊर्जा के व्यापार में दुनिया में तीसरे नंबर पर आता है। यहां ऊर्जा की खपत तेजी से बढ़ रही है। सरकार का लक्ष्य है कि वे 2035 तक लगभग 40 फीसदी ऊर्जा की मांग को नवीकरणीय संसाधन से पूरा करे। अगर सौर ऊर्जा का उत्पादन बढ़ा तो युवाओं के लिए रोजगार भी बढ़ेगा क्योंकि एक सोलर प्लांट को बनाने में लगभग दो महीने लगते हैं। भारत के सौर ऊर्जा की तरफ बढ़ते कदम ग्रामीण, शहरी व आर्थिक विकास में बहुत सहायक सिद्ध हो रहे हैं। पर यहां यह भी देखना जरूरी है कि विश्व ऊर्जा बाजार में भारत की ऊर्जा मांग 2016 तक 5 प्रतिशत थी जो कि 2040 तक बढ़कर 11 प्रतिशत हो जाएगी।

भले ही भारत में सौर ऊर्जा निर्माण प्रतिवर्ष 20 गीगावॉट किया जाता हो परंतु यह केवल 3 गीगावाट ऊर्जा की पूर्ति में ही सक्षम है। भारत को अभी अपनी इन कमियों पर भी सुधार करने की आवश्यकता है क्योंकि विश्व बैंक के अनुसार अभी भी भारत में 20 करोड़ लोगों के पास बिजली की सुविधा नहीं है। भारत को एक ऐसी सौर ऊर्जा रणनीति की जरूरत है जो लंबे समय तक विकास कर सके। अगर भारत एक ऐसी रणनीति तैयार कर लेता है तो भारत 2030 तक लगभग 42 अरब डॉलर और उपकरणों के आयात की बचत कर सकेगा जो कि भारत की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करेगा। भारत की आबादी और ऊर्जा की मांग को देखते हुए यह कहना गलत नहीं होगा कि सौर ऊर्जा भारत के विकास में एक उम्मीद की किरण बनी है।

सरकारों के साथ व्यक्तिगत प्रयास करने होंगे

● श्रुति गोयल

प्रकृति हमारी दुनिया की श्रृंगारकर्ता है। जल, भूमि, आग, वायु, पृथ्वी इसी प्रकृति के अभिन्न अंग हैं, जो मिलकर संसार में जीवन का संतुलन बनाए रखते हैं। लेकिन जब प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ने की कोशिश की जाती है तब क्या होता है?

'कभी गांव धूप से झुलस रहे,
कभी शहर शीत से सिकुड़ रहे
कहीं भूमि पानी को तरस रही,
कहीं बिन मौसम बादल बरस रहे।'

वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व जलवायु परिवर्तन की समस्या से जूझ रहा है। इसका एकमात्र कारण भूमंडलीय ऊष्मीकरण (ग्लोबल वार्मिंग) है। मनुष्य द्वारा अत्यधिक औद्योगिकीकरण का परिणाम है कि वर्तमान में वायु मंडल में ग्रीन हाउस गैसें गर्मी विकिरण को अवशोषित कर रही हैं। इस कारण भारत व अमेरिका जैसे कई विकासशील व विकसित देशों को वर्षा ऋतु में अत्यधिक वर्षा, शीत ऋतु में कड़ी ठंड व ग्रीष्म ऋतु में झुलसाती गर्मी का सामना करना पड़ रहा है। जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम का अनुमान लगाना भी मुश्किल हो गया है।

भारतीय मौसम विभाग के महानिदेशक मृत्युंजय मोहापात्र ने 'डाउन टू अर्थ' पत्रिका को बताया है कि आईएमडी ने 29 सितंबर को बंगाल की उत्तरी खाड़ी में निम्न दाब क्षेत्र के निर्माण की कम संभावना होने का अनुमान लगाया था। चेतावनी के अनुसार बिहार में भारी वर्षा की कम संभावना थी, लेकिन दक्षिण-पश्चिमी मानसून के लौटने में विलम्ब होने के कारण यह अनुमान गलत साबित हुआ। बिहार में लोगों को भारी बाढ़ का सामना करना पड़ा, जिसमें 100 से

अधिक लोगों की जानें गईं। मध्य-अगस्त में आईएमडी द्वारा ऐसी ही एक और भविष्यवाणी हिमाचल प्रदेश में भारी वर्षा होने की हुई थी, लेकिन वह यह बताने में असमर्थ रहे कि वर्षा कितनी भारी होगी व किस जगह को प्रभावित करेगी।

18 अगस्त को प्रदेश ने 1,024 प्रतिशत सामान्य से अधिक वर्षा का सामना किया व लगभग 25 लोग बाढ़ एवं भूस्खलन जैसी आपदाओं की चपेट में आ गए। इकोनॉमिक टाइम्स में प्रकाशित एक आर्टिकल के अनुसार भारत पिछले कुछ वर्षों से अत्यधिक गर्म व शुष्क मौसम से जूझ रहा है, जिसमें 2014 व 2015 में पड़े दुर्लभ सूखे के उदाहरण भी शामिल हैं। हालांकि यह समस्या केवल यहीं तक सीमित नहीं थी। 2005 में मुंबई, 2013 में उत्तराखंड, 2014 में कश्मीर व 2018 में केरल को अत्यधिक वर्षा के कारण भारी बाढ़ का सामना करना पड़ा था।

इंडिया टीवी डॉट कॉम पर प्रकाशित एक आर्टिकल में 2019 में पड़ी कड़ी ठंड को लेकर भारतीय मौसम विभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. राजेन्द्र जनमनी ने कहा, 'यह प्रकृति का अनूठा जादू है और इसका प्रभाव समूचे उत्तर-पश्चिम भारत पर पड़ सकता है।' वहीं दूसरी ओर 'डाउन टू अर्थ' को विश्व मौसम विज्ञान संगठन ने बताया कि 2019 ऑस्ट्रेलिया के लिए सबसे गर्म व शुष्क वर्षों में से एक था। इसके परिणाम स्वरूप कई जंगल बड़े पैमाने पर ध्वस्त हुए, जिसमें लगभग 46 प्रतिशत से अधिक क्षेत्रफल आग से ध्वस्त हुए।

विभिन्न आंकड़ों के विश्लेषण के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि किस प्रकार मानवीय गतिविधियों ने प्रकृति के संतुलन को उजाड़ कर रख दिया है। संसाधनों के अंधाधुंध प्रयोग व औद्योगिकीकरण से जलवायु चक्र अनियमित रूप से बदल रहा है व शहर अधिक प्राकृतिक आपदाओं की चपेट में आते जा रहे हैं। जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र के अंतर सरकारी पैनल के अनुसार हमारे पास जलवायु परिवर्तन की गंभीर हानियों को रोकने के लिए सिर्फ 10 साल का समय बाकी है। यह जरूरी है कि सरकारों के साथ-साथ व्यक्तिगत स्तर पर भी इसे रोकने के लिए कदम उठाए जाएं।

संचार का सशक्त माध्यम है फोटो पत्रकारिता

● **आशीष**

फोटो पत्रकारिता संचार का एक ऐसा माध्यम है जिसमें खबरों को बिना शब्दों की मदद के पेश किया जाता है। प्रिंट माध्यम हो या इलेक्ट्रॉनिक माध्यम, फोटो या तस्वीरों के बिना यह सब अधूरे हैं। इसलिए फोटो पत्रकार की, किसी भी मीडिया हाउस में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है। किसी भी घटना का वर्णन करना हो तो फोटो एक बहुत ही जरूरी माध्यम है। यही नहीं फोटो शब्दों से ज्यादा पाठकों और दर्शकों पर अपना प्रभाव छोड़ते हैं। जो बात शब्दों से नहीं कही जा सकती वो फोटो से संभव है।

समाचारों में अगर तस्वीरें न हों तो समाचार को ठोस नहीं बनाया जा सकता। फोटो संचार का बहुत ही आवश्यक माध्यम है। वहीं इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में भी इसका भरपूर उपयोग किया जाता है। हालांकि वहां विजुअल्स की मदद भी ली जाती है। एक फोटो पत्रकार रिपोर्टर भी होता है। यह कार्य थोड़ा कठिन और जोखिमों से भरा भी होता है। इसके लिए आपको अपनी सोचने की क्षमता अलग रखनी होती है। अगर आप घटना स्थल पर समय पर नहीं पहुंचे तो आपको फील्ड से खाली हाथ अपने कार्यालय जाना पड़ सकता है। जिस तरह बिना खबरों के समाचार पत्र या मैगजीन और टीवी में समाचार नहीं दिखाए जा सकते ठीक उसी तरह फोटो के बिना हम कुछ नहीं कर सकते।

फोटो पत्रकारिता में समय का सूक्ष्म रूप भी बहुत मायने रखता है। यहां हर एक पल बहुत कीमती होता है। वहीं एक फोटो पत्रकार को एक फोटो के इंतजार में कई घण्टे भी खड़ा रहना पड़ता है। पत्रकारिता की दुनिया में फोटो पत्रकार की अहम भूमिका होती है। बिना फोटो पत्रकार के कोई भी समाचार प्रकाशित या प्रसारित नहीं किया जा सकता। फोटो हमारी खबर को मजबूत करती है और एक नई दिशा देती है। जिस तरह एक पत्रकार किसी खबर को अपनी भाषा और शब्दों के माध्यम से कलमबद्ध करता है ठीक उसी प्रकार एक फोटो पत्रकार खबरों को अपने कैमरे में कैद करता है।

बदलते दौर में जिस तरह फेक न्यूज का चलन बढ़ा है और सही खबरों को गलत या छेड़छाड़ करके प्रस्तुत किया जा रहा है उस समय खबरों को पुष्ट करने के लिए फोटो एक सशक्त माध्यम बन गया है। कहते हैं 'एक फोटो हजार शब्दों के बराबर होता है।' वहीं प्रिंट माध्यम में ही फोटो जरूरी नहीं होता बल्कि टीवी पत्रकारिता में भी 'शब्द तस्वीरों के गुलाम होते हैं।' यह दिशा पूरी रोमांच से भरी हुई है। आज हम सब पत्रकारों की बात करते हैं या उन्हें ही जानते हैं लेकिन फोटो पत्रकारों का भी पत्रकारिता में बहुत बड़ा योगदान रहा है। भारत की महिला फोटो पत्रकार होमी व्याराल्ला नाम भी उन्हीं में से एक है। इसके अलावा रघु राय सहित आज बड़े पैमाने पर फोटो पत्रकार अपनी भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं।

फैशन इंडस्ट्री का महिलाओं पर बढ़ता दबाव

- **लीशा**

भारत में विभिन्न संस्कृति के लोग निवास करते हैं। लोग व्यक्तिगत मान्यताओं के समूह हैं, जो एक समाज का निर्माण करता है, जिसकी अपनी एक विचारधारा होती है। यही विचारधाराएं समाज के लिए कुछ मानकों का निर्धारण करती हैं। इन मानकों के जाल ने समाज में रहने वाली महिलाओं को प्राचीन काल से ही जकड़ा हुआ है। इन बंधनों को तोड़ने व इसके प्रति जागरुकता फैलाने की मुहिम समय-समय पर चलाई गई है। यह मुहिम औपचारिक तौर पर मौजूद तो है परंतु समाज के बहुत से भाग इनसे अछूते रह गए हैं। समाज में अभी भी महिलाओं को हर स्तर पर किसी न किसी रूप में शोषण का शिकार होना पड़ता है। इसमें एक मुख्य भूमिका फैशन इंडस्ट्री ने निभाई है। यही इंडस्ट्री तय करती है कि क्या सुंदर है? क्या बिकाऊ है? क्या जनता को भाता है और क्या नहीं?

फैशन जगत महिलाओं को एक वस्तु की तरह उपयोग करता है। एक समाज के तौर पर हम सभी, औरतों को एक बॉडी टाइप में देखना चाहते हैं। हम औरतों के शरीर को उस पुतले की तरह देखना चाहते हैं, जो दुकानों में सजता है। इसलिए बदलती हुई सुंदरता की परिभाषा के साथ औरतों से अपेक्षा की जाती है कि वे भी बदलें। समय-समय पर बाजार में चलने वाली फेस क्रीम, ट्रेंडी कपड़े, जीरो फिगर, हाई हील आदि को अपनाने के लिए औरतों को मजबूर किया जाता है और यह काम सिनेमा बखूबी करता नजर आता है। लड़कियों की पैंट बिना जेब या छोटी जेब की इसलिए बनाई जाती है ताकि सामान व पैसे रखने के लिए वह बाजार में उपलब्ध महंगे बैग/पर्स खरीदें।

एक महिला का बाजारीकरण न केवल उसके शरीर से किया जाता है बल्कि उसकी आधारभूत चीजों का भी बाजारीकरण होता है, जैसे अंतर्वस्त्र को बाजार में इतने अधिक दाम में बेचा जाता है ताकि इंडस्ट्री को मुनाफा हो, क्योंकि इसे खरीदना हर लड़की की जरूरत है। क्या हर लड़की यह जानने के बावजूद अपने रूप-रंग को आसानी से अपना पाएगी कि फिल्मों में नायक जिस नायिका से बेतहाशा प्यार करता है, वो लड़की हमेशा ट्रेंडी कपड़े पहनने वाली, गोरी और दुबली होती है। यही कारण है कि बाजार में आने वाले ब्यूटी प्रोडक्ट्स की इतनी ज्यादा बिक्री होती है, चाहे वे अधिक खर्चीले ही क्यों न हों।

फैशन इंडस्ट्री के हाथों में शरीर के साइज की कमान होती है। कपड़ों को ऑवरग्लास आकार वाले शरीर के लिए बनाकर पुतलों को पहना दिया जाता है। जब इन्हें किसी मॉल के बाहर डिस्पले में लगाया जाता है तब हजारों महिलाएं अपने शरीर को कोसते हुए निकल जाती हैं। फेक्ट बॉडी या आइकॉन बॉडी के मापदंड के भीतर न आने वाली लड़कियों को अपने वास्तविक साइज के कपड़े ढूंढने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। साथ ही सहानुभूति या मजाक का पात्र भी बनना पड़ता है।

अतः यह कहना अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होगा कि फैशन इंडस्ट्री ने न केवल महिला शरीर का एक वस्तु के समान उपयोग किया है बल्कि उसे सेक्शुअलाइज करने और उसके प्रति समाज में रुढ़िवादी विचारधारा (स्टीरियोटाइप मानसिकता) रचने में अहम भूमिका निभाई है। वर्तमान में फेमिनिज्म को केवल मुद्दा बनाने या नारा बनाने भर से महिलाओं की वास्तविक लड़ाई नहीं जीती जा सकती। इस लड़ाई को जीतने के लिए फेमिनिज्म के सही अर्थों को समझना आवश्यक है, जो समाज में पुरुषों जितना समान दर्जा पाने के साथ-साथ महिलाओं को खुद की स्वतंत्र पहचान समाज में स्थापित करने से भी है।

कोरोना वायरस : खोज से लेकर अब तक का सफर

● **मानसी बिष्ट**

कोरोना वायरस पर सबसे पहला अध्ययन एक महिला वैज्ञानिक डोरोथी हामरे ने किया था। कोरोना वायरस के संकेत 1930 के दशक में ही मिलने लगे थे। इस वायरस पर डोरोथी हामरे का पहला शोध पत्र 1966 में प्रकाशित हुआ था, जिसमें उन्होंने इशारा किया था कि यह मनुष्य के श्वसन तंत्र पर चोट करने वाला घातक वायरस है। डोरोथी पहली वैज्ञानिक थीं, जिन्हें कोरोना प्रजाति के वायरस को अलग करने में कामयाबी मिली थी। इसके कुछ समय बाद डेविड टायरेल और मैल्कम ब्योने ने भी ऐसी ही कामयाबी हासिल की थी। डेविड टायरेल की ही प्रयोगशाला में जून अलमेदा ने पहली बार शोध करके बताया था कि कोरोना दिखता कैसा है।

कोरोना वायरस की संरचना मोटे तौर पर माला की तरह होती है। ग्रीक शब्द कोरोने से लैटिन शब्द कोरोना बना है। यह शब्द पहली बार 1968 में इस्तेमाल हुआ, लेकिन तब यह वायरस बहुत खतरनाक नहीं हुआ था। कोरोना परिवार के वायरस सार्स का खतरा इसी सदी में सामने आया। सार्स सबसे पहले साल 2002-03 में 26 देशों में फैला था और मर्स 2012 में करीब 27 देशों में। यह गौर करने की बात है कि जो मर्स वायरस सबसे ताकतवर था वह सबसे कम फैला था और जो कोविड-19 सबसे कमजोर है, उसने दुनिया को तड़पा रखा है। मर्स में तीन में से एक मरीज की जान चली जाती है। सार्स से दस में से कोई एक जान गंवाता है। लेकिन कोविड-19 सौ मरीजों में से दो की भी जान नहीं ले रहा है। गंभीर बात यह है कि अभी चिकित्सा विज्ञान के पास तीनों में से किसी का भी पक्का इलाज नहीं है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन अगर बार-बार कह रहा है कि संभव है, कोविड-19 की दवा या वैक्सीन कभी न मिले तो कोई आश्चर्य नहीं। सिर्फ कोरोना ही नहीं लगभग सभी वायरस अपनी प्रजाति बदलते रहते हैं, इसलिए किसी देश में ज्यादा मरीजों की मौत हो रही है और कहीं कम। हालांकि अभी सबसे बड़ा सवाल यह है कि अगर इलाज नहीं मिलेगा, तो क्या होगा? विशेषज्ञों के अनुसार या तो दवा मिल जाए या फिर इंतजार करना होगा कि दुनिया के 65 प्रतिशत लोगों को एक-एक बार कोरोना हो जाए। जब उन सबके शरीर में कोविड-19 की एंटीबॉडी तैयार हो जाएगी। जब इस वायरस को ठहराव नहीं मिलेगा तब संक्रमण में गिरावट आती जाएगी। कोविड-19 पर विजय प्राप्त करने के लिए महायुद्ध जारी है। खोज में लगे वैज्ञानिक यह भी उम्मीद कर रहे हैं कि इस बीच यह दुश्मन वायरस अपना स्वरूप न बदले और हमारे शिकंजे में आ जाए।

अर्थव्यवस्था हुई कोरोना पॉजिटिव

- **गीतू कत्याल**

पूरा विश्व जीवन की रेलगाड़ी पर सवार होकर गिरते-संभलते, स्थिति-परिस्थिति का सामना करते हुए अपनी गति में चल रहा था। इतने में अचानक ऐसी हलचल हुई, जिससे न केवल रेलगाड़ी प्रभावित हुई बल्कि सारे स्टेशनों पर भी हड़कंप मच गया। चीन के वुहान शहर से एक वायरस आया जिसने पूरी दुनिया को अपने प्रकोप में ले लिया। इस वायरस के कारण कोविड-19 महामारी ने जन्म लिया, जिसने मनुष्य के सामान्य जीवन को असामान्य कर दिया। बीमारी की रोकथाम के लिए लगाए गए लॉकडाउन ने पूरे समाज को पिंजरे में कैद कर दिया। यातायात के साधनों पर ब्रेक लग गया। विद्यालय-महाविद्यालय सूने हो गए। दफ्तर, दुकानें, फैक्ट्री, मॉल, होटल और उड़ानें ठप हो गई।

नतीजा यह हुआ कि वैश्विक अर्थव्यवस्था ढह गई। चीन के अलावा करीब-करीब सब देशों की अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान उठाना पड़ा। अमेरिका, ब्रिटेन, इटली, फ्रांस, कनाडा, जर्मनी और जापान जैसे देशों को अर्थव्यवस्था में भारी गिरावट का सामना करना पड़ा। महामारी से बचने के लिए भारत ने भी अन्य देशों की तरह तालाबंदी का रास्ता अपनाया और भारतीय अर्थव्यवस्था को भी नुकसान उठाना पड़ा। एक झटके में करोड़ों लोग बेरोजगार हो गए। लाखों लोगों के उद्योग ठप हो गए। चारों तरफ मंदी और कर्ज का जाल फैल गया। लगभग 50 लाख लोगों की नौकरियां चली गई। भारतीय अर्थव्यवस्था पहले से ही मंदी का सामना कर रही थी। अप्रैल-जून 2019 की तिमाही में जीडीपी की दर 5 प्रतिशत पर थी, यह जुलाई-सितम्बर में घटकर 4.5 प्रतिशत हो गई। अक्टूबर से दिसंबर में 4.7 प्रतिशत और जनवरी से मार्च 2020 की तिमाही में जीडीपी 3.1 प्रतिशत थी।

इस वर्ष वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा जारी किए गए बजट से पूरे देश को बहुत उम्मीदें थीं लेकिन कोरोना के आगमन से अर्थव्यवस्था और गड्ढे में चली गई। पिछले वर्ष की पहली तिमाही में रियल जीडीपी 35.35 लाख करोड़ रुपए थी। अप्रैल 2020 वित्त वर्ष की पहली तिमाही की जीडीपी नकारात्मक है। भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास दर -23.9 प्रतिशत है। मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर की विकास दर -39.3 प्रतिशत, कंस्ट्रक्शन की -50.3 प्रतिशत, व्यापार होटल -47 प्रतिशत, वित्त सेवाएं व रियल एस्टेट -5.3 प्रतिशत व बिजली एवं अन्य सेवाओं की विकास दर -7 प्रतिशत है।

भारतीय रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर रघुराम राजन ने जीडीपी में 23.9 प्रतिशत की गिरावट को चिंताजनक बताया। उन्होंने कहा कि 'नौकरशाही को अब आत्मसंतोष से बाहर निकलकर कुछ अर्थपूर्ण कार्रवाई करनी होगी। मौजूदा संकट के दौरान एक अधिक विचारवान और सक्रिय सरकार की आवश्यकता है।' राजन का कहना है कि शुरुआत में जो गतिविधियां एकदम तेजी से बढ़ी थीं, दुर्भाग्य से अब फिर ठंडी पड़ गई हैं।

भारत में 24 मार्च को तालाबंदी की घोषणा हुई थी। तालाबंदी के आर्थिक प्रभावों को दूर करने के लिए सरकार ने गरीब कल्याण योजना चलाई, जिसके अंतर्गत 1 लाख 70 हजार

करोड़ की राशि लोगों के खाते में और अनाज के रूप में दी गई। इसके अलावा अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए 20 लाख करोड़ के आर्थिक राहत पैकेज की घोषणा भी हुई थी। दावा किया गया था कि अर्थव्यवस्था को राहत पहुंचाने के लिए जीडीपी का 10 प्रतिशत खर्च किया जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि यह पैकेज आत्मनिर्भर भारत की अहम कड़ी के रूप में कार्य करेगा। मोदी ने कहा कि हमें 5 स्तंभ अर्थव्यवस्था, इंफ्रास्ट्रक्चर, जनसांख्यिकी, मांग और प्रणाली पर ध्यान केंद्रित करना है।

पूरा पैकेज 20 लाख करोड़ का था, लेकिन जमीनी हकीकत कुछ और ही थी। 20 लाख करोड़ में से 8 लाख करोड़ की घोषणा भारतीय रिजर्व बैंक ने पहले ही 'बैंक तरलता' के रूप में कर दी थी। बचे 12 लाख करोड़ तो गरीब कल्याण योजना में 1.7 लाख करोड़ की राशि को भी इस पैकेज में सम्मिलित कर लिया गया। 12 लाख करोड़ में से 1.7 लाख करोड़ हटाने के बाद लगभग 10 लाख करोड़ का पैकेज बचा। 10 लाख करोड़ में भी कुछ योजनाओं की घोषणा सरकार पहले ही कर चुकी थी। आर्थिक राहत पैकेज में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों को तीन लाख करोड़ का लोन देने का ऐलान किया गया।

बिजली वितरण कंपनियों के लिए 90 हजार करोड़, किसानों को दो लाख करोड़ का रियायती कर्ज, रेहड़ी-पटरी वालों के लिए 5000 करोड़ की रकम जारी की गई है। प्रवासी मजदूरों को दो महीने के लिए मुफ्त राशन उपलब्ध कराया गया, जिसकी लागत 3.5 हजार करोड़ आई। एक लाख करोड़ मनरेगा के तहत घर लौटे प्रवासी मजदूरों को देने की घोषणा भी की गई थी। इसके बाद सरकार के पैकेज को देखें तो समझ आता है कि 20 लाख करोड़ रुपये शब्दों की हेरा-फेरी थी। पैकेज का अधिकतर हिस्सा लोन है जो बैंक देता है, सरकार नहीं। पैकेज जीडीपी का 10 प्रतिशत बताया गया था जबकि यह जीडीपी है 1-3 प्रतिशत तक।

इंग्लैंड की बार्कलेज कंपनी के अनुसार आर्थिक पैकेज केवल 1.5 लाख करोड़ का है। एचएसबीसी के अनुसार पैकेज जीडीपी का 10 प्रतिशत नहीं 1 प्रतिशत है। आर्थिक संकट पर पूर्व वित्त मंत्री पी चिदंबरम का कहना है कि सरकार को गिरावट के बारे में पहले से अंदेशा था लेकिन सरकार ने स्थिति संभालने के लिए कुछ नहीं किया। पी. चिदंबरम ने कहा यह स्थिति सरकार के लिए शर्म का विषय होना चाहिए लेकिन वो अपनी गलती भी स्वीकार नहीं करेगी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने ट्विटर पर लिखा, 'बीजेपी सरकार के पिछले छह साल के नफरत भरे सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की सबसे बड़ी उपलब्धि यही रही है। बांग्लादेश भी भारत को पीछे छोड़ने वाला है।'

पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने अर्थव्यवस्था पर चिंता व्यक्त करते हुए सरकार को सुझाव दिया है कि सरकार को लोगों की आजीविका सुरक्षित करनी चाहिए। नकदी मदद के जरिए लोगों को खर्च लायक पैसा उपलब्ध कराना चाहिए। सरकार को कारोबारियों के लिए पूंजी उपलब्ध करानी चाहिए। इसके लिए सरकार को समर्थित क्रेडिट गारंटी प्रोग्राम चलाना चाहिए। सरकार को वित्तीय सेक्टर की समस्याओं को हल करने में मदद करनी चाहिए। अर्थव्यवस्था पर निष्कर्ष लिखना मुश्किल है पर भारतीय अर्थव्यवस्था की दिशा बेहद चिंताजनक है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के अनुसार इस वित्त वर्ष के दौरान भारत की प्रति व्यक्ति जीडीपी में 10.3 फीसदी की गिरावट आएगी। अगर ऐसा हुआ तो भारत बांग्लादेश से नीचे चला जाएगा। मूडीज और फिच रेटिंग ने भारत की रेटिंग में कमी की है।

अर्थव्यवस्था में गिरावट इसी तरह जारी रही तो भारत की स्थिति बेहद कमजोर हो जाएगी। गरीबी, बेरोजगारी बढ़ जाएगी। रोजगार देना मुश्किल हो जाएगा। भुखमरी बढ़ जाएगी। निर्धन रेखा से नीचे रहने वाले लोगों की संख्या में वृद्धि हो जाएगी। सरकार को चाहिए कि वह अर्थव्यवस्था से संबंधित आंकड़ों को देश की जनता के सामने खुलकर प्रस्तुत करे। अपनी राजनीति के साथ देश की मंदी पर भी ध्यान दे। सरकार ऐसे पैकेज बनाए जिससे हर वर्ग के लोगों को फायदा हो व सहायता मिले। अगर अर्थव्यवस्था पर अभी भी ध्यान नहीं दिया गया तो इतने सालों की मेहनत पर पानी फिर जाएगा। सरकार के दिखाए गए सपने, सपने ही रह जाएंगे।

एर्दोआन का शासन और तुर्की की राजनीति

- **दीपक कुमार त्रिवेदी**

हाल के दिनों में तुर्की का विश्व की राजनीति पर प्रभाव बढ़ा है। सीरिया और खाड़ी देशों के विवादों में तो तुर्की पहले से ही था, अब वह दुनिया के कई अन्य मुद्दों पर खुले तौर पर सामने आ रहा है। यूरोपियन देशों के साथ शरणार्थी विवाद, अमेरिका के साथ इस्लामोफोबिया का विवाद और लीबिया के विवाद में उलझने के बाद अब तुर्की कश्मीर मुद्दे पर भी भारत को आंख दिखा रहा है। इन सभी का कारण हैं तुर्की के राष्ट्रपति रजब तैयब एर्दोआन। एर्दोआन के प्रभाव का यह कोई नया दौर नहीं है। इन्होंने इससे पहले भी राजनीति में कई बड़े दांव खेले हैं। इन दांवों को समझने के लिए हमें इनके राजनीतिक इतिहास पर नजर डालनी होगी।

शुरुआती राजनीति में इस्लाम का प्रभाव : एर्दोआन का झुकाव तुर्की की इस्लामिक राजनीति की तरफ पहले से ही था। मारमर विश्वविद्यालय में पढ़ाई के दौरान यह झुकाव और बढ़ा। इसी समय उन्होंने नेकमतीन एर्बाकन से मुलाकात की, जो एक दिग्गज इस्लामी राजनीतिज्ञ थे। एर्बाकन के नेतृत्व वाली पार्टियों में एर्दोआन सक्रिय होने लगे। हालांकि धार्मिक रूप पर आधारित राजनीतिक दलों पर तुर्की में प्रतिबंध लगा दिया गया था। 1994 में एर्दोआन वेलफेयर पार्टी के टिकट पर इस्तांबुल के मेयर चुने गए।

मेयर के पद पर एक इस्लामी व्यक्ति के चुनाव ने धर्मनिरपेक्षतावादी स्थापना को हिला दिया, लेकिन एर्दोआन एक सक्षम और कुशल प्रबंधक साबित हुआ। उसने शहर के बीच में एक मस्जिद के निर्माण का विरोध किया, लेकिन शहर के सार्वजनिक कैफे में शराब की बिक्री पर प्रतिबंध लगा दिया। 1998 में उन्हें एक कविता का पाठ करने के बाद धार्मिक घृणा को उकसाने के लिए दोषी ठहराया गया था, जिसमें मस्जिदों की तुलना बैरक, मीनारों से संगीनों और सेना के प्रति वफादार लोगों से की गई थी। इसके चलते एर्दोआन को 10 महीने की सजा हुई। इसके बाद उन्होंने मेयर के पद से इस्तीफा दे दिया।

प्रधानमंत्री पद से राष्ट्रपति तक का सफर : जेल से बाहर आने के बाद एर्दोआन ने एक नई राजनीतिक पार्टी का गठन किया। एकेपी नाम से मशहूर जस्टिस एंड डेवलपमेंट पार्टी ने साल 2002 में चुनाव जीत लिया। रजब तैयब एर्दोआन नए प्रधानमंत्री बनाये गये। प्रधानमंत्री के तौर पर तीन कार्यकालों में एर्दोआन ने तुर्की के संविधाान में कई बदलाव किए। जब एक अदालत में एर्दोआन की पार्टी एकेपी को अवैध घोषित कर दिया गया तो तुर्की के राष्ट्रपति ने संवैधानिक बदलाव करके न्याय व्यवस्था को सरकार के अधीन लाने का तरीका चुना।

मिलिट्री को सरकार के नियंत्रण में लाने के लिए इन्हें सिविल कोर्ट के अधीन लाया गया। एर्दोआन ने जितनी निर्ममता से संविधानिक कांटों को अपने रास्ते से हटाया उतनी ही निर्ममता से राजनीतिक विरोधियों को भी शांत कर दिया। 2011 के चुनाव में एर्दोआन ने एक नए संविधान को देश के सामने रखने का वादा किया, लेकिन यह रेफरेंडम चुनाव में पास न हो सका, क्योंकि एकेपी पार्टी के अनुसार एक व्यक्ति केवल तीन बार प्रधानमंत्री बन सकता है। एर्दोआन ने 2014 में संविधानिक परिवर्तन करके देश की शासन व्यवस्था को राष्ट्रपति के अधीन ला दिया। हालांकि, इसका परिणाम एकेपी के लिए उल्टा हुआ। एकेपी पार्टी को 2015 के पार्लियामेंट्री चुनाव में हार का सामना करना पड़ा। त्रिकोणीय संसद के कारण कोई भी पार्टी सरकार नहीं बना पाई।

ऐसे में 2016 में दोबारा पार्लियामेंट्री चुनाव हुए और एकेपी की जीत हुई। एर्दोआन देश के पहले जनता द्वारा चुने गए

राष्ट्रपति बनाए गए। यह कार्यकाल एर्दोआन के लिए सबसे खतरनाक था। सेना के एक समूह ने तख्ता पलट करने की कोशिश की। इस प्रयास में कई लोगों की जानें गईं। एर्दोआन एक बार फिर अपनी सत्ता को बचाने में कामयाब हुए। दोषी अधिकारियों को कड़ी सजा दी गई। बड़ी संख्या में सैनिकों और तख्ता पलट का समर्थन करने वाले लोगों को जेलों में भरा गया। इनमें डॉक्टर, टीचर और कई सरकारी कर्मचारी भी शामिल थे।

दोबारा मिला राष्ट्रपति पद : 2017 में तुर्की के संविधान में बड़े बदलाव किए गए। राष्ट्रपति की ताकत को बढ़ाया गया। 2018 में हुए अगले राष्ट्रपति चुनाव में एर्दोआन की एक बार फिर जीत हुई, लेकिन ये चुनाव उनकी पार्टी के लिए मुश्किल साबित हुआ। इस्तांबुल, अंकरा और इज्मद जैसे शहरों में एकेपी को हार का सामना करना पड़ा।

विदेशों में बढ़ता प्रभाव : दोबारा राष्ट्रपति चुने जाने के साथ ही एर्दोआन ने देश के बाहर की राजनीति पर प्रभाव डालना शुरू कर दिया। सीरिया में अमेरिकी सैनिकों के हटते ही कुर्द शासित इलाकों में हमले हुए। साइप्रस में उत्तरी साइप्रस को तुर्की से जोड़ने का प्रयास शुरू कर दिया गया। लीबिया के युद्ध में तुर्की ने जीएनआर सरकार का साथ देना शुरू कर दिया। इन सबके अलावा एर्दोआन सरकार अमेरिका और रूस के बाहरी दखल पर हमेशा से नाराज रही है। रूस के साथ अच्छे संबंध होने के बावजूद दोनों देशों की सेनाएं हाल ही में सीरिया में आमने-सामने आ गई थीं।

एर्दोआन का सबसे बड़ा हथियार यूरोप में चल रहा पलायन है। अफ्रीका और खाड़ी देशों से भागते लाखों लोगों के लिए तुर्की सबसे आसान रास्ता है, लेकिन इन लोगों को यूरोप में आने से रोकने के लिए यूरोपियन यूनियन ने तुर्की के साथ समझौता किया हुआ है। एर्दोआन इस समझौते का बार-बार अपने फायदे के लिए प्रयोग करते हैं। विश्व के किसी भी विवाद में यूरोपीय देशों को साथ में लाने के लिए वह प्रवासियों के दल को छोड़ने की धमकी देते रहे हैं। अपनी राजनीतिक शक्तियों और भौगोलिक स्थिति का प्रयोग एर्दोआन अपने फायदे के लिए करते आए हैं।

शैक्षिक यात्रा में गांधीजी को जानना

• सचिन चौहान

सोचता हूं बैठ करके, कुछ घड़ी विश्राम कर लूं
किंतु कोई कह रहा, दिन-रात चलना जिंदगी है...

भ्रमण तथ्यों को वास्तविक और व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करते हुए व्यक्ति के अनुभवों में वृद्धि करता है। इससे ऐतिहासिक महत्व के स्थानों की प्राकृतिक, भौगोलिक और सांस्कृतिक विशेषताओं का ज्ञान होता है। भ्रमण से संसार की घटनाओं का ऐसा ज्ञान प्राप्त हो सकता है जो किसी पुस्तक को पढ़कर भी शायद न मिल सके। इसी महत्व को देखते हुए विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए तत्पर गांधी स्टडी सर्किल ने इस वर्ष शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया। पर्यटक दल के सदस्यों की कुल संख्या 24 थी। इसमें 15 विद्यार्थियों के साथ संयोजक डॉ. देवेंद्र कुमार, सह-संयोजक डॉ. सुभाष चंद्र डबास व सर्किल से जुड़े शिक्षकगण शामिल थे। हमारी यात्रा का शुभारंभ नई दिल्ली से 12 मार्च 2020 को दोपहर 2 बजे हुआ। सभी विद्यार्थियों के लिए 2 समितियां बनाई गईं-गणना समिति व अनुशासन समिति।

अपरान्ह 3.20 पर आश्रम एक्सप्रेस में बैठकर हम सब गुजरात के लिए रवाना हो गए। साथियों के साथा यात्रा का अनुभव निराला था। सफर लंबा होने के बावजूद समय का पता ही नहीं चला। ट्रेन लगभग 15 घंटे की यात्रा के बाद सुबह 6.10 बजे साबरमती जंक्शन पर पहुंची। यहां वृक्षों पर अनगिनत पक्षी बैठे थे। मानो कृत्रिम खिलौनों से सजाया गया हो। जितनी देर में हमें लेने के लिए बस पहुंचती हमने इस दृश्य को अपने कैमरों में कैद कर लिया। इसके बाद हम सब बस में बैठकर गुजरात विद्यापीठ गेस्ट हाउस पहुंचे, जिसे पहले ही बुक करवा लिया गया था। संयोजक महोदय के आदेश पर हम सब अपने-अपने कमरों में सामान व्यवस्थित करके नाश्ते के लिए कैंटीन में इकट्ठा हुए। साबरमती नदी के तट पर बसा अहमदाबाद गुजरात का एक प्रमुख पर्यटक स्थल है।

लंबे समय तक यहां बापू मोहनदास करमचंद गांधी के आदर्शों का शासन रहा, जो कि आज भी प्रासंगिक है।

हम सभी अगले दिन नित्य कर्म से निवृत्त होकर सर्वप्रथम कोचरब आश्रम पहुंचे। यह बापू द्वारा संगठित प्रथम आश्रम था और उनके बैरिस्टर मित्र जीवनलाल देसाई द्वारा भेंट किया गया था। आश्रम में सत्याग्रह, स्वदेशी और स्वावलंबन जैसे विचारों पर जोर दिया जाता था। यहां आकर ऐसा महसूस हुआ जैसे बापू आज भी हमारे बीच हैं। इसके पश्चात हम साबरमती आश्रम पहुंचे, जो कि कुछ ही मिनटों की दूरी पर था। आश्रम द्वारा हमें गाइड उपलब्ध कराया गया। हमारी गाइड सुरभी ने इस तरह आश्रम का बखान किया मानो बापू हमें अपने आप अपने घर के बारे में बता रहे हों। फोटो खींचने का सिलसिला बिना रुके चलता रहा।

प्रत्येक प्रांत के चरखों की प्रदर्शनी के बाद बिजली से स्वचालित चरखा देखा, जिस पर गांधीजी ने एक लाख रुपये का इनाम घोषित किया था। समय हुआ सुबह 11.30 का, हम गांधीजी के कुंज पहुंचे, जहां उनका विश्राम गृह, माता कस्तूरबा का कमरा, रसोई, जिसमें राशन रखने की सुव्यवस्थित जगह थी और घर की सुंदरता में चार-चांद लगाने के लिए घर के बीचों बीच आंगन था। यह कुंज किसी बड़ी हवेली जैसा था। इसके बाद हम लाल दरवाजा सड़क बाजार की तरफ खरीदारी करने निकल गए। हम सब ने उपहार चुनने में एक दूसरे की मदद की। शाम हो चली थी। पावन बेला से निकलकर हमने अतिथि गृह की ओर प्रस्थान किया। वहां पहुंचकर गुजराती थाली का स्वाद चखा। दिन भर की यात्रा का स्मरण करते हुए मित्रों के साथ बातचीत करके सो गए।

अगले दिन हमें 'स्टेचू ऑफ यूनिटी' देखने जाना था, जिसके लिए सुबह जल्दी निकलना जरूरी था। अत: हम प्रात: 5.30 बजे ही विद्यापीठ से स्टेचू ऑफ यूनिटी देखने के लिए रवाना हो गए, जो हमसे 300 किमी की दूरी पर था। विश्व की सबसे ऊंची इमारत को दूर से देखकर ही दिल गदगद हो उठा। कोरोना वायरस के कारण गैलरी में पहुंचने से पहले हमारी स्क्रीनिंग हुई। यहां से तस्वीरें लेकर सोशल मीडिया पर पोस्ट करने का अपना ही मजा था। प्रतिमा के आसपास प्रांगण में जंगल सफारी, पुष्प गार्डन, सेल्फी प्वाइंट, सरदार सरोवर डैम को देखते हुए और चाय की चुस्कियां लेते-लेते शाम के 6 बज गए। अंधेरा होने के बाद हम सब लेजर शो देखने गए। लेजर शो में लौह पुरुष के यौवन अवस्था का चित्र चलते ही रोंगटे खड़े हो गए। वास्तुकार 'राम वी सुतार', जिन्होंने इसका वास्तु कार्य किया उनके मन में देशभक्ति की भावना को मैं भांप सकता था। इसके बाद हम वहां से निकल गए और रास्ते में रात्रि का भोजन करके विद्यापीठ पहुंचते ही निद्रा में लीन हो गए।

16 तारीख को हम कांकरिया झील देखने गए। इस झील का निर्माण कार्य सन् 1751 में सुल्तान कुतुब-उद-दिन अहमद शाह के कार्यकाल में पूर्ण हुआ था। यह झील हर साल दिसंबर में होने वाले कांकरिया उत्सव के लिए मशहूर है। इसके बाद का दिन इस्कॉन मंदिर और दांडी बुटीक देखने में खर्च हो गया। शैक्षिक भ्रमण का एक ही दिन शेष था। अहमदाबाद में हमारे आखरी दिन की शुरुआत विद्यापीठ के रजिस्ट्रार राजेंद्रजी के संबोधन से हुई, जिसमें उन्होंने गांधीजी के 12 वचनों पर बात की। इसके पश्चात रजिस्ट्रार साहब ने हमसे विद्यापीठ के मोरारजी देसाई संग्रहालय, छात्रावास और ट्राइबल संग्रहालय भ्रमण करवाया। सबसे पहले हम संग्रहालय पहुंचे। यहां मोरारजी देसाई के जीवन से जुड़ी कई यादगार वस्तुएं मौजूद थीं, जैसे 'निशान-ए-पाकिस्तान' का खिताब। शाम हो चली थी। अहमदाबाद को अलविदा कहने का समय करीब आ रहा था। मार्ग में अहमदाबाद का साइन बोर्ड, साफ शहर, जगमगाती रोशनी मन को रोमांचित कर रही थी। यह यात्रा हमेशा हम विद्यार्थियों के स्मृति पटल पर अंकित रहेगी।

आँख झपकी... खुली तो लगा उदयपुर पहुंच गए

● **प्रज्ञा सैनी**

हर सफर सुहाना होता है और अगर इस पर अपनों का साथ मिल जाए तो क्या ही कहने। ऐसा ही एक सफर हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग ने भी किया। विभाग के विद्यार्थी और प्राध्यापकों ने उदयपुर और माउंट आबू घूमने की योजना बनाई और आठ अक्टूबर 2019 को हम सब निकल पड़े राजस्थान की ओर। हमारा सफर निज़ामुद्दीन रेलवे स्टेशन से शुरू हुआ। रेल में 12 घंटे का सफर कब बीत गया, एहसास ही नहीं हुआ। लगा जैसे आंख झपकाई और उदयपुर पहुंच गए।

यह सब इसलिए हो पाया क्योंकि शरारती दोस्त साथ थे। हम विद्यार्थियों के साथ पांच शिक्षक भी इस ट्रिप पर आए थे। विभाग के संयोजक राकेश सर और प्रज्ञा मैम, प्रदीप सर, निशा मैम और श्वेता मैम। एक दूसरे से नाश्ता-खाना छीनते हुए और कहानी-किस्से सुनाते हुए सफर कट गया। हंसी मजाक का शिक्षकों ने भी जमकर लुत्फ उठाया। उदयपुर पहुंचते ही हम सब स्टेशन के बाहर खड़ी बस, जो हमारा इंतजार कर रही थी, में सवार हुए। उसने हमें होटल से करीब आधा किलोमीटर दूर उतार दिया। उसके आगे बस के जाने का रास्ता नहीं था। सभी बस से उतर गए। सामान उठाने के लिये एक ऑटो बुक किया गया और बाकी सभी पैदल चल दिये। पिछोला लेक के करीब होटल लेक व्यू पहुंच कर सभी बुनियादी जरूरतों से फारिग होकर नाश्ता करने हाजिर हुए। नाश्ते के बाद हमारा पहला मकाम था उदयपुर का मशहूर सिटी पैलेस।

राजस्थान का सबसे बड़ा शाही परिसर सिटी पैलेस है। जैसा इसके बारे में पढ़ा और सुना था, वास्तव में यह उससे अधिक आकर्षक था। सुंदर व जटिल वास्तुकला का एक अद्भुत नमूना, जिसकी प्रत्येक दीवार महाराजा उदय सिंह और उनके पुत्र महाराणा प्रताप के जीवन संघर्षों को बयान करती है। भीतर हमने एक गाइड को साथ लिया, जिसने महल से जुड़ी तमाम कहानियां मनोरंजक अंदाज में हमसे साझा की। आकर्षक शीष महल, जनाना महल और शाही मण्डप इस महल के केंद्र बिंदु हैं। वैसे तो यहां कई फिल्मों की शूटिंग हुई है पर प्रियंका चोपड़ा और निक जोनस की शादी के दौरान यह शाही मण्डप एक बार फिर सुर्खियों में आया था।

सिटी पैलेस में यादगार लम्हे बिताने के बाद हम फतेह सागर पहुंचे। ट्रेन में 12 घण्टे सफर की थकान और उस पर सिटी पैलेस का पैदल भ्रमण बदन तोड़ने वाला था। फतेह सागर से ढलती सूरज को देखना बेहद सुकून भरा था। फतेह सागर को दिल भर देखने के बाद मौका था उसके बीचों बीच स्थित नेहरू वाटिका को देखने का। लिहाजा हम सब मोटरबोट में बैठकर नेहरू वाटिका पहुंचे और वहां चारों तरफ से आ रही हवा हमारे अंदर तक पहुंची। नेहरू वाटिका से निकलने के बाद पूरी मंडली ने झील के किनारे बैठकर चाय का आनंद लिया। करीब शाम 7 बजे हम होटल पहुंचे और सभी ने आराम किया। फिर सभी अपने-अपने गुट बनाकर निकल पड़े किफायती दामों में पसंद का खाना खाने। लौटकर सभी

अपने अपने कमरों में गए, जहां हर कमरे में 3-4 लोगों की व्यवस्था थी। कायदे से सभी को रात में सो जाना चाहिए था, लेकिन मित्र मण्डलियों के इरादे कुछ अलग थे। हुआ यूं कि सब रात भर अपने-अपने कमरों में जागकर गप्पे मारते रहे। कहने को सब थके हुए थे।

अगली सुबह हम 9 बजे अपनी अगली लोकेशन सहेलियों की बाड़ी पहुंच गए। यह स्थान अपने खूबसूरत बगीचों के लिए बहुत विख्यात है। जानने समझने से ज्यादा यह जगह हम सभी के लिए फोटोशूट के लिहाज से अधिक महत्वपूर्ण थी। इसके बाद हम सब पहुंचे शिल्पग्राम। यह परंपरागत शैली में बनाई गई 26 झोपड़ियों का एक छोटा सा पुरवा है। यह एक तरह का नृवंशविज्ञान संग्रहालय है, जो पश्चिमी क्षेत्र में रहने वाली आदिवासी जनसंख्या की जीवन शैली दर्शाता है। हर साल यह गांव कई थियेटर के त्योहारों की मेजबानी करता है। यहां भारत के विभिन्न राज्यों से लोग आते हैं और भाग लेते हैं। कलाकार और कारीगर शिल्प दर्शन में अपने काम को प्रदर्शित करते हैं। इस मेले में वे अपने काम को ग्राहकों को भी बेचते हैं। यहां हमने थियेटर में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद उठाया। मंच पर 'भरी पिचकारी मार गयो रे' लोकगीत ने हमें कदम थिरकाने पर मजबूर कर दिया। करीब साढ़े तीन बजे हम सभी निकल पड़े अपने अगले स्पॉट सज्जनगढ़ का किला। यह किला बहुत ऊंचाई पर मौजूद है। चारों ओर घने जंगल से घिरा। यूं तो ऊपर जाने के लिए गाड़ियों की व्यवस्था भी थी किन्तु सभी साथियों ने निश्चय किया कि यह सफर हम पैदल ही पूरा करेंगे। 'हाऊ इज द जोश', 'हाई सर' वाली फीलिंग्स के साथ अपनी टिकट्स लेकर सब चल दिये। पर जैसे-जैसे ऊपर बढ़ते गए थकान बढ़ती गई और हिम्मत टूटती गई। बीच-बीच में आराम करते, फोटो खींचते हुए, हंसते-रोते सब किले तक पहुंच ही गए। किले का प्रांगण उस वक्त मखमली बिस्तर से भी ज्यादा प्यारा लग रहा था। सभी उस हरे-भरे प्रांगण में लेट गए। खुले आसमान के नीचे। इस किले से दिख रहे नजारे की जितनी प्रशंसा करें, उतना कम है। मान्यता है कि 132 साल पहले मेवाड़ के राजा सज्जन सिंह ने खास तौर पर मानसून के बादलों को देखने और बारिश का अनुमान लगाने के लिए इस महलनुमा किले का निर्माण करवाया था। अंधेरा होने को था और स्थानीय लोगों के अनुसार यह अंधेरा खतरे के साथ आता है। जंगली जानवरों के हमले का खतरा। अब वक्त था संयम और सावधानी बरतने का चूंकि अपनी मनमानी से हमने पैदल अकेले जाने का निर्णय किया था। ऐसे में सर की डांट का डर भी सता रहा था। बहरहाल, सभी की गिनती हुई और एक चेन बनाते हुए हम लोग नीचे की ओर चल पड़े।

इस दौरान सभी लड़कों ने एक घेराबंदी सी करके लड़कियों की सुरक्षा भी की, क्योंकि टीचर साथ न होने पर हम सभी एक दूसरे की जिम्मेदारी थे। मात्र 30 मिनट में हम नीचे पहुंच गए। बस में बैठते ही जिस हरारत भरी थकान को सबने महसूस किया वो वाकई शरीर को तोड़ देने वाली थी। सब होटल पहुंचे। खाना खाकर थोड़ी देर एक-साथ बैठे और सफर की बातचीत की। फिर अपने कमरों में आकर सो गए, क्योंकि सुबह अब घर के लिए रवाना जो होना था। वापसी के सफर में बस के अंदर एक छोटा सा मुशायरा शुरू हो गया। सचमुच इससे सुंदर घर वापसी की मेरी कल्पना भी नहीं थी। ट्रिप के आयोजन के लिए सभी छात्र विभाग व अध्यापकों के आभारी हैं। एक ऐसी ही ट्रिप की आशा हमें ताउम्र रहेगी, क्योंकि निदा फाजली का वो शेर हमेशा जहन में आता है कि 'न जाने कौन सा मंजर नजर में रहता है, तमाम उम्र मुसाफिर सफर में रहता है।'

रूठ न जाना, मैं जो कहूं तो

• **विद्या शर्मा**

आपको शीर्षक थोड़ा अटपटा लग रहा होगा, लेकिन लेख के अंत तक पहुंचते हुए आप समझ जाएंगे कि शीर्षक ऐसा क्यों है। यह लेख सूरजकुंड मेले पर लिखा गया है। आपका अपने कस्बे में लगने वाले मेले से मन ऊब गया हो तो एक बार हरियाणा राज्य के फरीदाबाद शहर में लगने वाले सूरजकुंड मेले का दर्शन करने जरूर जाइए। सन् 1987 में शुरू हुआ यह मेला, जिसकी उम्र आज तकरीबन 34 वर्ष की हो गई है, शायद अपने शुरुआती दौर में भी उतना ही लोकप्रिय होगा जितना कि आज है। वर्ष 2004 में आई फिल्म 'वीरजारा' में एक गाना है 'ऐसा देश है मेरा'। इस गाने में मेले की खूबसूरती को परंपरागत भारतीय संस्कृति के बरक्स रखकर उसका बखान किया गया है।

सूरजकुंड मेले की मिसाल भी कुछ ऐसी ही है। हर साल मेले की एक थीम रखी जाती है। इस साल हुए सूरजकुंड मेले की थीम हिमाचल प्रदेश रखी गई। पूरा मेला हिमाचली संस्कृति से सुसज्जित था, जिसे देखने के लिए लाखों की संख्या में लोग हाजिर हुए। हिमाचली संस्कृति को मेले के जरिए अनुभव करने वाले लोगों में इस साल मैं भी शुमार हुई। जो लोग मेले में जा पाए, उन्होंने वहां खूब लुत्फ उठाया। लेकिन जो नहीं जा सके, उन्हें मैं अपने इस लेख के माध्यम से सूरजकुंड के भ्रमण पर ले चलतीं हूं।

भिन्न-भिन्न कलाकारों की कलाकारी से सुसज्जित इस मेले में ढेर सारी भीड़, ढेर सारे झूले, खाने-पीने के लिए अनेकों प्रकार के पकवान मौजूद थे। खरीदारी करने के लिए देश के अलग-अलग राज्यों की मशहूर वस्तुएं व व्यंजन मिल रहे थे। लाल-पीले, हरे-भूरे रंग के बालों वाले विदेशी दर्शक आपका-हमारा, हम सभी का मन मोह लेते हैं। हर साल बुजुर्गों सहित छात्रों, दिव्यांगजनों के लिए ऑनलाइन टिकट बुकिंग करने पर 50 प्रतिशत की छूट रहती है, जिसकी राशि निश्चित है। थोड़ा लालच और थोड़ा उल्लास लिए परिजन अपने प्रियजनों को मेले में झूले झुलाने के लिए ले आते हैं। मेले में बेहतरीन चाट का स्टॉल मौजूद था, जहां लोग अपने प्रेम रस में चाट का चटपटा रस घोल, स्वाद में इजाफा लिए बेहद खुश दिखाई पड़ रहे थे।

मेला घूमने आए युवाओं का तो क्या ही कहना! कुछ को सेल्फी-सेल्फी खेलने से फुर्सत नहीं होती है तो कुछ अपनी यारी-दोस्ती में मशगूल मेले का लुत्फ उठाते नजर आते हैं। आपको मेले में कुछ ऐसे छोटे बच्चे तथा युवा भी देखने को मिल जाएंगे, जिन्होंने शायद बरसों से ढोल-नगाड़ों की धम-धम, डम-डम की आवाज नहीं सुनी होती है। इसी वजह से मेले में ढोल की आवाज सुनकर उनके पैर रोके नहीं रुकते। कुछ कदम आगे बढ़ने पर नजारा यूं होता है कि 50-50 रुपए में पगड़ी/साफा बांधा जा रहा होता है। अब सिर्फ 50 रुपए में मुखिया वाला आनंद मिल जाए फिर तो क्या कहने। मेले के एक कोने में बैठकर चाक घुमाते हुए कुम्हार ने शायद सबसे ज्यादा युवाओं का ध्यान अपनी ओर खींचा। उस कुम्हार की खास बात यह थी कि वह न केवल स्वयं मटके बना रहा था बल्कि अपने ग्राहकों को भी अपने लिए मिट्टी के बर्तन बनाने का मौका दे रहा था।

जिस नई पीढ़ी ने कभी मिट्टी के बर्तनों में खाना-पीना तक न खाया हो उसे चाक पर हाथ आजमाने का मौका मिल जाए तो इससे आकर्षक चीज क्या होगी। एक की आमदनी का जरिया दूसरे के लिए मजेदार अनुभव का मौका बन जाता है। मैंने मेले में जितना कुछ देखा आपको बताने की पूरी कोशिश की, लेकिन एक नजारा मेरे जहन से उतारे नहीं उतरता है। हुआ यूं कि एक लड़का अपने रूठे दोस्त को मनाने के लिए वहीं मेले में बीच सड़क पर बैठ गया। उसकी रूठी दोस्त लड़की भी कुछ ज्यादा ही नाराज थी, मनाने से नहीं मान रही थी। देखकर अच्छा लगा और ख्याल आया कि कहीं न कहीं मानना-मनाना मॉर्डन युग में भी काम कर रहा है। वरना आज रूठे हुए को पूछता कौन है। शायद इसलिए ही लोगों ने ज्यादातर रूठना बंद कर दिया है।

मैं हो चुका अब खाली हूं

• जुनैद कादरी

मैं नोट पुराना जाली हूं
मैं होली, ईद, दीवाली भी
मैं बोध गया वैशाली हूं
मैं हो चुका अब खाली हूं

सारी नदियां गंगा है बनी
लज्जा से ढकी अंगा है बनी
मैं रात अंधेरी काली भी
मैं सूर्य किरण की लाली हूं
मैं हो चुका अब खाली हूं

ज्वालाओं के पार चला था
बीच में फिर तूफान खड़ा था
लगी न जाने हाय वो किसकी
उस पल मैं सब हार पड़ा था
गहन पीड़ा से सींचा जब
तब बना प्रेम की प्याली हूं
मैं हो चुका अब खाली हूं

रमजान के रोजे भी मैं तो
छठ पूजा की भी थाली हूं
गंगा जमुनी तहजीब की मैं
करता पल पल रखवाली हूं
गंगा के जल की पवित्रता
जम जम की मीठी प्याली हूं
लाज शर्म का मोह त्याग के
मैं हो चुका अब खाली हूं

मैं बाबरी का गुंबद भी
मैं मंदिर की आधारशिला
मैं कारगिल का वो युद्ध भी हूं
मैं शाहजहां का लला किला
चौरासी के दंगों में जो
जले वो मेरे अपने थे
जलियांवाला बाग की मिट्‌टी
करती है हमसे ये गिला
मैं काल भैरव सा वेष बनाकर
बना चण्डी व काली हूं
सही गलत की फिक्र छोड़
मैं हो चुका अब खाली हूं

मैं फिर इतिहास सुनाता हूं
मुगलों तक ले कर जाता हूं
मंगोल, मराठा, शाह जफर
इन सब से तुम्हें मिलाता हूं
एक टीपू था निर्भय, अडिग
महाराणा था वो एक पथिक
चाणक्य की नीति सदा अमर
था शेर बहादुर शाह जफर
उन सब ने जो कर के है दिया
इस दौर में सब मिट जाएगा
इस दौर के हुक्मरां जो हैं
इतिहास फाड़ खा जाएगा
मैं खुसरो की कव्वाली भी
मैं प्रेमचंद की आली हूं
जहां बुद्ध ने पांव रखे
मैं वो सुंदर वैशाली हूं
लाज शर्म का मोह त्याग कर
मैं हो चुका अब खाली हूं।